A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 23 जुलाई, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 22, अंक 314, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

क्या बिहार में सुशासन अब जंगलराज में बदल रहा है?

ललित गर्ग

बिहार में एक बार फिर कानून-व्यवस्था को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। बेखौफ अपराधियों का आतंक, दिन-दहाड़े हत्याएं, लूट, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध यह संकेत दे रहे हैं कि 'सुशासन बाबू' के नाम से मशहूर नीतीश कुमार का प्रशासन कहीं अपने वादों और आदर्शों से भटकता नजर आ रहा है। आगामी विधानसभा चुनाव की दस्तक के बीच आमजन में यह सवाल तेजी से उभर रहा है कि क्या बिहार में सुशासन अब फिर से जंगलराज में तब्दील हो रहा है? क्योंकि व्यापारियों, राजनेताओं, वकीलों, शिक्षकों और आम नागरिकों को निशाना बनाकर की गई लगातार हत्याओं ने बिहार की कानून-व्यवस्था को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा कर दी हैं। पुलिस इन घटना के लिए अवैध हथियारों और गोला-बारूद की व्यापक उपलब्धता को ज़िम्मेदार ठहरा रही है, पुलिस के उच्च अधिकारियों के कुछ बेतुके बयान हास्यास्पद एवं शर्मनाक होने के साथ चिन्ताजनक है। उनके हिसाब से जून में ज्यादा वारदात होती हैं, क्योंकि मानसून आने के पहले तक किसान खाली बैठे होते हैं। राज्य की राजधानी पटना के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में दिनदहाड़े 5 शूटर्स ने जिस तरह एक गैंगस्टर की हत्या की, उससे यही लगता है कि कानून-व्यवस्था का डर खत्म हो चुका है। पिछले 10 दिनों में एक के बाद एक कई आपराधिक घटनाओं में व्यापारी गोपाल खेमका, भाजपा नेता सुरेंद्र कुमार, एक 60 वर्षीय महिला, एक दुकानदार, एक वकील और एक शिक्षक सहित कई हत्याओं ने चुनावी राज्य को हिलाकर रख दिया है।

बिहार में कानून और व्यवस्था की स्थिति को लेकर राजनीतिक घमासान चरम पर है। विपक्ष, खासकर राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और कांग्रेस, जहां नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार पर लगातार हमलावर है, वही एनडीए इन मुद्दों पर जवाबी एवं रक्षात्मक हमला करते हुए चुनाव पर इनके असर को बेअसर करने में जुटी है। लालू यादव के शासनकाल के 'जंगलराज' की भी याद दिलाने की कोशिश एनडीए की पार्टियां कर रही है ताकि विपक्ष इन मामलों पर ज्यादा हावी ना हो। भाजपा के प्रवक्ता शाहनवाज हुसैन का कहना है कि बिहार की जनता लालू राज में जो जंगलराज था, उसे भूली नहीं हैं। विपक्ष चाहे जो भी आरोप लगाए बिहार में आज सुशासन का राज है और जो घटनाएं हुई हैं वह योजनागत अपराध के तहत है, जिस पर सरकार कड़ी करवाई कर रही है।' हॉस्पिटल में जिसकी हत्या हुई, वह खुद हत्या के मामले में जेल में बंद था और फिलहाल पैरोल पर बाहर आया था। शुरुआती रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस वारदात में विरोधी गैंग शामिल हो सकता है। इसका मतलब कि राज्य में संगठित अपराध फिर सिर उठा रहा है। इसी महीने, 4 जुलाई को बिहार के बड़े व्यवसायी गोपाल खेमका की हत्या हुई थी और उसमें भी भाड़े के शूटर्स का इस्तेमाल किया गया था। ऐसी हत्याएं बार-बार हो रही हैं, यह सिलसिला कहीं रुकता नहीं दिख रहा।

पक्ष एवं विपक्ष के राजनीतिक दल एवं नेता चाहे जो बयान दें, लेकिन बिहार में अपराध तो बढ़ ही रहे हैं, आम जनता में भय एवं असुरक्षा व्याप्त है। हाल ही में राजधानी पटना, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, और गया जैसे प्रमुख शहरों में हुई हत्या और डकैती की घटनाएं न केवल भयावह हैं, बल्कि यह भी दिखाती हैं कि अपराधी अब पुलिस और प्रशासन से नहीं डरते और पुलिस का अपराधियों पर नियंत्रण खत्म होता जा रहा है। सड़क पर चल रहे आम लोगों को दिनदहाड़े गोली मार दी जाती है, व्यापारियों से रंगदारी मांगी जाती है, महिलाओं के साथ दुष्कर्म की घटनाएं बढ़ रही हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि बिहार भले अपराध में कई दूसरे राज्यों से पीछे दिखता हो, लेकिन सच यही है कि आंकड़े पूरी कहानी नहीं बताते। राज्य में ये अपराध तब हो रहे हैं, जब पूरा फोकस क्राइम कंट्रोल पर है। बिहार में पिछले तीन वर्षों में अपराध दर में निरंतर वृद्धि हुई है। हत्या, बलात्कार, अपहरण, और लूट जैसे संगीन अपराधों में राज्य शीर्ष स्थानों में शामिल हो गया है। यह स्थिति न केवल चिंताजनक है, बल्कि चुनावी राजनीति में एक बड़ा मुद्दा बनकर उभर रही है।

एक समय था जब नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार ने कानून-व्यवस्था के मोर्चे पर उल्लेखनीय सुधार किए थे। लालू-राबड़ी शासन के समय जिसे जंगलराज कहा जाता था, उसके मुकाबले एक उम्मीद जगी थी कि बिहार अब विकास, सुरक्षा और शांति की राह पर है। लेकिन वर्तमान परिदृश्य में जनता फिर से असुरक्षा, भय और अराजकता के वातावरण में जीने को मजबूर है। इन स्थितियों में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब सरकार के पास प्रशासनिक अनुभव है, गठबंधन के रूप में राजनीतिक ताकत है, तो फिर अपराधियों पर लगाम क्यों नहीं लग पा रही है?

हाल के अपराधों की घटनाओं ने विपक्ष को सरकार की नाकामी उजागर करने का मौका दिया है, जबकि भाजपा और जदयू रक्षात्मक रुख अपना रहे हैं और इन घटनाओं को योजनागत घटनाओं का नाम देकर राजद सरकार के समय की आपराधिक घटनाओं के साथ तुलना कर रहे हैं। मगर सूत्रों की माने तो पार्टी इस बात को लेकर तैयारी जरूर कर रही कि, यदि यह मुद्दा संसद के आगामी सत्र में विपक्ष उठाती है तो उस पर कैसे जवाब देना है? जिस बिहार के पूर्ववर्ती सरकारों के कानून एवं व्यवस्था की खराब स्थिति को मुख्य मुद्दा बनाकर एनडीए सरकार सत्ता में आई थी अब यही मुद्दा विपक्ष के हाथ लग गया है। बिहार की जनता बदलाव चाहती है। उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सुरक्षा जैसे बुनियादी मुद्दों पर ठोस कदम चाहिए, न कि केवल वादों की झड़ी। विपक्ष इस समय सरकार को घेरने के लिए पूरी तैयारी में है और 'बदहाल कानून-व्यवस्था' को मुख्य चुनावी मुद्दा बना रहा है।

आरजेडी-कांग्रेस भाजपा और नीतीश सरकार पर हमला बोल रहे हैं कि जिनके शासन में कभी सुशासन की मिसाल दी जाती थी, अब वही शासन अपराधियों के आगे बेबस नजर आ रहा है। बिहार के लिए यह समय आत्मचिंतन का है। सरकार को चाहिए कि वह पुलिस-प्रशासन को स्वतंत्र रूप से कार्य करने दे, अपराधियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करे और राजनीतिक हस्तक्षेप को समाप्त करे। साथ ही न्यायिक प्रक्रिया को तेज़ किया जाए ताकि अपराधियों को जल्द सजा मिले।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

उपराष्ट्रपति धनखड़ का इस्तीफा मंजूर

● संसद नहीं पहुंचे, विदाई समारोह से भी बना ली दूरी

● विपक्ष बोला- वजह स्वास्थ्य ही नहीं कुछ और भी है

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ का मंगलवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इस्तीफा मंजूर कर लिया। यह जानकारी राज्यसभा में पीठासीन घनश्याम तिवाड़ी ने दी। धनखड़ आज सदन की कार्यवाही में भी शामिल नहीं हुए। सुबह 11 बजे अपर सदन की कार्यवाही की शुरुआत जेडीयू सांसद हरिवंश ने की। इससे पहले खबर आई थी कि जगदीप इस्तीफा वापस नहीं लेंगे। ना ही विदाई समारोह में शामिल होंगे। उधर, पीएम मोदी ने कहा कि मैं उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूं। देश के 14वें उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 21 जुलाई की रात अचानक अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। 74 साल के धनखड़ का कार्यकाल 10 अगस्त 2027 तक का था। उन्होंने 10 जुलाई को एक कार्यक्रम में कहा था, ईश्वर की कृपा रही तो अगस्त, 2027 में रिटायर हो जाऊंगा। राष्ट्रपति को लिखे त्यागपत्र में धनखड़ ने पद छोड़ने की वजह स्वास्थ्य बताया था। दूसरी-विपक्ष इस्तीफे पर सवाल कर रहा है। कह रहा है कि इसकी वजह कुछ और है।

सुप्रभात

मैं जानना चाहता हूं
आदमी आदमी से
क्यों लड़ता है

मैं जानना चाहता हूं
आदमी
झूठ की राह पर
क्यों चलता है

मैं जानना चाहता हूं
आदमी
राजा से क्यों
इतना डरता है

मैं जानना चाहता हूं
आदमी
क्यों नफरत का जहर
पीता है

मैं जानना चाहता हूं
आदमी आदमी से
क्यों नजदीकी बनाना
नहीं चाहता।

– दुर्गाप्रसाद झाला

अब दुश्मन की खैर नहीं! भारत पहुंच गया अपाचे

सेना ने दिखाई पहली झलक, जोधपुर में होंगे तैनात

नई दिल्ली (एजेंसी)। अपाचे हेलीकॉप्टर का पहला बैच भारत पहुंच चुका है। भारतीय सेना ने सोशल मीडिया पर इसकी जानकारी दी है। अमेरिका से आए ये अत्याधुनिक हेलीकॉप्टर भारतीय सेना के बेड़े में शामिल होने वाले हैं। इन्हें जोधपुर में तैनात किया जाएगा। अपाचे हेलीकॉप्टर की गिनती एडवांस कॉम्बेट हेलीकॉप्टरों में होती है। इससे भारतीय सेना की मजबूती में चार चांद लग गए हैं। सेना ने भी अपाचे की एंट्री पर सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर किया है। भारतीय सेना ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, भारतीय सेना में शामिल हुए अपाचे। यह सेना के लिए ऐतिहासिक पल है। अपाचे हेलीकॉप्टर का पहला बैच भारत पहुंच चुका है। इससे भारतीय सेना की ऑपरेशनल क्षमताओं में इजाफा होगा। अपाचे हेलीकॉप्टर का पहला बैच 15 महीनों की देरी के बाद मिला है। अमेरिकी कंपनी बोइंग ने यह हेलीकॉप्टर तैयार किए हैं। भारत ने बोइंग को 2020 में 6 अपाचे हेलीकॉप्टर का ऑर्डर दिया था, जिनकी डिलीवरी पिछले साल ही होनी थी। पहली खेप में अमेरिका से 3 अपाचे हेलीकॉप्टर भारत पहुंचे हैं। भारतीय सेना में पहले से 22 अपाचे हेलीकॉप्टर हैं, जिनके साथ ही अपाचे हेलीकॉप्टर की संख्या 25 हो गई है। अपाचे हेलीकॉप्टर रात में भी दुश्मन पर भारी पड़ सकते हैं।

अत्याधुनिक प्रणालियों से लैस है यह हेलीकॉप्टर

अपाचे हेलीकॉप्टरों का उपयोग हमले के साथ-साथ सुरक्षा, टोह लेने और शांति अभियानों के लिए किया जा सकता है। ये हेलीकॉप्टरअत्याधुनिक प्रणालियों से लैस हैं, जो सभी मौसम में लक्ष्य का सटीक डेटा प्रदान करते हैं। अपाचे हेलीकॉप्टर में नवीनतम संचार, नेविगेशन, सेंसर और हथियार प्रणालियां हैं। एएच 64ई अपाचे दुनिया का सबसे एडवांस मल्टी कॉम्बैट हेलीकॉप्टर है। इनमें हाई क्वालिटी नाइट विजन सिस्टम है, जिससे दुश्मन को अंधेरे में भी ढूंढ़ा जा सकेगा। यह मिसाइल से लैस है और एक मिनट में 128 लक्ष्यों पर निशाना साध सकता है। इसमें भारी मात्रा में हथियार ले जाने की क्षमता है। 280 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ान भर सकता है। हेलीकॉप्टर में 16 एंटी टैंक एजीएम-114 हेलफायर और स्ट्रिंगर मिसाइल लगी होती है। हेलफायर मिसाइल किसी भी आर्मर्ड व्हीकल जैसे टैंक, तोप, बीएमपी वाहनों को पलक झपकते ही ध्वस्त कर सकती है। वहीं स्ट्रिंगर मिसाइल हवा से आने वाले किसी भी खतरे का सामना करने में सक्षम है। इसके साथ ही इसमें हाइड्रा-70 अनगाइडेड मिसाइल भी लगी होती हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद के निर्णय

'सांख्यिकी से समृद्धि' के लिए 'डाटा सुदृढ़ीकरण योजना' को दी स्वीकृति

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंगलवार को मंत्रालय में हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा प्रदेश के योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के अंतर्गत सांख्यिकी संबंधी आंकड़ों का समयावधि में संकलन (डाटा कलेक्शन) एवं विश्लेषण कर विभागों, आमजन एवं योजनाविदों के उपयोग के लिए आंकड़े उपलब्ध कराने के लिए प्रदेश में 'डाटा सुदृढ़ीकरण योजना' की स्वीकृति प्रदान की गयी। राज्य सरकार इस योजना के माध्यम से 'सांख्यिकी से समृद्धि' की दिशा में एक नई पहल कर रही है।

योजना से सरकार को डाटा के आधार पर बेहतर और सही निर्णय लेने में मदद मिलेगी। साथ ही डाटा और उसका विश्लेषण समय पर मिलने से सरकार बेहतर नीति बना सकेगी। समस्त विभाग बिना किसी रुकावट के डाटा साझा कर सकेंगे, जिससे काम में पारदर्शिता आएगी और कर्मचारियों की कार्यक्षमता में भी वृद्धि होगी। स्वतंत्र शोधकर्ताओं और नीति-निर्माताओं को भी डाटा उपलब्ध होगा, जिससे नई योजनाओं का निर्माण आसान होगा। नागरिकों को भी डाटा की जानकारी मिल सकेगी, जिससे शासन अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनेगा। डाटा की उपलब्धता से निवेशकों का भरोसा बढ़ेगा और राज्य में निवेश को बढ़ावा मिलेगा।

गांधीसागर जल विद्युत गृह की इकाइयों के नवीनीकरण का अनुमोदन

मंत्रि-परिषद द्वारा म.प्र. पॉवर जनरेटिंग कंपनी लिमिटेड के अंतर्गत संचालित (5×23) मेगावाट गांधीसागर एवं (4×43 मेगावाट) राणाप्रताप सागर जल विद्युत गृह के नवीनीकरण एवं आधुनिकीकरण के लिए मध्यप्रदेश द्वारा देय राशि का अनुमोदन प्रदान किया गया। निर्णय अनुसार गांधीसागर जल विद्युत गृह की पांचों इकाइयों (5×23 मेगावाट) के नवीनीकरण एवं आधुनिकीकरण की पुनरीक्षित अनुमानित लागत 464 करोड़ 55 लाख रुपये का अनुमोदन प्रदान किया गया। राणा प्रताप सागर जल विद्युत गृह की चारों इकाइयों (4×43 मेगावाट) के नवीनीकरण एवं आधुनिकीकरण की डी.पी.आर. में वर्णित अनुमानित लागत 573 करोड़ 76 लाख रूपये का अनुमोदन प्रदान किया गया। दोनो परियोजनाओं की स्वीकृति परियोजना राशि पर निर्धारित अंशपूँजी को मध्यप्रदेश एवं राजस्थान राज्य द्वारा 50:50 अनुपात पर वित्त विभाग के परामर्श अनुसार मध्यप्रदेश की हिस्से की राशि 127 करोड़ 6 लाख रुपये को वर्षवार प्रदान किये जाने का अनुमोदन किया गया। मशीनरी बदलने के लिए राशि का व्यय होगा। परियोजना अगले 40 साल के लिए उपयोगी है दोनों प्रदेश कि विद्युत् उत्पादन कंपनियां अपने-अपने राज्य में स्थित परियोजना का क्रियान्वयन करेगी एवं कार्यों की लागत का लेखा-जोखा पारदर्शी रूप से संधारित कर एक दूसरे से साझा करेंगी तथा मौजूदा प्रथा के अनुसार वितीय खातों का तिमाही/वार्षिक मिलान कर समायोजित करेगी।

19 सितंबर को होगा रिटायर

इतिहास बनने जा रहा मिग-21

1963 में एयरफोर्स में शामिल हुआ, 3 जंग में शामिल रहा, अब तक 400 से ज्यादा क्रैश

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय वायुसेना में 62 सालों तक सर्विस देने के बाद मिग-21 लड़ाकू विमान 19 सितंबर को रिटायर होगा। चंडीगढ़ एयरबेस में फाइटर जेट का विदाई कार्यक्रम होगा। इसके बाद विमान की सेवाएं आधिकारिक तौर पर खत्म हो जाएंगी। मिग-21 जेट 1963 में पहली बार भारतीय वायुसेना में शामिल किया गया था। यह भारत का पहला सुपरसोनिक जेट था यानी ये आवाज की गति (332 मीटर प्रति सेकेंड) से तेज उड़ सकता था। फाइटर जेट की आखिरी 2 स्क्वाड्रन (36 मिग-21) राजस्थान के बीकानेर में नाल एयरबेस पर तैनात हैं। इन्हें नंबर 3 स्क्वाड्रन कोबरा और नंबर 23 स्क्वाड्रन पैंथर्स के नाम से जाना जाता है। मिग-21 जेट ने 1965 के भारत-पाक युद्ध, 1971 के बांग्लादेश मुक्ति संग्राम, 1999 के कारगिल युद्ध और 2019 की बालाकोट एयर स्ट्राइक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अब इसकी जगह तेजस एलसीए1ए फाइटर एयरक्राफ्ट लेंगे। रक्षा मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, 400 से ज्यादा मिग-21 विमान क्रैश हुए हैं। इसमें 200 से ज्यादा पायलट मारे गए गए हैं। इसी वजह से फाइटर प्लेन को 'उड़ता ताबूत' और 'विडो मेकर' कहा जाता है। भारत ने कुल 850 से ज्यादा मिग-21 फाइटर जेट खरीदे थे। इनमें से करीब 660 हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड ने देश में ही बनाए।

राहुल गांधी के खिलाफ वाराणसी कोर्ट में चलेगा केस

वाराणसी (एजेंसी)। वाराणसी में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ केस चलेगा। वाराणसी की एमपी-एमएलए कोर्ट ने सोमवार को पूर्व प्रधान की ओर से दायर याचिका स्वीकार कर ली। राहुल गांधी पर अमेरिका में सिखों पर भड़काऊ भाषण देने का आरोप है। कोर्ट में यह याचिका तिलमापुर के पूर्व प्रधान नागेश्वर मिश्रा ने दायर की थी। वाराणसी के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की कोर्ट ने 28 नवंबर, 2024 को उनकी याचिका खारिज कर दी थी। इसके बाद उन्होंने कोर्ट में याचिका दाखिल की।

'हम शर्मिंदा हैं', किशोरी को जलाने पर 'सुप्रीम' चिंता

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने ओडिशा में 15 साल की नाबालिग को जिंदा जलाए जाने की घटना पर कहा, 'हम शर्मिंदा हैं।' जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची की बेंच ने सोमवार को कहा कि ग्रामीण इलाकों की स्कूली लड़कियों, घरेलू महिलाओं और बच्चों को सुरक्षित वातावरण मिलना चाहिए। कोर्ट ने केंद्र और सभी पक्षों से ठोस सुझाव मांगे हैं। कोर्ट ने घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताया और महिला सुरक्षा पर गंभीर चिंता जताई। इससे पहले, 12 जुलाई को ओडिशा के ही बालासोर जिले के फकीर मोहन कॉलेज में छात्रा ने आत्मदाह कर लिया था। छात्रा में कॉलेज फैकल्टी के खिलाफ सेक्शुअल हैरसमेंट की शिकायत दी थी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 23 जुलाई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

शहीद एमपी के हरिओम का हुआ अंतिम संस्कार

● राजगढ़ में बेटे की पार्थिव देह को देख बेसुध हुए पिता,बड़े भाई ने दी मुखाग्नि

भोपाल (एजेंसी)। लद्दाख के लेह में हिमस्खलन की चपेट में आने से शहीद हुए मध्यप्रदेश के राजगढ़ के अग्निवीर हरिओम नागर (22) का अंतिम संस्कार मंगलवार को पैतृक गांव टूटियाहेड़ी में हुआ। शहीद को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। शहीद बेटे की पार्थिव देह को देख पिता दुर्गा प्रसाद नागर बेसुध हो गए। ग्रामीणों ने उन्हें सहारा देकर बिठाया। वे रोते बिलखते रहे। शहीद हरिओम नागर की पार्थिव शरीर को उनके बड़े भाई बालचंद नागर ने मुखाग्नि दी। सुबह करीब 9.30 बजे सेना के वाहन से बोड़ा नाका पर पार्थिव शरीर लाया गया था। 21 किलोमीटर लंबी अंतिम यात्रा शुरू हुई। राष्ट्रभक्ति गीतों के साथ यात्रा चली। 6 किलोमीटर लंबे काफिले में स्कूली बच्चों समेत हजारों लोग शामिल हुए। 4 हजार से ज्यादा गाड़ियां चलीं, इनमें करीब 3 हजार बाइक और एक हजार चार पहिया वाहन थे। यात्रा में सांसद रोडमल नागर और राज्यमंत्री गौतम टेटवाल, नगर परिषद अध्यक्ष विकास करोड़िया सहित प्रशासनिक अधिकारी भी मौजूद रहे। रविवार को ड्यूटी के दौरान एक बड़े पहाड़ के टूटकर गिरने से हरिओम की जान चली गई थी।

सुखोई हॉक-जगुआर के लिए बनेगा एंटी ग्रैविटी सूट

● लड़ाकू विमान पायलट्स का 'सुरक्षा कवच' कानपुर में होगा तैयार

कानपुर (एजेंसी)। देश में पहली बार सुखोई हॉक, तेजस और मिराज जैसे फाइटर जेट के पायलटों के लिए एंटी ग्रैविटी सूट का निर्माण होने जा रहा है। पायलटों के लिए कानपुर की ग्लाइडर्स इंडिया लिमिटेड (जीआईएल) की इकाई आयुध पैराशूट निर्माणी (ओपीएफ) में एंटी ग्रैविटी सूट बनाए जाएंगे। सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि सूट देश में पहली बार बनेंगे। अभी तक एंटी ग्रैविटी सूट यूरोपीय देशों से मंगाए जाते थे। निर्माणी को लाइसेंस फॉर ट्रांसफर ऑफ टेक्नोलॉजी की मंजूरी मिल गई है। डीआरडीओ की रिसर्च लैब डिफेंस बायो इंजीनियरिंग एंड इलेक्ट्रो मेडिकल लेबोरेटरी (डीईबीईएल) बेंगलुरु को सूट का सैंपल तैयार करके भेजा जाएगा। इसके बाद इसका ट्रायल शुरू किया जाएगा। दरअसल कॉम्बैट फ्री फॉल सिस्टम में पायलट को ग्रैविटी सूट,नेविगेशन, कम्युनिकेशन डिवाइस, ऑक्सीजन से लैस किया जाता है। फाइटर जेट काफी ऊंचाई पर

उड़ते हैं। पायलटों को तंग मोड़, तेज चढ़ाई और अन्य आक्रामक उड़ान युद्धाभ्यास करते समय अत्यधिक गुरुत्वाकर्षण बल का सामना करना पड़ता है। ऐसे हालातों में खून निचले अंगों में जमा हो जाता है। जिसकी वजह से मस्तिष्क में रक्त की आपूर्ति कम हो जाती है। इस दौरान पायलटों को कम दिखना या चक्कर आने की संभावना बढ़ जाती है। इसके बचाव के लिए डीआरडीओ की रिसर्च लैब डिफेंस बायो इंजीनियरिंग एंड इलेक्ट्रो मेडिकल लेबोरेटरी (डीईबीईएल) तैयारी में जुट गया है।

पायलटों के पेट और निचले अंगों पर नियंत्रित दबाव डालकर इस प्रभाव को कम करने एंटीजी सूट विशेष रूप से डिजाइन किया है। यह दबाव महत्वपूर्ण अंगों खासकर मस्तिष्क में रक्त प्रवाह बनाए रखने में मदद करता है। जिससे पायलट की सुरक्षा और कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। खास बात यह कि यह सूट आग से भी सुरक्षित रखता है। इसकी ब्लैडर प्रणाली पॉलियूरेथेन लेपित कपड़ों से बनी है। जो रासायनिक क्षरण के प्रति बेहतर प्रतिरोध और लंबी उड़ान में सहायक बनती है।

38 दिन बाद केरल से उड़ सका ब्रिटिश फाइटर जेट

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। ब्रिटिश नौसेना के लड़ाकू विमान एफ-35बी ने मंगलवार को 38 दिन बाद केरल के तिरुवनंतपुरम इंटरनेशनल एयरपोर्ट से उड़ान भरी।

हाइड्रोलिक फेल होने की वजह से जेट उड़ान नहीं भर पा रहा था। जेट को ठीक करने के लिए 25 इंजीनियरों की टीम 6 जुलाई को ब्रिटेन से भारत पहुंची थी। एयरक्राफ्ट एफ-35 बी 14 जून की रात जॉइंट समुद्री अभ्यास के तहत अरब सागर के ऊपर नियमित उड़ान पर था।

वोटर लिस्ट से अयोग्य लोगों को हटाने के लिए एसआईआर जरूरी

ईसी ने कहा-आधार,वोटर आईडी और राशन कार्ड पर नहीं कर सकते भरोसा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार चुनाव को लेकर भारत निर्वाचन आयोग के आदेश पर वोटर लिस्ट रिवीजन का काम किया जा रहा है। वोटरों को वोट से वंचित करने का आरोप

लगाकर विपक्ष चुनाव आयोग पर सवाल खड़े कर रहा है। चुनाव आयोग ने बिहार में मतदाता सूची में छेड़छाड़ के उन आरोपों का खंडन किया है। बिहार में एसआईआर मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट में दाखिल अपने जवाब में आयोग ने कहा कि वह मतदाता सूची से फर्जी मतदाताओं को हटाने की अपनी संवैधानिक जिम्मेदारी निभा रहा

है, जिससे मतदाताओं को कोई दिक्कत नहीं है।

वहीं, आयोग ने कोर्ट में बिहार में मतदाता सूची के लिए आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र और राशन कार्ड को वैध दस्तावेज मानने के सर्वोच्च न्यायालय के प्रथम दृष्ट्या मत से असहमति जताई। चुनाव आयोग ने न्यायालय से कहा कि इन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। चुनाव आयोग ने कहा कि आधार सिर्फ एक पहचान प्रमाण है; देश में बड़ी संख्या में फर्जी राशन कार्ड हैं; और मौजूदा मतदान कार्ड पर निर्भर रहने से विशेष अभियान निरर्थक हो जाएगा। हालांकि, चुनाव आयोग ने जोर देते हुए कहा कि मतदाता सूची में नाम न होने के कारण किसी व्यक्ति की नागरिकता समाप्त नहीं होगी। देर शाम सुप्रीम कोर्ट में दाखिल एक विस्तृत हलफनामे में चुनाव आयोग ने यह भी कहा कि इस प्रक्रिया में किसी भी कानून और मतदाता के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन नहीं हुआ है। साथ ही, उसने अदालत से 11 विपक्षी दलों, गैर सरकारी संगठनों और बिहार के कुछ निवासियों द्वारा दायर उस याचिका को खारिज करने का अनुरोध किया, जिसमें एसआईआर को रद्द करने और दिसंबर में संशोधित पिछली मतदाता सूची के आधार पर नवंबर में विधानसभा चुनाव कराने की मांग की गई थी।

मुंबई ट्रेन ब्लास्ट केस

आरोपियों की रिहाई के खिलाफ एससी पहुंची महाराष्ट्र सरकार

मुंबई (एजेंसी)। 2006 के मुंबई सीरियल ट्रेन ब्लास्ट मामले में अब महाराष्ट्र सरकार सुप्रीम कोर्ट पहुंच गई है। शीर्ष कोर्ट में 24 जुलाई को सुनवाई होगी।

● 24 जुलाई को होगी सुनवाई, हाईकोर्ट ने सभी को किया था बरी

महाराष्ट्र सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट से तत्काल सुनवाई की अपील की थी। मुंबई में 2006 के सीरियल ट्रेन ब्लास्ट मामले में बॉम्बे हाईकोर्ट ने 21 जुलाई को सभी 12 आरोपियों को बरी कर दिया था। कोर्ट ने कहा कि प्रॉसीक्यूशन, यानी सरकारी वकील आरोपियों के खिलाफ केस साबित करने में नाकाम रहे। हाईकोर्ट ने कहा कि यह मानना मुश्किल है कि आरोपियों ने अपराध किया है, इसलिए उन्हें बरी किया जाता है। अगर वे किसी दूसरे मामले में वॉन्टेड नहीं हैं, तो उन्हें तुरंत जेल से रिहा किया जाए। कोर्ट के आदेश के बाद सोमवार शाम 12 में से दो आरोपियों को रिहा कर दिया गया।

चंदन मिश्रा हत्याकांड के 2 शूटर मुठभेड़ में घायल

● बिहार एसटीएफ ने सरेंडर करने को कहा तो फायरिंग की ● भागने में मदद करने वाला अभिषेक भी हो गया गिरफ्तार

आरा (एजेंसी)। बिहार के आरा में स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) और गैंगस्टर चंदन मिश्रा की हत्या से जुड़े कुछ आरोपियों के बीच मुठभेड़ हुई है। इसमें दो बदमाशों को गोली लगी है। एक को गिरफ्तार किया गया है। हथियार भी बरामद किए गए हैं। एसटीएफ को गैंगस्टर मर्डर केस से जुड़े 3 अपराधियों बलवंत, रवि रंजन और अभिषेक के बिहियां थाना क्षेत्र में होने की सूचना मिली थी। टीम ने मंगलवार सुबह 5 बजे कटिया रोड के पास उन्हें घेर लिया। बदमाशों को सरेंडर करने के लिए कहा गया, लेकिन उन्होंने फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में बलवंत और रवि रंजन को पैर में गोली लगी है। दोनों को आरा सदर अस्पताल भेजा गया है। घायलों को पटना रेफर किया गया है। अभिषेक को गिरफ्तार कर लिया गया है। इनके पास से दो पिस्टल, एक देसी कट्टा, दो मैगजीन और 4 कारतूस बरामद किए गए हैं। मुठभेड़ में एसटीएफ के 2 जवान रोहित कुमार और उत्तम कुमार भी जख्मी हुए हैं। पुलिस अधिकारियों के अनुसार चंदन मिश्रा हत्याकांड के पीछे संगठित गिरोह का हाथ है। जिसकी तलाश में लगातार छापेमारी की जा रही थी। पारस अस्पताल में चंदन मिश्रा की हत्या में बलवंत नामजद आरोपी था। मृतक चंदन के पिता ने उसका नाम दिया था।

युवाओं और बहनों के रोजगार के लिए राज्य सरकार संकल्पित

अचारपुरा में 24 जुलाई को होगा पांच इकाइयों का भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार युवाओं और बहनों के रोजगार के लिए संकल्पित है। इस दिशा में राज्य सरकार द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। गुरुवार 24 जुलाई को भोपाल जिले के औद्योगिक क्षेत्र अचारपुरा में पांच औद्योगिक इकाइयों का भूमि-पूजन किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उन्होंने हाल ही में स्पेन और दुबई की यात्रा में अनेक निवेशकों को मध्यप्रदेश में निवेश के लिए आमंत्रित किया है। मध्यप्रदेश में वर्ष 2025 उद्योग और रोजगार वर्ष है। गांव से लेकर शहरों तक समृद्धि लाना, स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाना और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए निर्णायक भूमिका निभा कर मध्यप्रदेश ने नए औद्योगिक युग की शुरूआत की है।

पांच इकाईयों का होगा भूमि-पूजन- मुख्यमंत्री डॉ. यादव 24 जुलाई को अचारपुरा औद्योगिक क्षेत्र में 12.88 हेक्टेयर में 400 करोड़ से अधिक निवेश और लगभग 1500 व्यक्तियों को रोजगार देने वाली 5 इकाइयों का भूमि-पूजन करेंगे। इनमें गारमेंट सेक्टर में गोकुलदास एक्सपोर्टस, टेक्सटाइल सेक्टर में इंडो एकॉर्ड अप्पेरल्स, हाई टेक इलेक्ट्रानिक में एसेडस प्राइवेट लिमिटेड, फार्मा सेक्टर में सिनाई हेल्थ केयर और कृषि उपकरण में समर्थ एग्रीटेक इकाइयां शामिल हैं।

स्टार कास्ट के साथ 'तन्वी द ग्रेट' देखने पहुंचे सीएम

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मंगलवार की शाम मुख्यमंत्री निवास के समत्व भवन में जाने-माने अभिनेता और फिल्म निर्देशक श्री अनुपम खेर ने भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री अनुपम खेर का अंग वस्त्र से सम्मान किया। श्री खेर भोपाल में फिल्म 'तन्वी द ग्रेट' के विशेष प्रदर्शन के अवसर पर आए हैं। इस अवसर पर फिल्म की अभिनेत्री सुश्री शुभांगी दत्त और बाल कलाकार विराज अग्रवाल भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अभिनेता खेर और उनकी टीम को एक श्रेष्ठ उद्देश्य पूर्ण फिल्म के निर्माण के लिए बधाई दी। श्री अनुपम खेर ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव को अपनी अपनी पुस्तक डिफरेंट बट नो लेस भी भेंट की। फिल्म की स्क्रीनिंग से पहले मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सिनेपॉलिस के कर्मचारियों से बातचीत की और उनके कामकाज की जानकारी ली।

मप्र स्वच्छता क्षेत्र में निरंतर रहेगा आगे : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से भोपाल की महापौर श्रीमती राय ने की भेंट

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मंगलवार की शाम मंत्रालय में भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय के नेतृत्व में जनप्रतिनिधियों ने भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को श्रीमती राय ने राष्ट्रपति द्वारा भोपाल को स्वच्छता क्षेत्र में दिये गये प्रशस्ति पत्र एवं ट्राफी भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आशा व्यक्त की कि मध्य प्रदेश स्वच्छता के क्षेत्र में निरंतर अग्रणी बना रहेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महापौर श्रीमती मालती राय सहित नगर निगम भोपाल के अध्यक्ष श्री किशन सूर्यवंशी, श्री रविंद्र यति, श्री राजेश हिंगोरानी और अन्य पदाधिकारी गण को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने भोपाल, इंदौर सहित मध्यप्रदेश के अन्य शहरों को स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 पुरस्कारों से गत सप्ताह सम्मानित किया। भोपाल को 10 लाख से अधिक जनसंख्या की श्रेणी में स्वच्छ शहर का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। मुख्यमंत्री डॉ. यादव से बुधनी नगर निकाय के पदाधिकारी गण ने भी भेंट की

और 20 हजार से कम आबादी वाले शहरों में बुधनी के पुरस्कृत होने की जानकारी दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दोनों निकायों के पदाधिकारियों को बधाई दी। महापौर श्रीमती मालती राय ने बताया कि स्वच्छता के क्षेत्र में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए भोपाल नगर के सफाई मित्रों को भी पुरस्कृत किया जायेगा।

उल्लेखनीय है कि भोपाल के साथ ही इंदौर को 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाली स्वच्छ लीग अवार्ड श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ स्वच्छ शहर से पुरस्कृत किया गया। इसी श्रेणी में 3 से 10 लाख जनसंख्या वाले शहरों की श्रेणी में उज्जैन को सर्वश्रेष्ठ स्वच्छ शहर का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मालदीव की आजादी के जश्न में मुख्य अतिथि होंगे पीएम मोदी

● राष्ट्रपति मुइज्जू ने खुद की पहल,25-26 जुलाई को होगा कार्यक्रम

माले (एजेंसी)। मोहम्मद मुइज्जू के राष्ट्रपति बनने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहली बार दो दिवसीय मालदीव की यात्रा पर जा रहे हैं। वह मालदीव की आजादी की 60वीं सालगिरह के जश्न में मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल होंगे। प्रधानमंत्री 25 और 26 जुलाई को मालदीव में रहेंगे। राष्ट्रपति मुइज्जू ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मालदीव आने का न्योता दिया था। अपने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मुख्य अतिथि बनाना इस बात की ओर संकेत करता है कि मालदीव और भारत के रिश्ते फिर से पटरी पर लौट रहे हैं। वहीं मालदीव को अपनी पिछली गलतियों का अहसास भी हो गया है। इस यात्रा का उद्देश्य भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करना है। मुक्त व्यापार समझौते से 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को मौजूदा 60 अरब अमेरिकी डॉलर से दोगुना करने का मार्ग प्रशस्त होगा। विदेश मंत्रालय के अनुसार, मोदी पहले चरण में दो दिवसीय यात्रा पर ब्रिटेन जाएंगे और फिर मालदीव की यात्रा करेंगे। प्रधानमंत्री की 25 से 26 जुलाई तक होने वाली मालदीव यात्रा को महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि यह द्विपक्षीय संबंधों को पुनः स्थापित करने का प्रतीक है। चीन समर्थक माने जाने वाले मोहम्मद मुइज्जू के नवंबर 2023 में सत्ता में

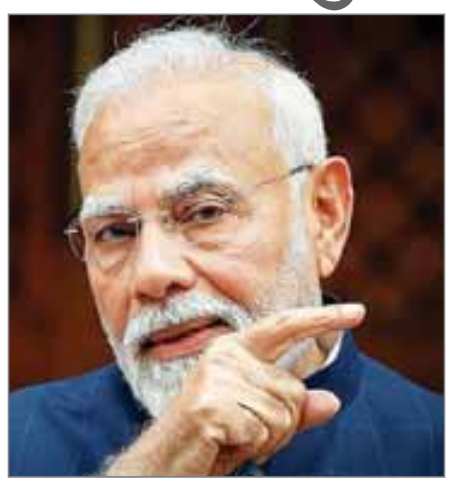

आने के बाद दोनों देशों के संबंधों में तनाव पैदा हो गया था। विदेश मंत्रालय के अनुसार, अपनी यात्रा के पहले चरण में मोदी 23 से 24 जुलाई को ब्रिटेन की यात्रा पर जाएंगे और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री केअर स्टॉर्मर के साथ व्यापक वार्ता करेंगे। सूत्रों ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी की लंदन यात्रा के दौरान भारत और ब्रिटेन द्वारा मुक्त व्यापार समझौते पर औपचारिक रूप से हस्ताक्षर किये जाने की उम्मीद है। उन्होंने यह भी कहा कि ब्रिटेन ने समझौते पर हस्ताक्षर करने की प्रशासनिक प्रक्रिया पूरी कर ली है। मई में भारत और ब्रिटेन ने मुक्त व्यापार समझौते को अंतिम रूप दिया था, जिससे 99 प्रतिशत भारतीय निर्यात को टैरिफ से लाभ मिलने की उम्मीद है और इससे ब्रिटिश कंपनियों के लिए भारत में व्हिस्की, कार और अन्य उत्पादों का निर्यात आसान हो जाएगा, साथ ही समग्र व्यापार को बढ़ावा मिलेगा। यूरोपीय संघ छोड़ने के बाद ब्रिटेन द्वारा किए गए सबसे बड़े मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के साथ-साथ, दोनों पक्षों ने दोहरे योगदान समझौते पर भी हस्ताक्षर किए। यह भारतीय कामगारों के नियोक्राओं को ब्रिटेन में सामाजिक सुरक्षा अंशदान देने से छूट प्रदान करता है।

अधिकारियों के अनुसार, तीन वर्षों की बातचीत के बाद तय हुए इस व्यापार समझौते से सभी क्षेत्रों में भारतीय वस्तुओं के लिए व्यापक बाजार पहुंच सुनिश्चित होने की उम्मीद है और भारत को लगभग 99 प्रतिशत टैरिफ लाइन (उत्पाद श्रेणियों) पर टैरिफ हटने से लाभ होगा, जो लगभग 100 प्रतिशत व्यापार मूल्यों को कवर करेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंत्रालय में प्रदेश में उर्वरक वितरण और अतिवृष्टि तथा बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्यों की समीक्षा की।

विधानसभा अध्यक्ष से मिले मंत्री विजयवर्गीय

विधायकों ने पूछे 3377 सवाल, समय-सीमा में जवाब देने की तैयारी में जुटी ब्यूरोक्रेसी

भोपाल (नप्र)। अगले सोमवार से शुरू हो रहे विधानसभा के मानसून सत्र को लेकर विधायकों ने इस बार 3377 सवाल पूछे हैं। ई विधान के फार्मेट में पहुंचने जा रही विधानसभा की कार्यवाही को देखते हुए विधायकों ने ऑनलाइन सवाल पूछने में रुचि दिखाई है। वहीं ऑफलाइन सवाल का क्रम भी अभी थम नहीं रहा है। इस बीच संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर से विधानसभा सत्र की तैयारियों और व्यवस्थाओं को लेकर मुलाकात की है।

विधायकों द्वारा सरकार के कामकाज को लेकर विधानसभा के माध्यम से पूछे जाने वाले सवालों की समय सीमा खत्म हो गई है। तय समय तक सत्ता पक्ष और विपक्ष के विधायकों ने कुल 3377 सवाल किए हैं। इसमें से 2076 सवाल ऑनलाइन किए गए हैं। दूसरी ओर ऑफलाइन सवालों की संख्या 1301 है। विधानसभा सचिवालय ने विधायकों के सवाल के जवाब तय समय सीमा में सरकार से मांगे हैं ताकि सदन की कार्यवाही के दौरान विधायकों को सवालों के सटीक और सही जवाब मिल सकें।

विभाग प्रमुख जुटे जवाब भेजने की तैयारी में- विधायकों द्वारा 28 जुलाई से शुरू होकर 8 अगस्त तक चलने वाले विधानसभा के मानसून सत्र को लेकर किए

गए भारी संख्या में सवाल सामने आने के बाद अब सरकार इनके जवाब तैयार करा रही है। इसके लिए सभी विभागों के प्रमुख सचिव और सचिव स्तर के अधिकारी मंत्रालय में सवालों के जवाब तैयार कराने और विधानसभा सचिवालय को जवाब भेजने के काम में जुटे हैं। विधायकों के सवालों के जवाब देने के लिए दूसरे कामों को इस समय प्राथमिकता से बाहर किया गया है।

उपमुख्यमंत्री शुक्ल ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष खंडेलवाल से भेंट कर दी शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। उपमुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने आज भोपाल में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल से उनके निवास पर सौजन्य भेंट की। उपमुख्यमंत्री शुक्ल ने खंडेलवाल को पुष्पगुच्छ एवं शॉल भेंट कर अभिनंदन किया तथा उन्हें प्रदेश भाजपा अध्यक्ष के रूप में नवीन संगठनात्मक दायित्व ग्रहण करने पर शुभकामनाएं एवं बधाई प्रेषित की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विश्वास व्यक्त किया कि श्री खंडेलवाल के नेतृत्व में संगठन और अधिक मजबूत होगा तथा पार्टी की जनसेवा की परंपरा को और गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा का संगठनात्मक कौशल ही उसकी जड़ें जनमानस में मजबूत करता है और खंडेलवाल का अनुभव निश्चित ही संगठन को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा।

एमपी की पहली तेजस इंदौर-मुंबई के बीच आज से चलेगी

3 कैटेगरी में 1805 से लेकर 3800 रुपए के टिकट, दुरंतो-अवंतिका से ज्यादा समय और महंगी

इंदौर (नप्र)। मध्यप्रदेश की पहली तेजस सुपरफास्ट ट्रेन 23 जुलाई को मुंबई से शुरू होगी। जबकि इंदौर से 24 जुलाई को रवाना होगी। ट्रेन सप्ताह में 3 दिन चलेगी। आईआरसीटीसी ने 21 जुलाई से बुकिंग शुरू कर दी है।

किराया तीन कैटेगरी में है। पहली कैटेगरी एसी 3 टीयर है। जिसका किराया 1 हजार 805 रुपए है। इसमें 1 हजार 634 रुपए बेस फेयर, 40 रुपए रिजर्वेशन चार्ज, 45 रुपए सुपर फास्ट चार्ज और 86 रुपए जीएसटी शामिल है।

दूसरी कैटेगरी एसी टू टीयर का किराया 2 हजार 430 रुपए है। इसमें 2 हजार 219 रुपए बेस फेयर, 50 रुपए रिजर्वेशन चार्ज, 45 रुपए सुपर फास्ट चार्ज और 116 रुपए जीएसटी शामिल है। तीसरी कैटेगरी एसी फर्स्ट क्लास है। जिसका किराया 3 हजार 800 रुपए है। इसमें 3 हजार 484 रुपए बेस फेयर, 60 रुपए रिजर्वेशन चार्ज, 75 रुपए सुपर फास्ट चार्ज और 181 रुपए जीएसटी शामिल है।

बुलेट में घुसा सांप, पेट्रोल टैंक के नीचे छिपा

दो घंटे तक बाइक लेकर घूमता रहा छात्र, सर्विस सेंटर पहुंचा तब दिखा

सागर (नप्र)। सागर में बीए के छात्र की सांसें उस वक्त गले में अटक गईं, जब उसकी मोटरसाइकिल के पेट्रोल टैंक के नीचे जहरीला सांप छिपा नजर आया। आनन-फानन में स्नेक कैचर को मौके पर बुलाया गया। जिसने बड़ी मशक्कत के बाद सांप को पकड़ा। इस दौरान छात्र करीब दो घंटे तक उसी बाइक पर घूमता रहा, जिसमें सांप छिपा था।

मामला सागर की डॉ. हरीसिंह गौर सेंट्रल यूनिवर्सिटी का है। यहां बीए में पढ़ने वाला लकी मंगलवार सुबह यूनिवर्सिटी पहुंचा। बुलेट पार्किंग में खड़ी करने के बाद क्लास में चला गया। लौटा तो गार्ड ने बताया कि उसकी बुलेट के पास सांप घूम रहा था।

यह सुनकर लकी ने बाइक स्टार्ट कर धूप में खड़ी कर दी। उसे हिलाया-डुलाया लेकिन सांप नहीं दिखा। इस पर लकी ने सोचा कि सांप चला गया होगा। वह बाइक लेकर दोस्तों के साथ घूमने निकल गया।

गाड़ी की सीट के नीचे छिपा था- करीब दो घंटे तक शहर में घूमने के बाद गाड़ी धुलवाने के लिए लकी और उसके दोस्त सर्विस सेंटर पहुंचे। यहां मैकेनिक को पेट्रोल टैंक के नीचे छिपा सांप दिख गया। सर्विस सेंटर पर हड़कंप मच गया।

मौके पर मौजूद लोगों ने स्नैक कैचर अकील बाबा को सूचना दी। वे बेटे असद खान के साथ मौके पर पहुंचे। रेस्क्यू शुरू किया। सांप गाड़ी की सीट के नीचे चला गया था। अकील ने मैकेनिक से सीट और पेट्रोल टंकी खुलवाई। फिर एहतियात के साथ सांप को पकड़ लिया।

रसेल वाइपर प्रजाति का था सांप- स्नेक कैचर अकील बाबा ने बताया कि रेस्क्यू में पकड़ा गया सांप रसेल वाइपर प्रजाति का है, जो करीब तीन फीट लंबा है। यह किसी को डस ले तो उसके खून के थक्के जमने लगते हैं। उसकी जान जा सकती है। लकी की किस्मत अच्छी थी कि वह सुरक्षित सर्विस सेंटर पर गाड़ी लेकर पहुंच गया।

दहेज हत्या के फरार तीन आरोपी शाहजहांनाबाद से गिरफ्तार

बेगमगंज पुलिस ने देर रात दी दबिश आरोपियों को लेकर भोपाल से रवाना

भोपाल (नप्र)। शाहजहांनाबाद इलाके की वाजपेयी नगर मल्टी में छिपे दहेज हत्या के तीन फरार आरोपियों को मंगलवार तड़के रायसेन जिले की पुलिस ने दबिश देकर गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों में मृतका का सास-ससुर और एक अन्य रिश्तेदार शामिल है। ये सभी रायसेन जिले के बेगमगंज थाने में दर्ज दहेज हत्या के मामले में वांछित थे और फरारी काटते हुए भोपाल में रिश्तेदार के घर पर छिपे हुए थे। जानकारी के मुताबिक, बीते सोमवार देर रात मृतका के पिता शाहजहांनाबाद थाने पहुंचे थे। वे रायसेन के बेगमगंज क्षेत्र के रहने वाले हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि उनकी 23 वर्षीय बेटी उरूसा ने करीब 17 दिन पहले जहर खाकर आत्महत्या कर ली थी। घटना के बाद बेगमगंज थाने में उरूसा के पति मोहम्मद मुशीर, सास बिल्कीस बी और ससुर मोहम्मद मुकीद के खिलाफ दहेज प्रताड़ना और हत्या का मामला दर्ज किया गया है।

परिजनों का आरोप है कि शादी के बाद से ही ससुराल वाले उरूसा पर दहेज के लिए मानसिक दबाव बना रहे थे। उसे लगातार ताने दिए जाते थे और प्रताड़ित किया जा रहा था। तंग आकर उरूसा ने जान दे दी। पुलिस ने मामले में पति मोहम्मद मुशीर को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था, जबकि सास, ससुर और एक अन्य रिश्तेदार फरार चल रहे थे। सूचना मिलने पर रायसेन पुलिस ने शाहजहांनाबाद थाना पुलिस के सहयोग से देर रात वाजपेयी नगर मल्टी में दबिश दी और तीनों को गिरफ्तार कर लिया।

'हमीदिया अस्पताल, कॉलेज-स्कूल राष्ट्रभक्तों के नाम से हो'

भोपाल में निगम अध्यक्ष बोले- सीएम को पत्र लिखे, मिलकर भी रखूंगा मांग

भोपाल (नप्र)। भोपाल नगर निगम परिषद की 24 जुलाई को होने वाली बैठक में नाम बदलने को लेकर दो प्रस्ताव आएंगे। एक पुराने अशोका गार्डन का नाम 'राम बाग' और दूसरा विवेकानंद पार्क के पास के चौराहे का नाम 'विवेकानंद चौक' करना है। इस बीच राजधानी में अस्पताल, कॉलेज और स्कूल के नाम बदलने को लेकर सियासत भी तेज हो गई है।

निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने हमीदिया अस्पताल, कॉलेज और स्कूल का नाम बदलने की मांग की है। उनका कहना है कि इसके लिए वे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को पत्र लिख चुके हैं। अब व्यक्तिगत रूप से भी मिलूंगा और नाम बदले जाने की मांग करुंगा।

सीएम को निगम अध्यक्ष ने जून में लिखा था पत्र

निगम अध्यक्ष सूर्यवंशी ने सीएम को लिखे पत्र में नवाब हमीउल्ला के नाम से भोपाल में संचालित हमीदिया अस्पताल, कॉलेज और स्कूल का नाम बदलकर राष्ट्रभक्तों के नाम से किए जाने की मांग की। पत्र में लिखा कि निगम को सड़कों और चौराहों के नामकरण करने का अधिकार है। इसलिए सितंबर-23 में हमीदिया रोड का नाम बदलकर गुरुनानक मार्ग कर दिया गया है। चूंकि, स्कूल, कॉलेज और अस्पताल समेत अन्य संस्थाओं के नाम परिवर्तन करने का अधिकार भोपाल निगम को नहीं है। इसलिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव इन्हें बदलें।

पाकिस्तान जाना चाहते थे हमीउल्ला : सूर्यवंशी

निगम अध्यक्ष सूर्यवंशी ने बताया कि नवाब हमीउल्ला भारत भक्त नहीं बल्कि पाकिस्तान परस्त थे। वे भोपाल रियासत को पाकिस्तान में शामिल कराना चाहते हैं। नवाब हमीउल्ला ने तिरंगा फरहाने वाले पोस्ट मास्टर को गिरफ्तार कराया था। वह पाकिस्तान जाकर वहां के वजीर बनना चाहते थे।

साथ ही विलिनिकरण आंदोलन करने वाले देशभक्तों पर गोलियां चलवाई थी। इसमें छह लोग शहीद हुए थे। यह इतिहास, तथ्य और प्रमाण तीनों ही है। इससे स्पष्ट होता है कि नवाब की निष्ठा भारत से अधिक पाकिस्तान से थी। इसलिए मेरा मानना है कि हमीउल्ला के नाम से हमीदिया हॉस्पिटल, कॉलेज और स्कूल नहीं होना चाहिए। इसलिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव को पत्र लिखे हैं।

जल्द मुख्यमंत्री से मिलूंगा

इस संबंध में उनसे व्यक्तिगत भी मिलूंगा। मुझे पूरा भरोसा है कि इस पर जल्द निर्णय हो जाएगा।

प्रदेश के निजी स्कूलों में मनमानी और अवैध वसूली

कांग्रेस कमेटी ने दिल्ली में की आयोग से शिकायत, बोले- बच्चों की सेहत खराब कर रहा बस्ते का बोझ

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश प्रवक्ता विवेक त्रिपाठी ने दिल्ली पहुंचकर एमपी के निजी स्कूलों के खिलाफ राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (नई दिल्ली) के सदस्य प्रियंक कानूनगो के समक्ष शिकायत दर्ज कराई है। कमेटी का आरोप है कि प्राइवेट स्कूल बस्ते का बोझ बढ़ाकर बच्चों की सेहत के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। वे अवैध वसूली, मनमानी, कमीशनखोरी और बच्चों के मौलिक अधिकारों का लगातार हनन कर रहे हैं।

ज्यादातर स्कूलों को बताया शिक्षा का व्यापारी- त्रिपाठी ने शिकायत में लिखा है कि प्रदेश के अधिकतर निजी स्कूल शिक्षा के नाम पर खुलेआम व्यापार कर रहे हैं। अभिभावकों से प्रवेश शुल्क, वार्षिक शुल्क,

कंप्यूटर शुल्क, स्मार्ट क्लास शुल्क, बिल्डिंग फंड जैसी मनमानी वसूली के साथ-साथ किताबें, ड्रेस, जूते, बैग आदि पर कमीशनखोरी कर करोड़ों रुपए की अवैध कमाई की जा रही है।

हर साल सिलेबस में फेरबदल- त्रिपाठी ने कहा कि बच्चों के भारी भरकम स्कूल बैग उनके मानसिक और शारीरिक सेहत के लिए बिल्कुल भी उचित नहीं हैं। शासन के स्पष्ट निर्देशों के बावजूद स्कूल प्रबंधन हर साल किताबों की संख्या और सिलेबस में फेरबदल कर रहा है ।

प्रशासन पर मिलीभगत का आरोप- त्रिपाठी ने आरोप लगाया कि शिक्षा विभाग और जिला प्रशासन की इन स्कूलों की अवैध गतिविधियों में पूरी तरह से मिलीभगत है। जांच और निरीक्षण केवल कागजों तक सीमित हैं। भोपाल कलेक्टर द्वारा बनाई गई जांच कमेटी भी आज तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर पाई है।

1 अगस्त से शुरू होगा एमपी का पहला लग्जरी वृद्धाश्रम

सीनियर सिटीजन कपल के लिए एक महीने का शुल्क 82 हजार रुपए, 24×7 मेडिकल सुविधा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश का पहला पेड लग्जरी ओल्ड एज होम यानी वृद्धाश्रम 1 अगस्त से भोपाल में शुरू हो रहा है। करीब 26 करोड़ रुपए की लागत से तैयार किए गए इस वृद्धाश्रम को सीनियर सिटिजन की हर जरूरत को ध्यान में रखकर डिजाइन किया है। बुजुर्गों को यहां कुछ कपड़े और जरूरत की दवा के साथ पहुंचना होगा, बाकी रहने, खाने-पीने के साथ 24×7 मेडिकल की सुविधाएं मिलेंगी।

भोपाल के लिंक रोड-3 के पत्रकार कॉलोनी स्थित वृद्धाश्रम की सुविधाएं किसी 5 स्टार होटल जैसी है और इन सुविधाओं के लिए हर व्यक्ति को हर महीने चुकाने होंगे लगभग 50 हजार रुपए। यदि कपल रहना चाहते हैं तो 82 हजार रुपए लगेंगे। वृद्धाश्रम की व्यवस्था और रखरखाव का पूरा जिम्मा सरकार ने सेवा भारती को सौंपा है। इसे नाम दिया है संध्या छाया।

एम्स भोपाल में अत्याधुनिक लीनियर एक्सेलेरेटर से कैंसर रोगियों को जीवन की नई आशा

भोपाल। कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के निर्देशन में एम्स भोपाल में कैंसर मरीजों को विश्वस्तरीय उपचार सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। संस्थान में स्थापित अत्याधुनिक लीनियर एक्सेलेरेटर मशीन के माध्यम से रेडियोथेरेपी सेवाएं दी जा रही हैं, जिससे कैंसर उपचार अधिक सटीक, सुरक्षित और प्रभावी बन गया है। एम्स भोपाल मध्यप्रदेश का एकमात्र सरकारी संस्थान है, जहाँ यह तकनीक उपलब्ध है। यहां प्रतिदिन 70 से 80 कैंसर रोगियों का सफलतापूर्वक उपचार किया जा रहा है। यह मशीन उच्च ऊर्जा एक्स-रे का उपयोग करके ट्यूमर को सटीक रूप से लक्षित करती है, जिससे स्वस्थ ऊतकों को कम से कम क्षति होती है और रोगी को बेहतर परिणाम प्राप्त होते हैं। रेडियोथेरेपी के साथ-साथ एम्स भोपाल में रक्त विकिरण की सुविधा भी उपलब्ध है, जो विशेष रूप से रक्त संक्रमण की रोकथाम और इम्यूनोकॉम्प्रोमाइज्ड (प्रतिरक्षा में कमी वाले) रोगियों के लिए अत्यंत उपयोगी है। यह सुविधा कैंसर रोगियों के साथ-साथ संस्थान की ब्लड बैंक सेवाओं की गुणवत्ता को भी और बेहतर बनाती है। इस सुविधा का लाभ न केवल मध्यप्रदेश के मरीजों को, बल्कि

छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र जैसे पड़ोसी राज्यों से आने वाले मरीजों को भी मिल रहा है। अत्याधुनिक तकनीक, अनुभवी चिकित्सकों और वैज्ञानिकों की टीम तथा रोगी-केंद्रित सेवाओं के माध्यम से एम्स भोपाल राज्य में कैंसर उपचार का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, हमारा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कैंसर के हर मरीज को नवीनतम तकनीक के माध्यम से प्रभावी और सुलभ उपचार मिल सके। लीनियर एक्सेलेरेटर और रक्त विकिरण जैसी सेवाएं एम्स भोपाल को राज्य के अग्रणी कैंसर उपचार केंद्रों में स्थापित करती हैं। हमारा निरंतर प्रयास है कि हर रोगी को आशा और स्वास्थ्य की नई दिशा दी जा सके।

क्षेत्रीय प्रशिक्षण और जागरूकता के माध्यम से चिकित्सा उपकरण सुरक्षा को बढ़ावा दे रहा है एम्स भोपाल

भोपाल। कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के सक्षम नेतृत्व में एम्स भोपाल जनस्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा को सशक्त बनाने हेतु निरंतर प्रभावशाली पहल कर रहा है। मरीजों की सुरक्षा और गुणवत्तापूर्ण देखभाल के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के तहत, एम्स भोपाल में स्थापित मेटेरियोविजिलेंस के लिए क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र ने चिकित्सा उपकरणों की सुरक्षा पर आधारित एक क्षेत्रीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रम में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 19 जुलाई 2025 को एमजीएम मेडिकल कॉलेज, इंदौर के फार्माकोलॉजी विभाग द्वारा उपकरणों की निगरानी के माध्यम से मरीजों की सुरक्षा सुनिश्चित करना विषय पर निरंतर चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत रिपोर्टिंग उपकरण और प्लेटफॉर्म एवं स्वास्थ्य कर्मियों के लिए केस आधारित चर्चाओं के माध्यम से एमडीएई फॉर्म भरने का व्यावहारिक प्रशिक्षण विषय पर एक जागरूकता सत्र आयोजित किया गया। यह सत्र एम्स भोपाल स्थित केंद्र की समन्वयक डॉ. शिल्पा कौर, प्रोफेसर द्वारा लिया गया, जिसमें चिकित्सा उपकरणों से संबंधित प्रतिकूल घटनाओं की रिपोर्टिंग की व्यावहारिक जानकारी पर विशेष ध्यान दिया गया। प्रशिक्षण सत्र में वास्तविक मामलों पर आधारित इंटरैक्टिव चर्चा आयोजित की गई, जिसमें कारण निर्धारण, मूल कारण विश्लेषण एवं नियामक प्रक्रियाओं को शामिल किया गया। इस कार्यक्रम में चिकित्सकों, पीजी छात्रों, नर्सिंग स्टाफ, फार्मेसी प्रोफेशनल्स और बायोमेडिकल इंजीनियर्स सहित विभिन्न क्षेत्रों के स्वास्थ्यकर्मी शामिल हुए। इस पहल की सराहना करते हुए प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, चिकित्सा उपकरणों की सुरक्षा मरीजों की देखभाल की एक महत्वपूर्ण आधारशिला है, और स्वास्थ्य पेशेवरों का सतत प्रशिक्षण प्रतिकूल घटनाओं की समय पर पहचान और रिपोर्टिंग के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह कार्यक्रम स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा शुरू की गई राष्ट्रीय स्वास्थ्य पहलों में स्वास्थ्य पेशेवरों की भागीदारी के महत्व को रेखांकित करता है, विशेष रूप से चिकित्सा उपकरणों की सुरक्षा से संबंधित प्रोटोकॉल को सुदृढ़ करने की दिशा में।

संपादकीय

धनखड़ का इस्तीफा : कारण कुछ और?

देश के 14वें उपराष्ट्रपति एवं कानूनविद् जगदीप धनखड़ ने सोमवार की शाम अचानक अपने पद से इस्तीफा देकर पूरे देश को स्तब्ध कर दिया। राष्ट्रपति को भेजे अपने त्यागपत्र में धनखड़ ने प्रकट तौर पर पद छोड़ने का कारण अपने गिरते स्वास्थ्य को बताते हुए उसे तत्काल प्रभाव से लागू मानने की बात कही है। लेकिन ज्यादातर लोगों को इस्तीफे के इस कारण पर भरोसा नहीं हो रहा है। लोगों का मानना है कि त्यागपत्र के पीछे अंदरुनी कारण कुछ और है, जिसे धनखड़ भी उजागर कर किसी को मुश्किल में नहीं डालना चाहते। संभव है कि कुछ समय बाद वो इसे सार्वजनिक करें या फिर कोई किताब आदि लिखकर उस पर पर्दा उठाएं। यह भी हो सकता है कि वो इसे रहस्य ही रहने दें। लोगों का यह भी मानना है कि अगर उन्होंने इस्तीफा देने का मन बना ही लिया था तो संसद के मानसून सत्र के पहले भी ऐसा कर सकते थे। यही नहीं शाम को त्यागपत्र देने के लिए पहले भी उन्होंने हमेशा की तरह राज्यसभा की कार्यवाही का संचालन किया, उससे भी कोई संकेत नहीं मिला कि वो कोई बड़ा कदम उठाने जा रहे हैं। धनखड़ के त्यागपत्र की बात लोगों को इसलिए नहीं पच रही, क्योंकि उपराष्ट्रपति के रूप में उनका कार्यकाल अभी दो वर्ष बाकी था। दूसरे, वो राज्यसभा के उपसभापति के रूप में सदन का संचालन ठीक कर रहे थे। धनखड़ कई मामलों में मुखरता से अपनी बात रखते थे। सुप्रीम कोर्ट के वकील रहने के कारण कानूनी मामलों में भी उनकी अच्छी पकड़ थी। बेशक उनके साथ स्वास्थ्य की समस्या थी, लेकिन इतनी भी गंभीर नहीं थी कि वो पद छोड़कर घर बैठ जाएं। उनकी आयु भी 74 साल है, जोकि आज के बुजुर्ग राजनेताओं की सक्रियता से हिसाब से सामान्य ही है। राजनीतिक प्रेक्षक इस बात का अंदाजा लगाने में जुटे हैं कि धनखड़ ने आखिर किस बात से आहत होकर इस्तीफा देने जैसा कदम उठाया। यह बात सही है कि संवेदनशील मामलों में उन्होंने कई बार विवादित बयान दिए। इसी साल अप्रैल में सुप्रीम कोर्ट पर उनकी सख्त टिप्पणी भी चर्चा का विषय बनी थी। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले को लेकर कहा था कि अदालतें राष्ट्रपति को आदेश नहीं दे सकतीं। हालांकि विपक्ष सभापति के रवैये से खुश नहीं था। लगातार यह आरोप लगा रहा था कि जगदीप धनखड़ पक्षपातपूर्ण तरीके से राज्यसभा का संचालन कर रहे थे। इसी वजह से इंडिया ब्लॉक की तरफ से शीतकालीन सत्र के दौरान धनखड़ के खिलाफ अविश्वास का नोटिस भी दिया गया था। संभव है कि धनखड़ इससे भी आहत हुए हों। अब सवाल यह है कि देश का नया उपराष्ट्रपति कौन होगा? संविधान में यह स्पष्ट नहीं है कि पद रिक्त होने की स्थिति में उपराष्ट्रपति के सम्पूर्ण कर्तव्यों का निर्वहन कौन करेगा। जब तक किसी नए नाम की घोषणा नहीं होती है तो यह कार्य उपसभापति या भारत के राष्ट्रपति द्वारा अधिकृत किसी अन्य राज्यसभा सदस्य द्वारा किया जाएगा। भाजपा नीत एनडीए के पास लोकसभा और राज्यसभा दोनों में बहुमत है, ऐसे में पार्टी किसी दमदार चेहरे को ही मौका देगी। कहा जा रहा है कि किसी निर्विवाद व्यक्ति को यह जिम्मेदारी दी जा सकती है। जिन नामों की चर्चा है, उनमें जनता दल (यूनाइटेड) के सांसद, राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश का नाम भी शामिल है, जो 2020 से इस पद पर हैं और सरकार के विश्वासपात्र माने जाते हैं। वैसे धनखड़ द्वारा इस्तीफा देते ही विपक्ष की रणनीति भी बदल गई है। अब वह धनखड़ के प्रति सहानुभूति जताते हुए इसे सरकार के दबाव में लिया गया फैसला बता रही है और इसके टाइमिंग पर सवाल उठा रहे हैं।

नज़रिया

संजय सक्सेना
लेखक लखनऊ निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

दलित राजनीति और यूपी में कांग्रेस का भविष्य

गौरतलब हो, 1952 से 1985 तक पार्टी ने उत्तर प्रदेश विधानसभा और लोकसभा चुनावों में निर्विवाद प्रभुत्व बनाए रखा, जिसमें 1985 में उसने 425 में से 269 विधानसभा सीटें जीतकर अपनी बादशाहत साबित की थी। लेकिन बीते करीब साढ़े तीन दशक में कांग्रेस अर्श से फर्श पर आ चुकी है। भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के उभार ने कांग्रेस को हाशिए पर धकेल दिया है, लेकिन आज तक उसकी सियासत में कोई पैनापन नहीं दिखाई दे रहा है। हाल ही में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय ने सनसनीखेज ऐलान किया कि पार्टी 2026 के पंचायत चुनाव अकेले दम पर लड़ेगी। उन्होंने साफ किया कि 2027 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी या बहुजन समाज पार्टी के साथ गठबंधन का फैसला केंद्रीय नेतृत्व पंचायत चुनाव के नतीजों के बाद लेगा। अजय राय का दावा है कि अगर कार्यकर्ता मज़बूत हुए तो गठबंधन की कोई ज़रूरत नहीं पड़ेगी। इस बयान को कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और यूपी प्रभारी अविनाश पांडे ने प्रयागराज में दोहराया, जहाँ उन्होंने जोर देकर कहा कि पार्टी सभी 403 विधानसभा सीटों पर दमदार तरीके से खड़ी है।

उत्तर प्रदेश में अपने उखड़ गये पैर फिर से जमाने के लिये पिछले करीब बीस वर्षों से कांग्रेस एड़ी चोटी का जोर लगा रही है,लेकिन उसके दिन बहुरने का नाम नहीं ले रहे हैं। इन बीस वर्षों में कई दिग्गज आये और चले गये लेकिन पार्टी में जान नहीं फूंक पाये। अब फिर कांग्रेस के कुछ नेता यूपी की 'बासी कढ़ी में उबाल' लाने का सपना देख रहे हैं। कांग्रेस के नेता अब यूपी में अगले वर्ष होने वाले पंचायत चुनाव को लेकर बड़े-बड़े दावे करने में लगे हैं।

गौरतलब हो, 1952 से 1985 तक पार्टी ने उत्तर प्रदेश विधानसभा और लोकसभा चुनावों में निर्विवाद प्रभुत्व बनाए रखा, जिसमें 1985 में उसने 425 में से 269 विधानसभा सीटें जीतकर अपनी बादशाहत साबित की थी। लेकिन बीते करीब साढ़े तीन दशक में कांग्रेस अर्श से फर्श पर आ चुकी है। भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के उभार ने कांग्रेस को हाशिए पर धकेल दिया है,लेकिन आज तक उसकी सियासत में कोई पैनापन नहीं दिखाई दे रहा है। हाल ही में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय ने सनसनीखेज ऐलान किया कि पार्टी 2026 के पंचायत चुनाव अकेले दम पर लड़ेगी। उन्होंने साफ किया कि 2027 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी या बहुजन समाज पार्टी के साथ गठबंधन का फैसला केंद्रीय नेतृत्व पंचायत चुनाव के नतीजों के बाद लेगा। अजय राय का दावा है कि अगर कार्यकर्ता मज़बूत हुए तो गठबंधन की कोई ज़रूरत नहीं पड़ेगी। इस बयान को कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और यूपी प्रभारी अविनाश पांडे ने प्रयागराज में दोहराया, जहाँ उन्होंने जोर देकर कहा कि पार्टी सभी 403 विधानसभा सीटों पर दमदार तरीके से खड़ी है।

यूपी की सियासत में कांग्रेस के पतन की कहानी दो दशक पूर्व 2014 से शुरू हुई थी,जब लोकसभा चुनाव में मोदी लहर ने कांग्रेस को हाशिए पर धकेल दिया था। इसके बाद 2022 के विधानसभा चुनाव में पार्टी सिर्फ़ दो सीटों पर सिमट गई, और विधान परिषद में उसका कोई प्रतिनिधित्व नहीं बचा। फिर, 2024 के लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन ने कांग्रेस को नई उम्मीद दी। इस गठबंधन में कांग्रेस ने 17 सीटों पर उम्मीदवार उतारे और 6 सीटें जीतीं रायबरेली, अमेठी, सहारनपुर, सीतापुर, बाराबंकी, और प्रयागराज। समाजवादी पार्टी ने 37 सीटें जीतकर भारतीय जनता पार्टी को कड़ी टक्कर दी। लेकिन इन जीतों की ज़मीनी हकीकत उतनी सहज नहीं थी।क्योंकि प्रयागराज से कांग्रेस के टिकट पर जीते उज्ज्वल रमन सिंह समाजवादी पार्टी के नेता थे, जो कांग्रेस के टिकट पर लड़े। सहारनपुर से इमरान मसूद की जीत में भारतीय जनता पार्टी की रणनीतिक चूक का बड़ा हाथ था। रायबरेली और अमेठी को छोड़ दें तो कांग्रेस का संगठन यूपी में कमज़ोर है। 2022 में पार्टी का वोट शेयर सिर्फ़ 2.33 फीसदी था। फिर भी, अजय राय और अविनाश पांडे जैसे नेता दावा कर रहे हैं कि पार्टी को किसी सहारे की ज़रूरत नहीं है।

पंचायत चुनाव यूपी की सियासत में हमेशा बड़ी कसौटी रहे हैं। 2026 में होने वाले त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव, जिसमें 57,691 ग्राम प्रधान, 826 ब्लॉक प्रमुख, और 75 जिला पंचायत अध्यक्ष चुने जाएँगे, 2027 के विधानसभा चुनाव का माहौल तय करेंगे। ये चुनाव पार्टियों की ज़मीनी ताकत, कार्यकर्ताओं की मेहनत, और जनता के बीच प्रभाव को परखते हैं। अजय राय का पंचायत चुनाव अकेले लड़ने का ऐलान कांग्रेस की ताकत को आजमाने की रणनीति है। पार्टी का मानना है कि अगर कार्यकर्ता मज़बूत हुए तो वह 2027 में अकेले दम पर बेहतर प्रदर्शन कर सकती है। अविनाश पांडे ने संगठन को बूथ स्तर तक मज़बूत करने की बात कही है। इसके लिए पार्टी ने पाँच स्तरीय संगठन की योजना बनाई है, जिसमें मंडल अध्यक्षों के रूप में युवा और ऊर्जावान नेताओं को मौका दिया जाएगा। जुलाई 2025 में जिला और शहर कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह शुरू हुए, और 15 अगस्त तक सभी बूथ कमेटियों का गठन पूरा करने का लक्ष्य है। लेकिन यह रणनीति कितनी कारगर होगी? 2021 के पंचायत चुनाव में कांग्रेस ने सिर्फ़ 76 जिला पंचायत वार्ड जीते थे, जबकि भारतीय जनता पार्टी ने 720 और समाजवादी पार्टी ने 760 वार्ड हासिल किए थे।

कांग्रेस की इस रणनीति के पीछे 2024 के लोकसभा चुनाव में मिली सफलता का आत्मविश्वास है। लेकिन यह आत्मविश्वास कितना टिकाऊ है? समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन में कांग्रेस की जीत का बड़ा हिस्सा समाजवादी पार्टी के सामाजिक आधार खासकर पिछड़ा, दलित, और अल्पसंख्यक समुदायों पर टिका था। समाजवादी पार्टी ने 2024 में अपने पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक फॉर्मूले से भारतीय जनता पार्टी को कड़ी टक्कर दी। लेकिन 2024 में नौ विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों में गठबंधन में तनाव की खबरें सामने आईं। कांग्रेस ने समाजवादी पार्टी के उम्मीदवारों का समर्थन किया, लेकिन वह गाजियाबाद और फूलपुर समेत पाँच सीटों पर लड़ना चाहती थी। समाजवादी पार्टी के साथ बातचीत अंतिम दौर में थी, लेकिन सहमति नहीं बनी। अजय राय और अविनाश पांडे ने दिल्ली में केंद्रीय नेतृत्व से चर्चा की, लेकिन फैसला समाजवादी पार्टी के पक्ष में गया। इन उपचुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने सात सीटें जीतीं, जबकि समाजवादी पार्टी को दो सीटें मिलीं। इससे गठबंधन में खटास की बातें सामने आईं। समाजवादी पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने संकेत दिया कि अगर कांग्रेस ज्यादा सीटों की माँग करेगी तो समाजवादी पार्टी अकेल कांग्रेस की रणनीति में संगठन का पुनर्गठन और युवा नेतृत्व को बढ़ावा देना शामिल है। दिसंबर 2024 में पार्टी ने अपनी प्रदेश, जिला, शहर, और ब्लॉक कमेटियों को भंग कर दिया और 100 दिनों में नई कमेटियों के गठन का लक्ष्य रखा। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी ने इस प्रक्रिया की निगरानी की, जिसमें सलमान खुर्शीद, राज बब्बर, और पीएल पुनिया जैसे वरिष्ठ नेताओं को शामिल किया गया। पार्टी ने छह जोन अवध, पूर्वी यूपी, पश्चिमी यूपी, प्रयागराज, ब्रज, और बुंदेलखंड में संगठन को मज़बूत करने की योजना बनाई है। मेरठ, अलीगढ़, झांसी, अयोध्या, और लखनऊ में कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किए गए, जिनका खर्च कार्यकर्ताओं ने खुद उठाया। यह दिखाता है कि कांग्रेस में जोश है, लेकिन ज़मीनी हकीकत यह है कि रायबरेली और अमेठी के बाहर उसका प्रभाव सीमित है।

यूपी की सियासत में गठबंधन का इतिहास सबक से भरा है। 2019 में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी ने गठबंधन किया था। मोदी लहर के बावजूद दोनों ने 15 सीटें जीतीं बहुजन समाज पार्टी को 10 और समाजवादी पार्टी को 5। लेकिन इस जीत के बाद बहुजन समाज पार्टी ने गठबंधन तोड़ दिया। 2022 के विधानसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी सिर्फ़ एक सीट जीत पाई, और 2024 में उसका खाता भी नहीं खुला। बहुजन समाज पार्टी की इस गलती का कारण उसका अतिआत्मविश्वास और संगठन की कमज़ोरी थी। यह कांग्रेस के लिए चेतावनी है। 2024 में समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन ने कांग्रेस को 6 सीटें दिलाईं, लेकिन अतिआत्मविश्वास उसे भारी पड़ सकता है। समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव ने हाल ही में कहा कि गठबंधन बरकरार है और दोनों दल 2027 में साथ मिलकर चुनाव लड़ेंगे। लेकिन समाजवादी पार्टी के सूत्रों ने संकेत दिया कि अगर कांग्रेस ज़्यादा सीटों की माँग करेगी तो समाजवादी पार्टी अकेले लड़ने का विकल्प चुन सकती है।

कांग्रेस की रणनीति में दलित मतदाताओं को लुभाना भी शामिल है। 2024 में दलित वोटरों का एक हिस्सा भारतीय जनता पार्टी से हटकर कांग्रेस और समाजवादी पार्टी की ओर गया। कांग्रेस ने दलित सम्मेलनों और चौपालों का आयोजन शुरू किया है, और राहुल गांधी की संविधान बचाने की मुहिम ने दलित समुदाय में विश्वास जगाया। लेकिन समाजवादी पार्टी भी अपने पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक फॉर्मूले के तहत इन समुदायों को साध रही है। समाजवादी पार्टी ने ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायतों का आयोजन शुरू किया है, जिसका मकसद जातिगत गणना और सामाजिक न्याय का मुद्दा उठाना है। दूसरी तरफ, भारतीय जनता पार्टी ने 2021 के पंचायत चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवारों को साधकर 67 जिला पंचायत अध्यक्ष सीटें जीती थीं और 2026 में भी यही रणनीति अपनाने की तैयारी में है।

कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती संगठन को मज़बूत करना है। अजय राय और अविनाश पांडे के बयान भले ही हौसला बढ़ाने वाले हों, लेकिन ज़मीनी स्तर पर मेहनत की जरूरत है। पंचायत चुनाव में अकेले लड़ने का फैसला एक जोखिम भरा दाँव है। अगर कांग्रेस अच्छा प्रदर्शन करती है तो यह 2027 के लिए उसका आत्मविश्वास बढ़ाएगा। लेकिन अगर नतीजे खराब रहे तो गठबंधन के बिना उसकी राह मुश्किल हो सकती है। समाजवादी पार्टी भी 2027 में सत्ता में वापसी की आस में है। 2027 का विधानसभा चुनाव यूपी की सियासत में टर्निंग पॉइंट हो सकता है। कांग्रेस के लिए यह मौका है कि वह बड़ी बड़ी बातें करने की बजाये अपनी खोई ज़मीन वापस हासिल करे। इसके लिए उसे बयान बहादुरों से बचना होगा, कार्यकर्ताओं में जोश भरना होगा, संगठन को बूथ स्तर तक मज़बूत करना होगा, और गठबंधन की रणनीति पर सावधानी से विचार करना होगा। विशेष रूप से राहुल गांधी और प्रियंका गांधी को यूपी को लेकर ठोस रणनीति बनानी होगी और यूपी में ज्यादा समय भी देना होगा।

सक्रिय राजनीति फिल्मी सितारों के बूते की बात नहीं

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज
लेखक स्तंभकार हैं।

राजनीतिक दलों द्वारा चुनावी मैदान में फिल्मी सितारों को उतार कर सीट पक्की करने का चलन है। इसके अतिरिक्त भारी भीड़ के एकत्रीकरण और साथी कार्यकर्ताओं में अभूतपूर्व उत्साह का संचार करने की दिशा में भी फिल्मी सितारों को चुनावी टिकट देकर उपकृत कर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई कारण नजर नहीं आता, जिसके चलते तमाम राजनीतिक दृष्टि से परिपक्व नेता अथवा कार्यकर्ताओं को नजरअंदाज करते हुए फिल्मी दुनिया के सितारों को चुनावी मैदान में उतार दिया जाता हो। एक प्रकार से ऐसे प्रत्याशी क्षेत्र विशेष के मतदाताओं पर थोपे गए होते हैं। आकर्षण का केंद्र बने ये सितारे आमतौर पर चुनावी बाजी मार ले जाते हैं।

लेकिन जिस किसी निर्वाचन क्षेत्र से ये सितारे चुनावी सफलता प्राप्त करते हैं, आमतौर पर वहां के मतदाता कालांतर में अपने प्रतिनिधि की राजनीतिक भूमिका से संतुष्ट नहीं होते। यह तो तय है कि कोई जनप्रतिनिधि है, तो क्षेत्रीय जन समस्या के निराकरण एवं विकास विषयक तमाम जनअपेक्षाएं भी रहा करती है। लेकिन फिल्मी सितारों की लोकप्रियता से प्रभावित होकर भावनाओं के अतिरेक में उनके पक्ष में किया गया मतदान अपेक्षित परिणाम नहीं देता। व्यवहार में देखा गया है कि अधिकांश चुनावी सफलता प्राप्त कर चुके सितारों का कुछ ही समय में सक्रिय राजनीति से मोहभंग भी हो जाता है। दरअसल जमाने भर की सुख सुविधा के आदी यह सितारे जमीन से नहीं जुड़ पाते।

इस वर्ग से राजनीतिक भूमिका के निर्वहन की अपेक्षा नहीं की जा सकती। कभी-कभी तो यह सितारे स्वयं को दलीय अनुशासन की परिधि से परे भी समझ लेते है। इसके चलते संबंधित क्षेत्र में तमाम राजनीतिक सहयोगी एवं कार्यकर्ता अपने आप को असहाय स्थिति में पाते हैं। गहराई से देखा जाए तो कालांतर में संबंधित क्षेत्र में संबंधित राजनीतिक दल के जनाधार पर विपरीत असर भी पड़े बिना नहीं रहता। एक तथ्य यह भी है कि सितारा जनप्रतिनिधि का आचरण और व्यवहार अपने ही दल के लिए तमाम तरह की मुसीबत भी खड़ी कर देता है। कुल मिलाकर सितारा जनप्रतिनिधि अपनी राजनीतिक अज्ञानता के चलते अपने ही दल के लिए समस्या बनते देखे गए हैं।

हालांकि सदन में तमाम जनप्रतिनिधियों के बीच ऐसे सितारा जनप्रतिनिधि आकर्षण के केंद्र हुआ करते हैं। लेकिन राजनीतिक दृष्टि से यह कोई आवश्यक नहीं है कि इन्हें लोकतंत्र में जनप्रतिनिधि की हैसियत से सदन में अपने मूलभूत कर्तव्यों का भी भान हो। दरअसल हर छोटे बड़े सदन में निर्वाचित जनप्रतिनिधि को अपने निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करना होता है। लेकिन सितारा जनप्रतिनिधि अपने आप में इतना आत्ममुग्ध होते है कि अपने क्षेत्र की मूलभूत आवश्यकताओं पर गौर करना या क्षेत्रीय विकास की पैरवी करना अपने स्तर के अनुरूप नहीं पाते है। दरअसल यह वर्ग अपने आप मे ही इस कदर बौराया हुआ होता है कि राजनीतिक जिम्मेदारियों का निर्वहन इनके लिए छोटे स्तर का काम होता है।

यह स्थिति संबंधित राजनीतिक दल के लिए कुल मिलाकर घाटे का सौदा सिद्ध हो जाती है। यह ठीक है कि विभिन्न राजनीतिक दल जीत की संभावना के आधार पर ही चुनावी मैदान में अपना प्रत्याशी तय करते हैं। लेकिन ऐसे प्रत्याशी का चयन केवल और केवल लोकप्रियता के आधार पर किया जाना उचित प्रतीत नहीं होता। वैसे साहित्य एवं संस्कृति को समर्पित सितारा शख्सियत सदन की गरिमा में वृद्धि करने के लिए एक हद तक आवश्यक समझी जा सकती है। लेकिन फिल्मी दुनिया के सितारों को चुनावी मैदान में उतारकर संबंधित राजनीतिक दल आखिर क्या सिद्ध करना चाहते हैं ? ऐसे प्रत्याशी को किसी भी चुनावी क्षेत्र में थोपना उस क्षेत्र विशेष के वरिष्ठ तथा कनिष्ठ नेता या कार्यकर्ताओं का एक प्रकार का अपमान ही है।

हालांकि फिल्मी दुनिया का थोपा हुआ प्रत्याशी चुनाव जीत सकता है। लेकिन अपने दल के लिए रात-दिन एक कर देने वाले वरिष्ठ तथा कनिष्ठ कार्यकर्ता अपने आप को असहाय स्थिति में पाने लगते हैं। अब रही मतदाताओं की बात, तो उनके लिए अपने सितारा जनप्रतिनिधि तक का पहुंच मार्ग उसे कहीं से कहीं तक दिखाई नहीं देता है। बनावट की बुनावट से रंगी हुई फिल्मी दुनिया के सितारे लोकतंत्र के मूलतत्व से परिचित होकर राजनीतिक धर्म का निर्वहन कर सकेंगे भी या नहीं ? इस बारे में विचार करने की आवश्यकता क्यों नहीं समझी जाती ? एक प्रकार से सितारा प्रत्याशी संबंधित क्षेत्र में थोपा गया प्रत्याशी ही सिद्ध होता है। यह ठीक है कि ऐसे सितारों का आकर्षण आम मतदाताओं को इस कदर लुभाता है कि वह उसके पक्ष में मतदान कर देता है।

वास्तव में फिल्मी दुनिया के सितारों की अपनी एक अलग ही दुनिया होती है। एक प्रकार से फिल्मी सितारे अपने बाजार भाव के अनुसार प्रतिफल लेकर अपनी भूमिका को मूर्त रुप दिया करते है। लेकिन जब कभी इन्हें व्यावहारिक रूप से जनप्रतिनिधि की भूमिका का निर्वहन करना पड़े तो इस मामले में सफल नहीं हो पाते। वैसे देश -प्रदेश की राजनीति में फिल्मी दुनिया से संबद्ध सितारों ने राजनीतिक पराक्रम भी दिखलाया है। लेकिन ऐसी शख्सियत अपवादस्वरूप ही दिखाई देती है। आजकल की माया नगरी वैसे भी बनावट की बुनावट का ही बोलबाला है इसके चलते इस वर्ग के लोग जमीनी स्तर पर निस्वार्थ भाव से जनहित के प्रति समर्पित रह सकेंगे, यह कल्पना करना बेकार है।

भक्ति

योगेश कुमार गोयल
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

सांस्कृतिक उत्सव है सावन शिवरात्रि

श्रावण मास भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और आस्था का वह अनमोल समय है, जबझ देवाधिदेव भगवान शिव की पूजा-अर्चना अपने चरम पर होती है। यह महीना शिवभक्ति का सर्वोच्च काल माना गया है। समूचे भारतवर्ष में विशेषतः उत्तर भारत के राज्यों में श्रावण मास में भोलेनाथ की आराधना हेतु श्रद्धालु जल लेकर पैदल यात्रा करते हैं और फिर सावन शिवरात्रि के पावन अवसर पर उसे शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। इस दिन को 'कांवड़ यात्रा' के समापन के रूप में भी देखा जाता है, जब लाखों कांवड़िए गंगा नदी से पवित्र जल लाकर अपने-अपने क्षेत्रों के शिवालयों में जलाभिषेक करते हैं। कांवड़ यात्रा और सावन शिवरात्रि, दोनों ही एक ऐसी आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार करती हैं, जो भक्तों के तन, मन और आत्मा को परम आनंद और भक्ति में सराबोर कर देती हैं। हिंदू पंचांग के अनुसार, सावन शिवरात्रि का पर्व सावन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को आता है। इस वर्ष यह शुभ तिथि 23 जुलाई को प्रातः 4 बजकर 39 मिनट से प्रारंभ होकर 24 जुलाई की भोर 2 बजकर 28 मिनट तक रहेगी, अतः सावन शिवरात्रि 23 जुलाई को ही मनाई जाएगी। यह पर्व विशेष रूप से भगवान शिव और देवी पार्वती को समर्पित होता है, जिसमें शिवलिंग पर गंगाजल, बेलपत्र, धतूरा, भस्म, भांग और फल आदि चढ़ाए जाते हैं। मान्यता है कि इस दिन सच्चे मन से व्रत और पूजन करने वाले भक्तों को भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्त होती है और उनके जीवन की समस्त बाधाएं समाप्त होती हैं।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार सावन मास में भगवान शिव की पूजा सबसे अधिक फलदायी मानी गई है। विशेषतः सावन शिवरात्रि का महत्व इस कारण भी अधिक है क्योंकि इसी दिन भगवान शिव ने समुद्र मंथन से उत्पन्न भयानक कालकूट विष ग्रहण किया था, जिससे समस्त सृष्टि की रक्षा हो सकी थी। यह विष इतना प्रचंड था कि उसकी कुछ बूंदें भी यदि किसी जीवित प्राणी को छू जाती तो उसका तत्काल अंत हो सकता था। ऐसे संकट को देखकर देवताओं और असुरों ने भगवान शिव की शरण ली और शिव ने सृष्टि की भलाई हेतु विष का पान कर लिया, जिससे उनका कंठ नीला पड़ गया, और वे 'नीलकंठ' कहलाए। विषपान के प्रभाव को कम करने के लिए समस्त देवी-देवताओं ने उनके ऊपर जल अर्पित किया। तभी से शिवलिंग पर जल चढ़ाने की परंपरा आरंभ हुई, जिसे विशेष रूप से सावन शिवरात्रि के दिन किया जाना अत्यंत पुण्यकारी माना गया है।

विवाहित महिलाएं भी इस दिन व्रत रखकर अपने वैवाहिक जीवन की सुख-शांति के लिए भगवान शिव और माता पार्वती से प्रार्थना करती हैं। सावन शिवरात्रि को लेकर मान्यता है कि इस दिन उपवास, रात्रि जागरण और शिव पूजन करने से क्रोध, ईर्ष्या, लोभ, मोह और अहंकार जैसे दुर्गुणों से मुक्ति मिलती है और व्यक्ति के जीवन में सात्विकता एवं शुद्धता का वास होता है। शिव की कृपा प्राप्त करने के लिए किसी भारी भरकम अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं है, वे तो केवल एक लोटा जल, बेलपत्र, भस्म अथवा भांग से ही प्रसन्न हो जाते हैं। वे भक्तों की भावनाओं को देखते हैं, बाहरी आडंबर को नहीं। यही कारण है कि उन्हें 'भोलेनाथ' कहा जाता है, सरल, सहज, सुलभ और शीघ्र प्रसन्न होने वाले देवता। भगवान शिव की उपस्थिति भारत के जनमानस में इतनी गहरी है कि देश के लगभग हर गांव, कस्बे और नगर में कोई न कोई शिवलिंग अवश्य स्थापित होता है। कई स्थानों पर तो वृक्ष के नीचे अथवा साधारण चबूतरे पर भी शिवलिंग की स्थापना देखी जा सकती है। यह जन आस्था इस बात का प्रमाण है कि शिव केवल मंदिरों के देवता नहीं हैं, वे भारतीय चेतना के मूल में बसे हुए हैं। वे भारत की सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक एकता के प्रतीक हैं। चाहे हिमालय के बर्फीले क्षेत्र हों या दक्कन का पठार, पश्चिमी रेगिस्तान हों या पूर्वोत्तर के घने जंगल, भगवान शिव की महिमा हर स्थान पर व्याप्त है।

हिन्दू ग्रंथों में शिव के विभिन्न रूपों की चर्चा विस्तार से की गई है। वे एक ओर नटराज हैं, जो तांडव कर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को स्पंदित करते हैं तो दूसरी ओर अर्धनारीश्वर भी हैं, जो शिव और शक्ति के समन्वय का प्रतीक हैं। वे महाकाल हैं, जो काल के भी परे हैं, मृत्युंजय हैं, जो मृत्यु पर विजय दिलाते हैं, पशुपति हैं, जो समस्त जीवों के स्वामी हैं। शिव का स्वरूप साकार और निराकार, दोनों में प्रतिष्ठित है। वे जब ध्यान मुद्रा में होते हैं तो संपूर्ण ब्रह्माण्ड शांत और संतुलित रहता है और जब वे तांडव करते हैं तो सृष्टि का नवसृजन होता है। पौराणिक ग्रंथों में भगवान शिव को 'सदाशिव', 'शम्भू', 'शंकर', 'रुद्र', 'विश्वेश्वर', 'त्रिलोकेश्वर', 'गंगाधर', 'त्रिनेत्रधारी', 'चन्द्रशेखर' जैसे अनेकों नामों से संबोधित किया गया है। प्रत्येक नाम में कोई विशेष गुण, विशेषता या आध्यात्मिक रहस्य निहित है। जैसे गंगाधर नाम इस बात का प्रतीक है कि उन्होंने मां गंगा को अपनी जटाओं में धारण कर पृथ्वी पर अवतरित किया, जिससे मानवता को अमृत तुल्य जल प्राप्त हो सका। त्रिनेत्रधारी इस बात का संकेत है कि वे अतीन्द्रिय ज्ञान के स्वामी हैं और तीसरी आंख द्वारा संसार के हर यथार्थ को देख सकते हैं।

सावन शिवरात्रि पर्व केवल आध्यात्मिक नहीं बल्कि सामाजिक समरसता, जनआस्था और सांस्कृतिक एकता का भी प्रतीक है। आज के युग में जब भौतिकवाद और तनाव ने लोगों को आत्मिक रूप से खोखला कर दिया है, सावन शिवरात्रि जैसा पर्व एक अवसर देता है आत्मचिंतन, आत्मशुद्धि और ईश्वर से एकाकार होने का। यह पर्व केवल भगवान शिव को प्रसन्न करने का माध्यम नहीं बल्कि हमारे भीतर के तमस और अज्ञान को दूर कर जीवन में शिवत्व जगाने का निमित्त भी है। शिव भक्ति का यह पर्व हर मनुष्य को यह प्रेरणा देता है कि जब संसार में संकट आए तो वह भी भगवान शिव की तरह निःस्वार्थ होकर कर्तव्य पालन करे। विषपान का अर्थ केवल शाब्दिक नहीं है बल्कि जीवन में आने वाली नकारात्मकताओं, विषादों और कठिनाइयों को सहन कर, सत्य, करुणा और सहनशीलता के मार्ग पर आगे बढ़ना ही शिव का वास्तविक मार्ग है। इस प्रकार सावन शिवरात्रि केवल एक धार्मिक पर्व नहीं बल्कि जीवन दर्शन का उत्सव है, जो हमें आंतरिक शक्ति, संतुलन और ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का पाठ सिखाता है, जो जीवन को शिवमय बना दे, वही है सच्ची शिवरात्रि।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

लोकेंद्र नामजोशी
लेखक व्यंग्यकार हैं।

सेल्फी ले और सोशल मीडिया में डालने का जमाना

कल शाम को मैं इत्मीनान के साथ नॉर्थ कैरोलिना के बीच पर बैठा, अमेरिकन कोक के साथ पिज्जा का आनंद ले ही रहा था कि अचानक मेरे परम मित्र सोसल कुमार जी का व्हाट्सएप कॉल आ गया। फोन उठाते ही वो फटे दूध की तरह उबाल खाते हुए बोले– 'अरे जोशी भिया ! आपका फोन पिछले डेढ़ महीने से लग ही नहीं रहा, और आप कहीं नज़र भी नहीं आ रहे? मैने कहा 'हां तो बोलिए' पूछने लगे 'कहां हो आप? इस धरती लोक पर ही हो या किसी अलौकिक यूटोपिया में जा बसे?' मैने मुस्कराते हुए कहा, 'मैं ठीक हूं मित्र, बस विदेश में हूं।' इतना सुनते ही दूसरी ओर से ज़ोरदार 'हैंह्यह्य !' निकला। फिर झट से बोले 'क..क...कहां?' मैंने ठंडी आवाज़ में कहा 'अमेरिका।' सोसल कुमार जी कुछ क्षणों के लिए मौन हो गए, फिर बोले, 'जोशी भिया, आप तो बड़े वो हो। इतने अनसोशल वे में पतली गली से सीधे अमेरिका निकल लिए, वो भी बिना किसी को बताए। ना कोई इंस्टा स्टोरी, ना फेसबुक पोस्ट, न ही कोई व्हाट्सएप स्टेटस ! कमाल है !' किसी भी सोशल मीडिया को कानों कान खबर तक नहीं की आपने ! आज के जमाने में ऐसा भी कोई करता है भला?' मैंने कहा 'तो क्या पूरे मोहल्ले में ढोल पिटवाता की मैं अमेरिका जा रहा हूं?' वो बोले, 'ढोल नहीं तो कम से कम 'मैं एयरपोर्ट पर हूं' वाली एक अदद सेल्फी ही डाल देते किसी सोशल मीडिया के पटिए पर ! सारे जमाने को खबर हो जाती।' मैने पूछा 'क्या ये जरूरी है?'

फिर तो सोसल कुमार जी, बिना ब्रेक के ऐसे शुरू हुए जैसे बिना पेट्रोल की स्कूटर ढलान पर खुद-ब-खुद दौड़ जाती है, और बोले 'जोशी भिया, जमाना बहुत आगे निकल गया है। आजकल 'नेकी कर और दरिया में डाल' वाला अनसोशल ज़माना नहीं रहा बल्कि अब तो 'सेल्फी ले और सोशल मीडिया पर डाल' का सोशल ज़माना है। इस सोशल जमाने के कुछ लोग तो घर से दूर दूसरी जगह जाते ही इसलिए है कि दूसरों को बता कर उनकी रातों की नींद और दिन का चैन छीन सके।' अब तो लोग अपनी भैंस को चारा देने गांव भी जाते हैं तो रास्ते से ही स्टोरी डालते हैं- 'ऑन द वे टू झुमरी तलैया, मीटिंग माय लवली मुर्रा भैंस।' जोशी भिया, आजकल तो सुबह की चाय भी तब तक नहीं पी जाती जब तक उसकी एक 'एरियल व्यू' फोटो इंस्टा पर न डल जाए।

ये सोशल मीडिया का चक्कर ही ऐसा है की, आजकल लोग पर्यटन नहीं करते, प्रदर्शन करते हैं ! लोकेशन टैग, कैप्शन टाइपिंग, फिल्टर चूज़िंग, और अंत में दूसरों को जलाने के लिए एक सूक्ष्म कटाक्ष, 'काम से थोड़ा ब्रेक लिया है, नेचर के करीब हूं, वाइबिंग !' 'आपको मालूम नहीं भिया आजकल जब सोशल मीडिया के इस प्रकाश झोत में लोग बाग कहीं जाकर ऐसी सेल्फी लेकर फोटू डालते है तो उनका यह अलौकिक समाचार सुनकर तीनों लोकों यानी व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और फेसबुक के रहवासियों में खुशी की लहर दौड़ जाती है। समस्त लाईक करने वाले, कमेंट करने वाले और शेयर करने वाले सुर असुर, देवता मुनि और गंधर्व ऊपर ही ऊपर प्रसन्न हो जाते है। आपको (डीस) लाइक और (अन) फॉलो करने वाले सोशल लोग ऐसा मंगलमय समाचार सुनकर सोशल मीडिया के पूरे ब्रह्मांड में ऊपर ही ऊपर खुशी जाहिर कर फूले नहीं समाते। और एक आप है? एकदम सुमसपाटे में अमेरिका चले गए और सोशल मीडिया को खबर तक नहीं की आपने।'

थोड़ा सांस भर कर सोसल कुमार जी फिर उवाचे- 'अभी परसों ही मेरे पड़ोसी शर्मा जी 'मांगलिया' गांव गए थे। वहां पहुंचते ही उन्होंने सबसे पहले अपना सोशल मीडिया स्टेट्स अपडेट करने के लिए, नई व्हाइट शर्ट पहनकर खेत के सामने सेल्फी ली और स्टेटस पर डाला, 'रूट्स रीविजिटेड' फिर गांव के कुंए की पृष्ठभूमि में खड़े होकर लिखा 'स्पिरिचुअल रिट्रीट'। भिया, इसको कहते है सोशल होना ! एक वो है और एक आप हैं... जो सीधे अमेरिका????... इतना कहकर वे चुप हो गए !'

लेकिन, सोसल कुमार जी के चुप होने के बाद मैं उलझन में हूं। सोच रहा हूं कि, जब मैं बाय द वे अमेरिका की सैर कर ही रहा हूं, तो क्यों न एयरपोर्ट के बाहर खड़े होकर, एक तिरछी टोपी और हाथ में कॉफी के साथ एक सेल्फी खींचू और नीचे कैप्शन में लिखूं दूं कि- 'दुनिया गोल है, पर मैं अब अमेरिका में हूं। उड़ रहा हूं नई ऊंचाइयों की ओर–न्यू बिगनिंग यूएसए ग्लोबल' और पोस्ट कर दूं सोशल मीडिया के सभी प्लेटफार्म पर ताकि जमाने के साथ-साथ मैं भी थोड़ा सोशल बन जाऊं।

जयंती पर विशेष

सुरेन्द्र शर्मा

लेखिका शिक्षक हैं।

स्वतंत्रता संग्राम के महानायक चन्द्रशेखर 'आज़ाद'

बचपन से ही चन्द्रशेखर का मन अंग्रेजों के अत्याचार देखकर सुलगता रहता था। किशोरावस्था में वे भागकर अपनी बुआ के पास बनारस आ गये और संस्कृत विद्यापीठ में पढ़ने लगे। बनारस में ही वे पहली बार विदेशी सामान बेचने वाली एक दुकान के सामने धरना देते हुए पकड़े गये। थाने में हुई पूछताछ में उन्होंने अपना नाम आजाद, पिता का नाम स्वतंत्रता और घर का पता जेलखाना बताया। इस पर बौखलाकर थानेदार ने इन्हें 15 बेंतों की सजा दी। हर बेंत पर ये 'भारत माता की जय' बोलते थे। तब से ही इनका नाम 'आजाद' प्रचलित हो गया। आगे चलकर आजाद ने सशस्त्र क्रान्ति के माध्यम से देश को आजाद कराने वाले युवकों का एक दल बना लिया। भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, बिस्मिल, अशफाक, मन्मथनाथ गुप्त, शचीन्द्रनाथ सान्याल, जयदेव आदि उनके सहयोगी थे। आजाद तथा उनके सहयोगियों ने नौ अगस्त, 1925 को लखनऊ से सहारनपुर जाने वाली रेल को काकोरी स्टेशन के पास रोककर सरकारी खजाना लूट लिया। यह अंग्रेज शासन को खुली चुनौती थी, अतः सरकार ने क्रान्तिकारियों को पकड़ने में पूरी ताकत झोंक दी।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों में चन्द्रशेखर आजाद का नाम सदा अग्रणी रहेगा। उनका जन्म 23 जुलाई, 1906 को ग्राम भाबरा (जिला झाबुआ, वर्तमान में जिला आलीराजपुर मध्य प्रदेश) में हुआ था। उनके पूर्वज गाँव बदरका (जिला उन्नाव, उत्तर प्रदेश) के निवासी थे; पर अकाल के कारण इनके पिता श्री सीताराम तिवारी भाबरा में आकर बस गये थे।

बचपन से ही चन्द्रशेखर का मन अंग्रेजों के अत्याचार देखकर सुलगता रहता था। किशोरावस्था में वे भागकर अपनी बुआ के पास बनारस आ गये और संस्कृत विद्यापीठ में पढ़ने लगे। बनारस में ही वे पहली बार विदेशी सामान बेचने वाली एक दुकान के सामने धरना देते हुए पकड़े गये। थाने में हुई पूछताछ में उन्होंने अपना नाम आजाद, पिता का नाम स्वतन्त्रता और घर का पता जेलखाना बताया। इस पर बौखलाकर थानेदार ने इन्हें 15 बेंतों की सजा दी। हर बेंत पर ये 'भारत माता की जय' बोलते थे। तब से ही इनका नाम 'आजाद' प्रचलित हो गया। आगे चलकर आजाद ने सशस्त्र क्रान्ति के माध्यम से देश को आजाद कराने वाले युवकों का एक दल बना लिया। भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, बिस्मिल, अशफाक, मन्मथनाथ गुप्त, शचीन्द्रनाथ सान्याल, जयदेव आदि उनके सहयोगी थे। आजाद तथा उनके सहयोगियों ने नौ अगस्त, 1925 को लखनऊ से सहारनपुर जाने वाली रेल को काकोरी स्टेशन के पास रोककर सरकारी खजाना लूट लिया। यह अंग्रेज शासन को खुली चुनौती थी, अतः सरकार ने क्रान्तिकारियों को पकड़ने में पूरी ताकत झोंक दी।

पर आजाद को पकड़ना इतना आसान नहीं था। वे वेष बदलकर क्रान्तिकारियों के संगठन में लगे रहे। ग्वालियर में रहकर इन्होंने गाड़ी चलाना और उसकी मरम्मत करना भी सीखा।

17 दिसम्बर, 1928 को इनकी प्रेरणा से ही भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु आदि ने लाहौर में पुलिस अधीक्षक कार्यालय के ठीक सामने सांडर्स को यमलोक पहुँचा दिया। अब तो पुलिस बौखला गयी; पर क्रान्तिवीर अपने काम में लगे रहे। कुछ समय बाद क्रान्तिकारियों ने लाहौर विधानभवन में बम फेंका। यद्यपि उसका उद्देश्य किसी को नुकसान पहुँचाना नहीं था। बम फेंककर भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने आत्मसमर्पण कर दिया। उनके वीरतापूर्ण वक्तव्यों से जनता में क्रान्तिकारियों के प्रति फैलाये जा रहे भ्रम दूर हुए। दूसरी ओर अनेक क्रान्तिकारी पकड़े भी गये। उनमें से कुछ पुलिस के अत्याचार न सह पाये और मुखबिरी कर बैठे। इससे क्रान्तिकारी आन्दोलन कमजोर पड़ गया। केन्द्रीय असेंबली में बम चन्द्रशेखर आज़ाद के ही सफल नेतृत्व में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल, 1929 को दिल्ली की केन्द्रीय असेंबली में बम विस्फोट किया। यह विस्फोट किसी को भी नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से नहीं किया गया था। विस्फोट अंग्रेज़ सरकार द्वारा बनाए गए काले क़ानूनों के विरोध में किया गया था। इस काण्ड के फलस्वरूप क्रान्तिकारी बहुत जनप्रिय हो गए। केन्द्रीय असेंबली में बम विस्फोट करने के पश्चात भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने स्वयं को गिरफ्तार करा लिया। वे न्यायालय को अपना प्रचार-मंच बनाना चाहते थे। आज़ाद को 28 मई 1930 को भगवती चरण वोहरा की बम-परीक्षण में हुई शहादत से भी गहरा आघात लगा था। इसके कारण भगत सिंह को जेल से छुड़ाने की योजना भी खटाई में पड़ गयी थी। भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु की फाँसी रुकवाने के लिए आज़ाद ने दुर्गा भाभी को गांधीजी के पास भेजा जहाँ से उन्हें कोरा जवाब दे दिया गया था। आज़ाद ने अपने बलबूते पर झाँसी और कानपुर में अपने अड्डे बना लिये थे। झाँसी में मास्टर रुद्र नारायण, सदाशिव मलकापुरकर, भगवानदास माहौर तथा विश्वनाथ वैशम्पायन थे जबकि कानपुर में पण्डित शालिग्राम शुक्ल सक्रिय थे

आखिरी सांस तक अंग्रेजों से लड़े चन्द्रशेखर आजाद॥ क्या आप जानते है अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद अपनी इस एकमात्र तस्वीर को नष्ट करना चाहते थे।चंद्रशेखर आज़ाद की आज़ाद की एक तस्वीर हम सबने देखी है। जनेऊ पहने हुए और मूंछों पर ताव देते हुए इस तस्वीर का किस्सा बड़ा दिलचस्प है काकोरी एक्शन के बाद जब आज़ाद गुप्त प्रवास पर थे, तो वो झांसी में अपने दोस्त मास्टर रुद्रनारायण के घर पर भी रुके थे। रुद्रनारायण जी को फोटोग्राफी का शौक़ था। उन्होने ही ज़िद करके आज़ाद की ये फोटो खींची थी।

आज़ाद को हर वक्त जासूसी का ख़तरा रहता था इसलिए वो नहीं चाहते थे कि उनकी फोटो खींची जाए। उस वक्त तक उनकी एक भी फोटो अंग्रेज़ों के पास नहीं थी।

मास्टर रुद्रनारायण ने कहा कि उन्हें एक फ़ोटो इसलिए खिंचवा लेनी चाहिए कि आने वाले वक्त में लोग समझ सकें कि

भारत का ये महान क्रांतिकारी उन्ही की तरह आम शक्ल सूरत का था मगर उसकी भावना और साहस ने उसे ख़ास बना दिया। मास्टर रुद्रनारायण ने भरोसा दिया कि ये फोटो पूरी तरह सुरक्षित रहेगी। इस फोटो के खिंचने के कुछ दिन बाद ही आज़ाद को लग गया कि उनसे गलती हुई है उन्होंने अपने दोस्त विश्वनाथ वैशम्पायन को रुद्रनारायण के पास भेजा कि वो तस्वीर नष्ट की जाए मगर रुद्रनारायण ने वैशम्पायन को भरोसा दिया कि फोटो बहुत अहम है, आज़ाद के जीते जी वो इसे सार्वजनिक कभी नहीं करेंगे। वो इसके निगेटिव को दीवार में चुनवा दे रहे हैं, इसके सब प्रिंट नष्ट किये दे रहे हैं। आज़ाद को बता दिया जाए कि ये फोटो नष्ट कर दी गयी है. वैशम्पायन ने ऐसा ही किया।

आजाद जब बलिदान हो गए तब यह फोटो मास्टर रूद्रनारायण ने दीवार से निगेटिव निकलवा कर बनवाई और इस तरह देश के सामने आई उस महान क्रांतिकारी की एकमात्र जीवंत छवि जो आज तक देश के तमाम वासियों के मन में बसी है। 'भारत की फ़िज़ाओं को सदा याद रहूँगा आज़ाद था, आज़ाद हूँ, आज़ाद रहूँगा!'

वह 27 फरवरी, 1931 का दिन था। पुलिस को किसी मुखबिर से समाचार मिला कि आज प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क में चन्द्रशेखर आजाद किसी से मिलने वाले हैं। पुलिस ने समय गँवाये बिना पार्क को घेर लिया। आजाद एक पेड़ के नीचे बैठकर अपने साथी की प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही उनकी निगाह पुलिस पर पड़ी, वे पिस्तौल निकालकर पेड़ के पीछे छिप गये।

कुछ ही देर में दोनों ओर से गोली चलने लगी। इधर चन्द्रशेखर आजाद अकेले थे और उधर कई जवान। जब आजाद की पिस्तौल में एक गोली रह गयी, तो उन्होंने देश की मिट्टी अपने माथे से लगायी और उस अन्तिम गोली को अपनी कनपटी में मार लिया। उनका संकल्प था कि वे आजाद ही जन्मे हैं और मरते दम तक आजाद ही रहेंगे। उन्होंने इस प्रकार अपना संकल्प निभाया और जीते जी पुलिस के हाथ नहीं आए।

आजाद के बलिदान की खबर जनता को लगी सारा प्रयागराज अलफ्रेड पार्क में उमड पडा। जिस वृक्ष के नीचे आजाद शहीद हुए थे लोग उस वृक्ष की पूजा करने लगे। वृक्ष के तने के इर्द-गिर्द झण्डियाँ बाँध दी गयीं। लोग उस स्थान की माटी को कपडों में शीशियों में भरकर ले जाने लगे। समूचे शहर में आजाद के बलिदान की खबर से जबरदस्त तनाव हो गया। शाम होते-होते सरकारी प्रतिष्ठानों पर हमले होने लगे। लोग सडकों पर आ गये।

आज़ाद के बलिदान की खबर जवाहरलाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू को मिली तो उन्होंने तमाम काँग्रेसी नेताओं व अन्य देशभक्तों को इसकी सूचना दी।। बाद में शाम के वक्त लोगों का हुजूम पुरुषोत्तम दास टंडन के नेतृत्व में प्रयागराज के रसूलाबाद शमशान घाट पर कमला नेहरू को साथ लेकर पहुँचा। अगले दिन आजाद की अस्थियाँ चुनकर युवकों का एक जुलूस निकाला गया। इस जुलूस में इतनी ज्यादा भीड थी कि प्रयागराज की मुख्य सड़कों पर जाम लग गया। ऐसा लग रहा था जैसे प्रयागराज की जनता के रूप में सारा हिन्दुस्तान अपने इस सपूत को अंतिम विदाई देने उमड पड़ा हो। जुलूस के बाद सभा हुई। सभा को शचीन्द्रनाथ सान्याल की पत्नी प्रतिभा सान्याल ने सम्बोधित करते हुए कहा कि जैसे बंगाल में खुदीराम बोस की बलिदान के बाद उनकी राख को लोगों ने घर में रखकर सम्मानित किया वैसे ही आज़ाद को भी सम्मान मिलेगा।

मन का मौसम

ललिता जोशी

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

उफ्फ ये सावन, हरा भी मन भरमाया भी

आसमान पर उमड़ते -घुमड़ते बादल और उनसे बरसता पानी कहना ही क्या ऐसे मौसम का। थोड़ा रोमानी थोड़ा मस्ती । अपने यहाँ बरसात और सावन पर अनेक लोकगीत और कवितायें और फिल्मी गीत हैं। बरसात और सावन एक सिक्के के दो पहलू हैं । इसीलिए इस मौसम का किसान को अपनी फसल के लिए,प्रेमियों को मुलाक़ातों के लिए,प्रकृति को अपने श्रृंगार के लिए और सड़कों,पुलों और फ़्लाइओवरों को ढहने के लिए और बादलों को फटने के लिए, तीर्थयात्रियों को तीर्थ यात्रा के लिए इंतज़ार होता। देवों के देव महादेव के आशीष के लिए सावन में विशेष पूजा-अर्चना और काँवड़ यात्रा भी की जाती है। सावन महिना है कर्म, अध्यात्म और रोमांस का।

सावन के आते ही बारिश से प्यासी और तपती धरती का तन -मन प्रसन्न हो जाते हैं। धरती का ताप शांत होता है और पेड़ -पौधों को गर्मी से निजात मिल जाती है। बरसात आते ही सावन का इंतज़ार शुरू हो जाता है। सावन में तन और मन दोनों पर खुमार चढ़ता है प्रेम का। आसमान पर उमड़ते -घुमड़ते बादल और उनसे बरसता पानी कहना ही क्या ऐसे मौसम का। थोड़ा रोमानी थोड़ा मस्ती । अपने यहाँ बरसात और सावन पर अनेक लोकगीत और कवितायें और फिल्मी गीत हैं। बरसात और सावन एक सिक्के के दो पहलू हैं। इसीलिए इस मौसम का किसान को अपनी फसल के लिए,प्रेमियों को मुलाक़ातों के लिए,प्रकृति को अपने श्रृंगार के लिए और सड़कों, पुलों और फ़्लाइओवरों को ढहने के लिए और बादलों को फटने के लिए, तीर्थयात्रियों को तीर्थ यात्रा के लिए इंतज़ार होता। देवों के देव महादेव के आशीष के लिए सावन में विशेष पूजा-अर्चना और काँवड़ यात्रा भी की जाती है। सावन महिना है कर्म , अध्यात्म और रोमांस का।

सावन पर एक प्रसिद्ध फिल्मी गीत है। 'तेरी दो टकियों की नौकरी में मेरा लाखों का सावन जाए' जिस दौर में ये गीत लिखा गया होगा तो उस समय नौकरी पर सावन भारी पड़ता होगा लेकिन आज जिसे पे-पेकेज लाखों और करोड़ों में मिलता है वो रोज सावन की मस्तियाँ ले सकते हैं। बेचारा मध्यमवर्गीय व्यक्ति जो रोज अपने और अपने परिवार के लिए कमाने निकलता है तो उसे सड़कों पर जगह-जगह जलभराव और ट्रेफिक जाम से जूझता हुआ आदमी ऑफिस पहुंचे और फिर वापस घर आए तो उसे कहाँ से सावन की खुमारी आएगी। सावन में रोज ऐसी समस्याओं से झूझते आदमी को सावन रोमानी लगेगा या बेमानी। तब तो ये लगता है कि तेल लेने जाए ये सावन। कोई जमाना था जब सावन में बरसात का मजा आता था। पहली बरसात में नहाने का मजा अलग ही था। जेठ माह की गर्मी से तप्त शरीर को सावन की बरसात और उससे मौसम में आए बदलाव से तन और मन दोनों को ही प्रफुल्लित कर जाते हैं। किसी ने प्रेमियों के लिए सही ही कहा है -

'समां हो फागुन का या बारिश हो सावन की
मोहब्बत सुलगती रहती है इन दिनों'
'सावन का ये मौसम कुछ याद दिलाता है
किसी के साथ होने का एहसास दिलाता है'

ये तो थी प्रेमियों के लिए कुछ पंक्तियां। लेकिन बेचारा प्रेमी टूटी और पानी भरी सड़कों को पार कर कैसे आए लेकिन प्रेमी जी को एक लड़की भीगी -भागी सी अच्छी लगती है। जब मिलन में इतनी कठिनाइयाँ हो तो मिलन का उत्साह काफ़ुर हो जाता है। अगर घरों में पानी भर जाए तो कैसा सावन। वो तो घर से बेघर हो जाते हैं तो सावन ही दो टकियों का लगने लगता है। अरे भाई ऐसे में क्या और कैसा सावन ? मन के हिलोरे मन में ही रह जाते हैं।

सावन में पहाड़ों में शिवजी के दर्शनों के लिए यात्रियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है क्योंकि जगह जगह रास्ते टूट जाते हैं और यात्रा ठप्प हो जाती है। रुक- रुक कर ये यात्राएं चलती हैं। कहीं बाढ़ तो कहीं पहाड़ का टूटना तो कहीं बादलों का फटना। पुलों का बहना ,सड़क का अस्तित्व खतरे

में। शिवभक्ति के इस मौसम में जैसे शिव साक्षात अपना तांडव करते महसूस होते हैं। वैसे तो हर मौसम की कुछ अच्छाइयाँ और बुराइयाँ तो होती हैं। लेकिन जब -जब अपना सावन आया झूम के जो आम आदमी को जाए घूमा के । ऐसे ही पहले बच्चे बारिश के पानी में कागज की कश्तियाँ बनाकर बहाते थे लेकिन अब ये दृश्य देखने को नसीब ही नहीं होते। अब तो अभिभावकों को बच्चों को ऐसे मौसम में बाहर भेजने में ही डर लगता है की कहीं बेचारे खुले खड्डों,मेनहोल में न गिर जाएँ। न जाने कितने बच्चे इन हादसों के शिकार बन अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। सिविक एजेंसियों की लापरवाही से जान पर आ बनती है। ये है बदलते जमाने का बदलता सावन ।यहाँ एक गीत याद आ रहा है - जहां प्रेमी अपनी प्रेमिका को कह रहा है तुम्हें गीतों में ढालूँगा ,सावन को आने दो....

जो अब आफत लगता है। इस मौसम में हवा चलनी बंद हो जाए तो सांस लेना ही दूभर हो जाता है। इस मौसम का डॉक्टरों को भी इंतज़ार रहता क्योंकि इसमें मौसमी बुखार और डेंगू मलेरिया अपने उच्च उठान पर होती हैं तो इन डॉक्टरों की कमाई अपने चरम पर होती है। बेचारा मरीज त्रस्त लेकिन डॉक्टर मस्त।

इस मौसम में पेड़ों की शामत आई रहती बारिश और हवा एक साथ होने लगे तो बेचारे धराशायी हो जाते हैं और रास्ते बंद। इतना ही जब सड़कों पर पानी भरता है तो गाड़ी वाले पैदल चलने वालों को पानी सराबोर करके चलते हैं। जैसे कि गाड़ी वाला मुंह चिढ़ाकर कह रहा हो मेरी मर्जी। सावन की बारिश जब अपने चरम पर होती है तो सब कुछ ठहर जाता है। ये है सावन की शक्ति लेकिन इस पर भारी पड़ती है भक्ति। शिव भक्त सावन की मार से निर्भय हो अपनी भक्ति से शिवजी को पाने के लिए यात्राएं करते हैं। पूरा सावन शिव को समर्पित है।

दूसरी और महिलायें इस मौसम में तीज का आनंद लेती हैं। महिलाओं को मायके से तीज पर उपहार मिलते हैं। सावन और हरा रंग का एक अटूट बंधन है। हरी चुड़ियाँ ,हरी साड़ी सब सावन को और हरीतिमा प्रदान करती हैं। वैसे सावन में प्रकृति अपने पर हरियाली की चादर ओढ़ सभी को सुकून प्रदान करती है। एक कहावत भी 'सावन के अंधे को सब हरा ही नज़र आता है।' उफ़्फ़ ये सावन .....

पुण्यतिथि पर विशेष

सुसंस्कृति परिहार

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

हैदर रजा: कविता और रंगों की कदमताल

रजा साहब अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में कहते थे कि- 'सिर्फ विचार से काम नहीं बनता उसके लिए साधना और एकाग्रता बहुत जरूरी है रचना से तादात्म्य भी जरूरी है लेकिन कभी-कभी तनाव का ऐसा मुकाम भी आता है, जब विचार प्रक्रिया धीमी पड़ जाती है और सहज बुद्धि हावी हो जाती है। तब मैं खुद से पूछना भी छोड़ देता हूं कि मैं क्या कर रहा हूं? बस विचार आते जाते हैं मैं उन्हें कैनवास पर उतारता जाता हूं।' वस्तुत: उनकी मान्यता है कि कविता में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। कलाकर्म समय मांगता है मानवीय अनुभव सिर्फ आंख से देखना नहीं बल्कि यह महसूस करना भी है जो आंख की पुतली से परे भी दिखाई देता है। जैसे हम उष्णता महसूस कर सकते हैं, आंधी का झोंका झेल सकते हैं, ताजा हवा की गंध, जंगल का संगीत, चिड़ियों की चहचहाहट सुन सकते हैं। नंगी आंखों से देखने की क्षमता से आगे बढ़कर हम तमाम अनुभवों को मन के भीतर तक महसूस कर सकते हैं वही संपूर्ण अनुभूति है।

सैयद हैदर रजा अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार तो थे ही, कविता के प्रति उनका अटूट राग है उनके मानस में एक संस्कारवान कवि मौजूद रहा वह चित्रों में उतर आता था उनके चित्र एक अलग तरह की कविता के मानिंद हैं। कविता की किताब उनके हाथ में जब आती थी तो वे उसे आद्योपांत पढ़ते थे। उनकी डायरी में कबीर, मीर, ग़ालिब, निराला, महादेवी, शेरी भोपाली के साथ-साथ केदारनाथ सिंह, अशोक वाजपेई और गिरधर राठी से लेकर पवन करण तक की कविताएं मौजूद रहीं।

रजा साहब अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में कहते थे कि- 'सिर्फ विचार से काम नहीं बनता उसके लिए साधना और एकाग्रता बहुत जरूरी है रचना से तादात्म्य भी जरूरी है लेकिन कभी-कभी तनाव का ऐसा मुकाम भी आता है, जब विचार प्रक्रिया धीमी पड़ जाती है और सहज बुद्धि हावी हो जाती है। तब मैं खुद से पूछना भी छोड़ देता हूं कि मैं क्या कर रहा हूं? बस विचार आते जाते हैं मैं उन्हें कैनवास पर उतारता जाता हूं।' वस्तुतः उनकी मान्यता है कि कविता में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। कलाकर्म समय मांगता है मानवीय अनुभव सिर्फ आंख से देखना नहीं बल्कि यह महसूस करना भी है जो आंख की पुतली से परे भी दिखाई देता है।जैसे हम उष्णता महसूस कर सकते हैं, आंधी का झोंका झेल सकते हैं, ताजा हवा की गंध, जंगल का संगीत, चिड़ियों की चहचहाहट सुन सकते हैं। नंगी आंखों से देखने की क्षमता से आगे बढ़कर हम तमाम अनुभवों को मन के भीतर तक महसूस कर सकते हैं वही संपूर्ण अनुभूति

है। किसी संवेदनशील व्यक्ति के लिए और चित्रकार एवं कलाकार की क्षमता सामान्य से थोड़ी अधिक होती है। मनुष्य और सकल ब्रह्मांड के आंतरिक संबंध को मानते हुए रज़ा ने कहा था कि- 'बड़ी बात है इसे चित्र कविता वाली कला में लाना। चित्रकार जीवन या कलाकृतियों के आसपास की बात कर पाता है स्वाद, सुगंध, पीड़ा, आनंद समझाएं नहीं जाते ना इसका तो अनुभव ही किया जाता है। वे मानते हैं आंख बंद कर भी चित्र बनाए जा सकते हैं चित्र आंखों से नहीं मन से, हृदय से, तमाम सोचने की शक्ति से भी बनने चाहिए एक उदाहरण देते हुए कहते हैं कि हम प्रेम करते हैं, प्रेम को समझते हैं तब जाकर प्रेम के ऊपर एक अच्छी कविता लिख पाते हैं वही बात चित्रों के लिए है।' वे कहते हैं मानवीय जीवन के उच्चतर पक्ष को प्रमाणित चित्रों में प्रतिबिंबित किया जा सकता है अपने चित्रों के बारे में उनका कहना है मैंने भारतीय परंपरा के उन नौ रसों की दिशा में अपनी चित्र कृतियों का विकास किया है । अशोक बाजपेई जैसे वरिष्ठ कवि और रजा एक दूसरे के पूरक रहे हैं। बाजपेई रजा के चित्रों पर कविता लिखते हैं तो रजा वाजपेई की कविता का चित्र पेश करते हैं दोनों एक दूसरे के साथ बरसों तक कदमताल करते रहे हैं। रजा की एक कृति पर उनकी कविता है-

'आओ जैसे अंधेरा आता है
अंधेरे के पास
जैसे जल मिलता है
जल में
जैसे रोशनी घुलती है
रोशनी से।'

यहां रजा के रंग को अशोक शब्द की तरह अपने विन्यास के लिए विकल्प होते दिखाई देते हैं। कवि ध्रुव शुक्ल को रजा की 'सूर्य नमस्कार' कृति देखकर केदारनाथ सिंह याद आते हैं-

आप विश्वास करें
मैं कविता नहीं कर रहा हूं
सिर्फ आग की ओर
इशारा कर रहा हूं

ध्रुव शुक्ल ने भी रजा के चित्रों पर कई कविताएं लिखी हैं उनका मानना है कि रजा के चित्रों पर जब मैंने कविताएं लिखीं तो मुझे उनमें भी अलौकिक मां नजर आई जो कि स्वयं अपने ही आल्हाद की गोद में बैठी है। वे लिखते हैं -

उनके चित्रों में दिखती
व्याकुल पुरातन मां
शिशु के साथ
कभी उन्हें रजा के चित्र रंगों की अक्षत से भरी पूजा की थाली जैसे लगते हैं वे लिखते हैं -
'पुष्पों की पंखुड़ियों से भरी
पूजा की थाली जैसे ये चित्र
रंगों के उद्गम पर खड़े
प्रार्थना मग्न
बेहद के मैदान
में बिखर रही है
उनके हाथों से छिटकी
रंगों की अक्षत'

निश्चित ही, रजा चित्रकला एवं काव्य के समन्वयक हैं उनका वजूद कविता से सराबोर है। यही वजह है कि उनके चित्र कवियों की कविताओं में भी उभरे हैं चित्र और कविता की कदमताल ही रजा की अपनी एक अलग पहचान है।

जबलपुर समेत 12 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट

24 घंटे में 4.5 इंच बारिश की संभावना ; चार दिन ऐसा ही मौसम

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में 4 दिन से थमा भारी बारिश का दौर सोमवार रात से फिर शुरू हो गया है। मंगलवार को भी शाम को भोपाल समेत कई जिलों में देर रात तेज बारिश हुई। मौसम विभाग ने जबलपुर समेत 12 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। यहां अगले 24 घंटे में साढ़े 4 इंच तक पानी गिर सकता है।

मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों के दौरान बुरहानपुर, खंडवा, बैतूल, नर्मदापुरम, छिंदवाड़ा, सिवनी, इंदौर, देवास, उज्जैन, हरदा, पांढुर्णा, खरगोन और सीहोर जिलों में हल्की बारिश, आंधी चलने की संभावना जताई है।

मौसम विभाग के अनुसार, साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम की वजह से अगले चार दिन तक भारी बारिश का दौर रहने वाला है। वहीं, मानसून ट्रफ लाइन भी एक्टिव है। दूसरी ओर, 24 जुलाई से बंगाल की खाड़ी में नया लो प्रेशर एरिया (दम दबाव का क्षेत्र) सक्रिय हो रहा है। इसका असर भी प्रदेश में देखने को मिलेगा। 23-24 जुलाई को भी प्रदेश में तेज बारिश का अलर्ट है।

भोपाल, इंदौर-उज्जैन समेत 12 जिलों में हुई बारिश- मध्यप्रदेश में पिछले 24 घंटे के दौरान हल्की बारिश का दौर रहा। भोपाल, इंदौर-उज्जैन समेत 12 से अधिक जिलों में बारिश हुई। इंदौर-सिवनी में पौन इंच पानी गिर गया। वहीं, सतना और सीधी में आधा इंच से ज्यादा, खजुराहो, उमरिया और बालाघाट के मलाजखंड में करीब आधा इंच बारिश हुई। दमोह, जबलपुर, सागर, रायसेन में भी बारिश का दौर चला।

मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों के दौरान बुरहानपुर, खंडवा, बैतूल, नर्मदापुरम, छिंदवाड़ा, सिवनी, इंदौर, देवास, उज्जैन, हरदा, पांढुर्णा, खरगोन और सीहोर जिलों में हल्की बारिश, आंधी चलने की संभावना जताई है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के विदेश यात्रा से लौटने पर खाद्य मंत्री राजपूत ने दी शुभकामनाएं

मध्यप्रदेश के औद्योगिक विकास को मिलेंगे नए आयाम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की दुबई और स्पेन की सफल विदेश यात्रा के बाद मंगलवार को कैबिनेट बैठक से पूर्व खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने पुष्प-गुच्छ भेंट कर उनका आत्मीय स्वागत किया। मंत्री श्री राजपूत ने मुख्यमंत्री को बधाई देते हुए कहा कि यह यात्रा मध्यप्रदेश के आर्थिक और औद्योगिक विकास की दृष्टि से मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव की दूरदर्शी सोच और निर्णायक नेतृत्व से प्रदेश में वैश्विक निवेश के नए द्वार खुलेंगे। श्री राजपूत ने कहा कि मुख्यमंत्री की यह ऐतिहासिक यात्रा प्रदेश में औद्योगीकरण को नई गति देगी, जिससे हजारों युवाओं को रोजगार के अवसर मिलेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव 13 से 19 जुलाई 2025 तक दुबई और स्पेन के प्रवास पर थे। इस दौरान उन्होंने ग्लोबल डायलॉग 2025 के तहत मध्यप्रदेश में निवेश, तकनीकी सहयोग और रोजगार सृजन को लेकर अनेक वैश्विक कंपनियों और संगठनों से मुलाकाते की। दुबई में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने डीपी वर्ल्ड, जेबेल अली फ्री जोन जैसे अंतर्राष्ट्रीय समूहों से मध्यप्रदेश में निवेश को लेकर सकारात्मक चर्चा की। स्पेन में उन्होंने ला लीगा मुख्यालय, यूरोपीय टेक्सटाइल निर्माता संघ और स्पेनिश फिल्म आयोग के अधिकारियों से बैठक कर खेल, पर्यटन और फिल्म उद्योग में संभावनाओं को टटोला। मुख्यमंत्री डॉ यादव की विदेश यात्रा के बाद प्रदेश में 11 हजार करोड़ से अधिक के निवेश की संभावनाएं बनी है, जिससे लगभग 14000 से अधिक लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

वैश्विक मंच पर चमकेगा मध्यप्रदेश- मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि यह यात्रा प्रदेश को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित करेगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव की रणनीतिक पहल से आने वाले समय में प्रदेश में निवेशकों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि होगी और इससे उद्योग, सेवा, खेल, पर्यटन, टेक्सटाइल व फिल्म सेक्टर में रोजगार और विकास के नए द्वार खुलेंगे। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सतत विकास की दिशा में मजबूत कदम बढ़ा रहा है। उनकी कार्यशैली और सोच ने प्रदेश को निवेशकों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बना दिया है।

इंजीनियरिंग छात्र से नौकरी के नाम पर 3 लाख ठगे

आरोपी ने रेलवे में भर्ती कराने इंटरव्यू लिया, आईडी-वर्दी दी ; जॉइनिंग करने पहुंचा तो खुलासा

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में इंजीनियरिंग के छात्र को रेलवे में नौकरी का झांसा देकर शातिर ठग ने सवा तीन लाख रुपए की ठगी कर ली। आरोपी ने पहले फर्जी इंटरव्यू और मेडिकल करवाया, फिर छात्र को पहनने के लिए वर्दी और फर्जी आईकार्ड भी दे दिया।

मामले का खुलासा तब हुआ जब छात्र रेलवे ऑफिस पहुंचा, जहां अधिकारियों ने बताया कि न तो कोई वैकेंसी है और न ही कोई नियुक्ति हुई है। पीड़ित आदर्श पटेल की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया।

पुलिस ने सोमवार देर रात करीब एक बजे घमापुर स्थित आरोपी राकेश सराठे के घर दबिश देकर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस को उसके घर से भर्ती प्रकोष्ठ से जुड़े कुछ दस्तावेज और डब्ल्यूसीआरएमएस का आईकार्ड मिला है, जिसकी मदद से वह खुद को रेलकर्मी बताता था। मंगलवार को पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने आरोपी को जेल भेज दिया है।

रिश्ते में छात्र का मामा लगता है आरोपी- धनवंतरी नगर पुलिस चौकी क्षेत्र के भूकंप कॉलोनी में रहने वाले आदर्श पटेल की मां पीको-फॉल का काम करती हैं। आरोपी राकेश अक्सर सिलाई का काम देने के बहाने उनके घर आता-जाता था।

मार्च में वह आदर्श की मां से मिला और कहा कि जबलपुर मंडल के देवरी रेलवे स्टेशन में कॉमर्शियल विभाग में क्लर्क का पद खाली है, जहां वह आदर्श की नौकरी लगवा सकता है। इसके एवज में उसने 5 लाख रुपए की मांग की, यह कहकर कि पैसे अधिकारियों को देने होंगे।

रिश्ते में मामा लगने के कारण आदर्श और उसकी मां को कोई शक नहीं हुआ। उन्होंने तीन से चार किश्तों में सवा तीन लाख रुपए आरोपी को दे दिए। राकेश छात्र को मेडिकल टेस्ट के लिए रेलवे अस्पताल भी ले गया, जहां एक महिला से उसकी बात करवाई गई।

एएसआई ने थाना परिसर में फांसी लगाई

वीडियो में कहा- दो टीआई प्रताड़ित कर रहे, रेत माफिया ट्रैक्टर से कुचलने की धमकी दे रहा

दतिया (नप्र)। दतिया के थाना गोदन में पदस्थ सहायक उपनिरीक्षक (एएसआई) प्रमोद पावन (55) ने थाना परिसर स्थित सरकारी आवास में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। उनका शव मंगलवार सुबह फंदे पर लटका मिला है। सुसाइड के पहले उन्होंने एक वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डाला है। प्रमोद वीडियो में टीआई अरविंद भदौरिया सहित चार लोगों पर प्रताड़ना के आरोप लगा रहे हैं। प्रमोद के तीन वीडियो सामने आए हैं। तीनों में यही आरोप लगाए हैं।

भिंड जिले के बम्बनपुरा गांव के रहने वाले एएसआई प्रमोद वीडियो में कह रहे हैं कि उन्हें जातिसूचक शब्दों से अपमानित किया गया। पिछले 15 दिनों से थाने से बाहर नहीं जाने दिया गया। टीआई अरविंद भदौरिया, थरेट टीआई अनफासुल हसन, गोदन थाने के ड्राइवर रूपनारायण यादव और रेत व्यवसायी बबलू यादव ने उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित किया।

पहला वीडियो- दो टीआई और ड्राइवर चला रहे जुआ- प्रमोद पावन गोदन थाने में एएसआई हूं। वाहन चेकिंग के दौरान एक अवैध रेत का ट्रैक्टर आ रहा था। उसके पास कोई कागजात नहीं थे। उसके बाद आरक्षक ड्राइवर रूपनारायण उर्फ लकी और थाना प्रभारी अरविंद सिंह भदौरिया ने ट्रैक्टर छुड़वा दिया। उसी दिन से थाना प्रभारी और ड्राइवर मुझे बहुत प्रताड़ित कर रहे हैं। ट्रैक्टर बबलू यादव उर्फ अरविंद यादव का था।

बबलू बड़ा रेत माफिया है। उसके घर के सामने मेन रोड पर रेत की टालें लगी हुई हैं। ये सब टीआई और ड्राइवर करवा रहे हैं। उदीना और थरेट के बीच ये जुआ भी खिलवाता है, इसलिए थरेट थाना प्रभारी ने भी मेरी झूठी शिकायत करवाई है। तीनों ने सीएम हेल्पलाइन पर भी शिकायत करवाई है। इनके दम पर बबलू यादव मुझे जान से मारने की धमकी दे रहा है। बबलू कहता है कि तू ट्रैक्टर से कुचल दिया जाएगा। मुझे जातिसूचक शब्दों से भी अपमानित किया।

मुझे छुट्टी भी नहीं दी जा रही है। मैं एसपी से मिलने के लिए सात दिन से परेशान हूं। थाना प्रभारी मुझे जाने नहीं दे रहे हैं। टीआई अरविंद भदौरिया, थरेट टीआई अनफासुल हसन, गोदन थाने के ड्राइवर रूपनारायण यादव और रेत व्यवसायी बबलू यादव ने उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रहे हैं। इनके भय से मैं बहुत परेशान हूं। ये अप्रिय घटना कर सकते हैं।

प्रमोद ने यह आरोप भी लगाया कि थरेट में जितने ट्रैक्टर चल रहे हैं और जो जुआ हो रहा है उसकी वसूली रूपनारायण की कर रहा है। गोदन में दिनेश सरपंच, सोडा में रामराजा यादव, बागपुरा में छोटू यादव, उदीना में रामलखन यादव जुआ खिलवा रहे हैं। ये रूपनारायण के रिश्तेदार हैं। निवेदन है इसकी जांच कराई जाए। रूपनारायण चार साल से सांठगांठ से ये काम कर रहा है।

दूसरा वीडियो: माफिया कहता है, ट्रैक्टर से कुचलवा दूंगा- प्रमोद दूसरे वीडियो में कह रहे हैं, मैंने जिस दिन बबलू का ट्रैक्टर रोका था उसी दिन से टीआई अरविंद भदौरिया, थरेट टीआई अनफासुल हसन और गोदन थाने के ड्राइवर रूपनारायण यादव प्रताड़ित कर रहे हैं। इतना प्रताड़ित हो चुका हूं कि खाना तक नहीं खा पा रहा हूं। बबलू यादव जान से मारने धमकी दे रहा है। ट्रैक्टर से दबाकर मारने की बात कहता है। मेरे साथ अप्रिय घटना के जिम्मेदार अरविंद सिंह भदौरिया, थरेट टीआई अनफासुल हसन, गोदन थाने के ड्राइवर रूपनारायण यादव और बबलू होंगे। मैं प्रताड़ना और भय के कारण अपनी समग्र आईडी ठीक करवाने भांडेर तक नहीं जा पा रहा हूं। वरिष्ठ अधिकारियों से निवेदन है इनके ऊपर कार्रवाई करें।

राज्य निर्वाचन आयोग ने आज पहली बार पेपरलेस निर्वाचन प्रक्रिया पूरी की

भोपाल (नप्र)। राज्य निर्वाचन आयोग ने आज पहली बार जनपद सदस्य के पद के लिए पेपरलेस निर्वाचन की प्रक्रिया पूरी कराई। इसके लिए मंगलवार को सुबह से दमोह जिले के एक जनपद सदस्य के लिए वोटिंग कराई जा रही है। इसके साथ ही सागर जिले में चार सरपंच पदों के लिए भी पेपरलेस वोटिंग हो रही है। पेपरलेस वोटिंग को लेकर राज्य निर्वाचन आयोग ने जो व्यवस्था की है उसमें सागर और दमोह में हो रहे मतदान की लाइव जानकारी वेबसाइट के जरिए मिल रही है। किस पंचायत के किस मतदान केंद्र के लिए कितना प्रतिशत वोटिंग होती जा रही है, इसकी जानकारी भी लाइव मिलती रही।

मतदान तीन बजे थम जाएगा। बताया गया कि सरपंच पद के लिये 49 और जनपद पंचायत सदस्य के 5 पदों के लिये मतदान अभी चल रहा है। राज्य निर्वाचन आयोग के सचिव अभिषेक सिंह ने बताया कि सागर जिले की 4 ग्राम पंचायतों में सरपंच पद के लिये 9 मतदान केन्द्रों और दमोह जिले के वार्ड-16 के जनपद सदस्य के चुनाव के लिये 9 मतदान केन्द्रों में इंटीग्रेटेड पोलिंग बूथ मैनेजमेंट सिस्टम (आईपीबीएमएस) से मतदान कराया जा रहा है।

इन मतदान केन्द्रों की मतदान प्रकिया का सीधा प्रसारण भी किया गया। इसके लिये राज्य निर्वाचन आयोग कार्यालय के सामने और सागर और दमोह में एक-एक स्क्रीन लगाई गई। यहां मतदान दल को मतदान सामग्री लेने के लिए लाइन नहीं लगानी पड़ी है। मतदान दलों को मतदान केंद्रों में ही मतदान सामग्री सौंपने का काम किया गया है।

इन पंचायतों के लिए हुआ चुनाव- सागर जिले के जनपद पंचायत जैसीनगर की ग्राम पंचायत अगरा, औरिया, जनपद पंचायत खुरई की ग्राम पंचायत मुहासा और जनपद पंचायत राहतगढ़ की ग्राम पंचायत सेमरालहरिया के मतदान केन्द्रों में इंटीग्रेटेड पोलिंग बूथ मैनेजमेंट सिस्टम से मतदान कराया जा रहा है।

भोपाल के न्यू मार्केट में निगम टीम से अभद्रता

अतिक्रमण हटाने पहुंची थी टीम ; बिल्डिंग शाखा ने दिया नोटिस

भोपाल (नप्र)। भोपाल के न्यू मार्केट में अतिक्रमण हटाने पहुंची नगर निगम की टीम से अभद्रता करने का मामला सामने आया है। एक दुकानदार ने निगमकर्मियों से अभद्रता की। उसे निगम की बिल्डिंग शाखा ने नोटिस दिया है।

न्यू मार्केट में रात साढ़े 8 बजे तक अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई गई। अतिक्रमण अधिकारी शैलेंद्र सिंह भदौरिया ने बताया कि कार्रवाई के दौरान एक ट्रक सामान जब्त किया गया। इस दौरान अतिक्रमणकर्ताओं के साथ विवाद की स्थिति बनी। बालाजी छोले भटूरे वाले द्वारा अवैध निर्माण किया जा रहा था। अवैध निर्माण को रोकने और हटाए जाने की कहने पर दुकान मालिक दीपक अग्रवाल ने अभद्रता की।

देख लेने की धमकी- अतिक्रमण अधिकारी भदौरिया ने बताया कि युवक ने निगम के अधिकारी और कर्मचारियों के साथ अभद्रता की। साथ ही धमकियां भी दी। स्थल पर अतिक्रमण अधिकारी, भवन अनुज्ञा शाखा से बिल्डिंग इंजीनियर, वार्ड-32 से प्रभारी एवं कर्मचारी, जोन प्रभारी और अतिक्रमण अमला मौजूद था। प्रॉपर्टी के पेपर नहीं दिखाने पर भवन अनुज्ञा शाखा से बिल्डिंग इंजीनियर ने नोटिस जारी किया है।

प्रदेश में 30 नहीं 29 मेडिकल कॉलेजों में मिलेगा प्रवेश

दो नए सरकारी कॉलेज अभी शुरू नहीं हुए ; विभाग ने दी धोखाधड़ी से बचने की सलाह

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में सोमवार से एलिजिबल कैंडिडेट्स के लिए डायरेक्टरेट ऑफ मेडिकल एजुकेशन पोर्टल पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन शुरू हो गए हैं। इस कड़ी में डीएमई द्वारा नीट यूजी 2025 में शामिल कॉलेजों की लिस्ट भी जारी की गई है। इसके अनुसार, इस बार 30 नहीं बल्कि 29 मेडिकल कॉलेजों में ही स्टूडेंट्स प्रवेश ले सकेंगे।

इसकी वजह है कि नेशनल मेडिकल काउंसिल ने इंदौर के इंडेक्स मेडिकल कॉलेज की सभी 250 सीटें हटा दी हैं, यह साल कॉलेज के लिए 'जीरो ईयर' रहेगा। वहीं, इंदौर के ही एलएनसीटी कॉलेज और सेवा-कुंज अस्पताल की भी 50 सीटें घटा दी गई हैं।

इधर, तमाम प्रयासों के बाद भी प्रदेश में दो नए सरकारी मेडिकल कॉलेज (श्योपुर और सिंगरौली) इस सत्र में शुरू नहीं हो सके हैं। ऐसे में नए सत्र 2025 में एमबीबीएस की सीटें बीते साल की तुलना में 300 कम रह गई हैं। बता दें, सीटों की सही गणना डीएमई द्वारा सीट चार्ट जारी होने के बाद ही साफ हो सकेगी। हालांकि, जानकारों की मानें तो इस बार करीब 4500 सीटों पर स्टूडेंट्स को प्रवेश मिलेगा। यह संख्या बीते साल 4800 से अधिक थी।

बता दें, बीडीएस में प्रवेश के लिए इस साल भी बीते साल की तरह सभी 13 डेंटल कॉलेजों के विकल्प खुले हुए हैं, जिनमें एक सरकारी डेंटल कॉलेज (इंदौर) भी शामिल है।

11 सीनियर फैकल्टी के ट्रांसफर का प्लान हुआ फेल- प्रदेश में दो नए सरकारी मेडिकल कॉलेज श्योपुर और सिंगरौली शुरू करने के लिए प्रदेश के पुराने मेडिकल कॉलेजों से 11 सीनियर फैकल्टी का ट्रांसफर भी किया गया था, ताकि साल 2025-26 के लिए एमबीबीएस कोर्स शुरू किया जा सके। लेकिन, इनमें से सिर्फ आधी फैकल्टी ने ही ट्रांसफर को स्वीकार किया था। वहीं, अन्य में से किसी ने मेडिकल ग्राउंड तो किसी ने कोर्ट का रुख किया, जिससे उन्हें स्टे मिल गया।

इसके अलावा इन मेडिकल कॉलेजों में नई फैकल्टी की नियुक्ति के भी प्रयास किए गए। इन तमाम कोशिशों के बाद भी इस सत्र में इनमें एमबीबीएस कोर्स संचालित करने में विभाग असफल रहा।

सरकारी मेडिकल कॉलेज (एमबीबीएस)
गांधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल
गजराराजा मेडिकल कॉलेज, ग्वालियर
महात्मा गांधी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज, इंदौर
नेताजी सुभाष चंद्र बोस मेडिकल कॉलेज, जबलपुर
श्याम शाह मेडिकल कॉलेज, रीवा
बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज, सागर
शासकीय मेडिकल कॉलेज, दतिया
अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय मेडिकल कॉलेज, विदिशा
शासकीय मेडिकल कॉलेज, रतलाम
नंदकुमार सिंह चौहान शासकीय मेडिकल कॉलेज, खंडवा
शासकीय मेडिकल कॉलेज, शहडोल
छिंदवाड़ा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, छिंदवाड़ा
श्रीमंत रानी लक्ष्मीबाई सिंधिया मेडिकल कॉलेज, शिवपुरी
शासकीय मेडिकल कॉलेज, सतना
सुंदरलाल पटवा शासकीय मेडिकल कॉलेज, मंदसौर
शासकीय मेडिकल कॉलेज, सिवनी
वीरेंद्र कुमार सखलेचा शासकीय मेडिकल कॉलेज, नीमच

प्राइवेट मेडिकल कॉलेज (एमबीबीएस)
पीपुल्स कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंस, भोपाल
श्री औरोबिंदो इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, इंदौर
आर.डी. गार्डी मेडिकल कॉलेज, उज्जैन
एल.एन. मेडिकल कॉलेज, भोपाल
आर.के.डी.एफ. मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर, भोपाल
महावीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस एंड रिसर्च, भोपाल
सुख सागर मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, जबलपुर
एलएनसीटी मेडिकल कॉलेज एंड सेवा-कुंज हॉस्पिटल, इंदौर
अमलतास मेडिकल कॉलेज, देवास
रामकृष्णा मेडिकल कॉलेज, हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, भोपाल
स्कूल ऑफ मेडिकल साइंस, श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मेडिकल साइंसेज, सीहोर
चिरायु मेडिकल कॉलेज, भोपाल

डेंटल कॉलेज (बीडीएस)
शासकीय स्वायत्त दंत महाविद्यालय, इंदौर
इंडेक्स इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल साइंस, इंदौर
आर.के.डी.एफ. डेंटल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर, भोपाल
पीपुल्स कॉलेज ऑफ डेंटल साइंस, भोपाल
श्री औरोबिंदो कॉलेज ऑफ डेंटिस्ट्री, इंदौर
कॉलेज ऑफ डेंटल साइंस एंड हॉस्पिटल, राऊ, इंदौर
ऋषिराज कॉलेज ऑफ डेंटल साइंस एंड रिसर्च सेंटर, भोपाल
भाभा कॉलेज ऑफ डेंटल साइंस, भोपाल
महाराणा प्रताप कॉलेज ऑफ डेंटिस्ट्री एंड रिसर्च सेंटर, ग्वालियर
गुरु गोविंद सिंह कॉलेज ऑफ डेंटल साइंस, बुरहानपुर
पीपुल्स डेंटल एकेडमी, भोपाल
मॉडर्न डेंटल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर, इंदौर
मानसरोवर डेंटल कॉलेज, भोपाल
हितकारिणी डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, जबलपुर

धोखाधड़ी से बचने की सलाह

मध्य प्रदेश के चिकित्सा शिक्षा संचालनालय ने नीट यूजी 2025 की काउंसिलिंग में भाग लेने वाले सभी छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण चेतावनी जारी की है। विभाग ने स्पष्ट किया है कि छात्र अपने व्यक्तिगत विवरण जैसे रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर, ईमेल आईडी, रोल नंबर, नीट एप्लिकेशन नंबर और बैंक डिटेल्स किसी भी अनजान व्यक्ति या कियोस्क के साथ साझा न करें। यह धोखाधड़ी से बचने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

अधिकारियों ने छात्रों को किसी भी दलाल या काउंसलर के झांसे में न आने की सलाह दी है। सीट आवंटन की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन और पारदर्शी तरीके से होती है, जिसका आधार केवल अभ्यर्थी द्वारा भरी गई चॉइस फिलिंग और उनकी नीट मेरिट होती है।

प्रोफाइल बनाते समय यह सुनिश्चित करें कि आप अपनी स्वयं की रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर, ईमेल आईडी और बैंक डिटेल्स ही दर्ज करें, क्योंकि ओटीपी और रिफंड की राशि इन्हीं डिटेल्स पर भेजी जाएगी। छात्रों को उलझन में डालने वाली जानकारी पर विश्वास न करने की सलाह दी गई है।

छात्राओं से बैड टच करने पर शिक्षक को किया गया निलंबित

नर्मदापुरम (निप्र)। जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय नर्मदापुरम द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार शासकीय उमावि बघवाड़ा विकासखंड सिवनीमालवा, जिला नर्मदापुरम के प्रभारी शिक्षक श्री राम आशीष पाण्डेय द्वारा विद्यालय की कक्षा 12वीं की छात्राओं के साथ अभद्र आचरण एवं बैड टच की गंभीर शिकायतों के आधार पर एवं प्राप्त तथ्यों की पुष्टि होने पर मध्यप्रदेश सिविल सेवा आचरण नियम 1965 के नियम 3(1) तथा मध्यप्रदेश सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम 1966 के नियम 9 के तहत उक्त शिक्षक का कृत्य प्रथम दृष्टया आपत्तिजनक एवं अनुशासनहीनता की श्रेणी में पाया गया। उक्त संबंध में संयुक्त संचालक लोक शिक्षण विभाग नर्मदापुरम द्वारा तत्काल प्रभाव से श्री राम आशीष पाण्डेय को शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिवनीमालवा से हटाकर विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी कार्यालय सोहागपुर में अटैच किया गया है। इसके अतिरिक्त, उनके विरुद्ध है शासकीय आवश्यक अनुशासनात्मक कार्यवाही भी प्रस्तावित की जा रही है।

नागद्वारी मेला 2025: क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी द्वारा किया जा रहा निरंतर निरीक्षण

मेला अवधि में ट्रैफिक प्रबंधन के तहत वाहनों का निर्बाध आवागमन किया जा रहा सुनिश्चित आरटीओ रिंकू शर्मा ने की बिना परमिट चलने वाले वाहनों पर कार्यवाही

नर्मदापुरम (निप्र)। नागद्वारी मेले के दौरान आरटीओ विभाग द्वारा मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं के निर्बाध आवागमन के लिए वाहनों की आवाजाही का उचित प्रबंधन सुनिश्चित की जा रहा है। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर सोनिया मीना के निर्देशानुसार मेला क्षेत्र में बड़े बस वाहनों को प्रतिबंधित किया गया है। उक्त निर्देशों के परिपालन में क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी श्रीमती रिंकू शर्मा द्वारा निरंतर रूप से चेक पॉइंट्स की मॉनिटरिंग की जा रही है। साथ ही बड़े बस वाहन एवं मल्टी एक्सल वाहनों के ट्रैफिक का भी स्मार्ट प्रबंधन कर उनकी आवाजाही करवाई जा रही है। परिवहन विभाग द्वारा पचमढ़ी में पूर्व से पहुंचे बड़े स्लीपर बस वाहनों को नीचे वापस पहुंचा दिया गया है। परिवहन विभाग की टीम द्वारा राउंड वार 24 घंटे परिवहन व्यवस्था पर नजर रखी जा रही है तक तथा श्रद्धालुओं के लिए निर्बाध परिवहन सुनिश्चित किया जा रहा है। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी श्रीमती रिंकू शर्मा ने बताया कि मेला क्षेत्र में जाम की स्थिति निर्मित न हो इसलिए पचमढ़ी क्षेत्र में बड़े स्लीपर बस वाहनों के आवागमन को प्रतिबंधित किया गया है। ऐसे

सभी वाहन जिनसे जाम लगने की संभावना अधिक होती है उन्हें अस्थाई पार्किंग/पगारा में पहुंचाया जा रहा है। साथ ही छोटे वाहनों को टैक्सी स्टैंड पर बनी पार्किंग में खड़ा करवाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि पचमढ़ी क्षेत्र के समीपस्थ जिले छिंदवाड़ा एवं बैतूल के परिवहन विभाग से संपर्क कर वहां से बड़े बस वाहनों की आवाजाही को पचमढ़ी क्षेत्र में सीमित किया गया है तथा मटकुली से 1 किलोमीटर पूर्व उन्हे रोक कर डायवर्ट भी किया जा रहा है। श्रीमती शर्मा द्वारा बताया गया कि मेला अवधि के दौरान वाहनों की निरंतर जांच भी की जा रही है जिसमें बिना कोई वैद्य परमिट के अलावा वाहनों को संचालित करने से रोका जा रहा है। उक्त संबंध में परिवहन विभाग द्वारा निरंतर निरीक्षण कर ऐसे वाहनों पर कार्यवाही की जा रही है। रविवार को भी शिलांजलि प्वाइंट, बड़ा महादेव मार्ग पर बिना परमिट चल रही जिप्सी को कार्यवाही उपरांत तहसील कार्यालय में खड़ा किया गया।

पचमढ़ी नागद्वारी मेले के लिए परिवहन विभाग द्वारा निर्धारित की गई किराया दर

प्रतिवर्षानुस इस वर्ष भी पचमढ़ी में पारंपरिक नागपंचमी मेला 19 जुलाई से 29 जुलाई 2025 तक आयोजित किया जा रहा है। 10 दिवसीय मेला अवधि के दौरान पचमढ़ी में प्रवेश करने वाले यात्रियों की सुविधा हेतु सामान्य प्रकार के यात्री वाहनों का प्रति यात्री निर्धारित किराया परिवहन विभाग द्वारा तय किया गया है। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के निर्देशानुसार यह व्यवस्था की गई है ताकि यात्रियों से अनावश्यक किराया न वसूला जाए तथा एक समान दरों पर परिवहन सुविधा उपलब्ध हो सके। विभाग द्वारा निर्धारित किराया दरों के अनुसार – नागपुर से पचमढ़ी तक प्रति यात्री 338 रुपए, छिंदवाड़ा से 176रुपए, भोपाल से 250 रुपए, सिवनीमालवा से 212 रुपए, इटारसी से 178 रुपए, होशंगाबाद से 156 रुपए, बाबई से 128.50 रुपए, सेमरी से 106 रुपए, बनखड़ी से 96 रुपए, सोहागपुर से 93 रुपए, पिपरिया से 68 रुपए, और मटकुली से पचमढ़ी तक 36 रुपए किराया निर्धारित किया गया है। मेला अवधि में पचमढ़ी छावनी क्षेत्र में प्रवेश करने वाले प्रत्येक यात्री पर प्रशासन द्वारा निर्धारित दर अनुसार मेला टैक्स अतिरिक्त रूप से देय होगा

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने बम्होरी में मूंग उपार्जन केन्द्र का किया निरीक्षण

रायसेन (निप्र)। जिले में समर्थन मूल्य पर ग्रीष्मकालीन मूंग की खरीदी का कार्य चल रहा है। कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा द्वारा गत दिवस बम्होरी में वेयर हाउस मूंग उपार्जन केन्द्र का निरीक्षण कर उपार्जन कार्य का अवलोकन किया गया और किसानों से भी चर्चा की गई। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने निरीक्षण के दौरान मूंग खरीदी केन्द्र में किसानों द्वारा लाई गई मूंग का अवलोकन किया। साथ ही व्यवस्थाओं के संबंध में भी जानकारी ली। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया कि मूंग उपार्जन निर्धारित मापदंडों के अनुरूप पंजीकृत किसानों द्वारा स्लॉट बुक कराए जाने के उपरांत किया जाए। उन्होंने अभी तक उपार्जित की गई मूंग की मात्रा, मूंग विक्रय हेतु प्रतिदिन आ रहे किसानों की संख्या आदि की जानकारी लेते हुए निर्देश दिए कि उपार्जन केन्द्र में किसानों को किसी भी प्रकार की समस्या नहीं होनी चाहिए। कलेक्टर विश्वकर्मा ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि उपार्जन केन्द्र व वेयर हाउस में किसी भी प्रकार की लापरवाही या अनियमितता ना हो। उपार्जन केन्द्र में किसान की मूंग का तौल सावधानीपूर्वक व पारदर्शिता से करें। उन्होंने अधिकारियों से मूंग उपार्जन के पश्चात् किसानों को राशि भुगतान के संबंध में जानकारी लेते हुए निर्देश दिए भुगतान की कार्यवाही में विलम्ब ना हो। निरीक्षण के दौरान संबंधित अधिकारी, केंद्र प्रभारी तथा उपार्जन कार्य में संलग्न कर्मचारी उपस्थित रहे।

डेंगू जागरूकता रथ के साथ लार्वा सर्वे अभियान निरंतर जारी

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन में जिला मलेरिया अधिकारी, स्वास्थ्य विभाग, नर्सिंग कालेज की छात्राऐं, उषा कार्यकर्ता के दल के द्वारा विदिशा नगरीय क्षेत्र के करैया खेड़ा, सुभाष नगर में सघन लार्वा सर्वे, आईईसी गतिविधि, डेंगू जागरूकता रथ से प्रचार-प्रसार, फॉगिंग दल के द्वारा कीटनाशक दवा का छिड़काव किया गया। मलेरिया टीम के द्वारा 309 घरों के 1474 कंटेनर का सघन लार्वा सर्वे किया गया। जिसमें 12 घरों में लार्वा पाया गया जिसे कीटनाशक दवा के द्वारा नष्ट कराया गया। जनसमुदाय से अपील है की वह अपने घर के सभी पानी के कंटेनर, कूलर, फ्रिज , टंकिया, टायर ,गमले ,पशु एवं पक्षियों को रखने वाले पानी के बर्तन टंकियों एवं सकोरों को प्रति सप्ताह जांच ले की कहीं एडीज मच्छर के लार्वा तो नही पनप रहे, व खाली कर सफाई कर दे। पानी के बड़े कंटेनर जिनकी सफाई व ढांकना संभव न हो तो उनमें मीठा तेल प्रति सप्ताह डालें। मच्छरों के काटने से स्वयं बचाव करे, पूरे शरीर ढकने वाले कपड़े पहने, दिन के समय बच्चों व वृद्धों एवं गर्भवती माताओं को मच्छरदानी के अंदर सोने की सलाह दी जावे, मॉस्किटो कॉइल का उपयोग करे, शाम के समय नीम पत्तियों का धुआं करे। तेज बुखार, आंखों के पीछे दर्द, शरीर पर चकत्ते, मांसपेशियों में दर्द, जोड़ो में दर्द, नाक व मसूड़ों से रक्तस्राव होने पर तुरंत चिकित्सक से संपर्क कर डेंगू की जांच जिला चिकित्सालय विदिशा या अटल बिहारी वाजपेयी मेडीकल कालेज में डेंगू एलिसा टेस्ट निःशुल्क कराए। इस प्रकार जिले में डेंगू के संचरण के प्रसार को समाप्त/कम करने में सहयोग करें।

''भिक्षा वृत्ति अभिशाप है'' ''भिक्षा नहीं शिक्षा दें''

विदिशा (निप्र)। बाल भिक्षावृत्ति की रोकथाम हेतु जिले में 20 दिवसीय जागरूकता अभियान 01 जुलाई से 20 जुलाई तक चलाया जा रहा है। अभियान अंतर्गत कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशानुसार जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती विनीता लोढ़ा द्वारा दल गठित किया गया है, जिसमें महिला एवं बाल विकास के गठित दल द्वारा आज शनिवार को शनिमंदिर बेतबा घाट विदिशा पर अभियान चलाया गया। शनिमंदिर और बेतबा घाट पर 07 बच्चे बाल भिक्षावृत्ति करते पाये गये, बाल भिक्षावृत्ती में लिप्त बच्चों एवं उनके परिजनों को बाल भिक्षावृत्ती कराना कानूनन अपराध है के विषय मे बताया गया और यहां उपस्थित लोगों से अपील कि गई कि बच्चों को भिक्षा नहीं शिक्षा दें, सभी बच्चों को स्कूल भेजें। सांथ ही बताया गया कि जो भी बच्चे भिक्षावृत्ती करते दिखें उनकी सूचना चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 पर दें।

सपनों की पटरी पर दौड़ा पीयूष, रेलवे में पाया सम्मानजनक पद

बैतूल (निप्र)। सपनों की कोई कीमत नहीं होती, बस उन्हें पूरा करने का जज्बा होना चाहिए÷ इस कहावत को पीयूष लोखंडे ने साकार कर दिखाया है। पीयूष ने तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर भारतीय रेलवे में टेक्निशियन ग्रेड-1 के पद पर सफलता हासिल की है। वर्तमान में वे रेलवे के भुसावल मंडल में कार्यरत हैं और 29 हजार 200 रुपए प्रतिमाह वेतन प्राप्त कर रहे हैं। पीयूष ने वर्ष 2018 में इलेक्ट्रिशियन ट्रेड से दो वर्षीय आईटीआई कोर्स सफलतापूर्वक पूर्ण किया था। प्रशिक्षण के दौरान ही उन्होंने यह ठान लिया था कि वे सरकारी क्षेत्र विशेषकर रेलवे में नौकरी करेंगे। आईटीआई से उत्तीर्ण होने के बाद उन्होंने रेलवे भर्ती परीक्षा के लिए आवेदन किया और कठिन मेहनत से परीक्षा की तैयारी में जुट गए।

केंद्रीय राज्यमंत्री श्री उइके, बैतूल विधायक श्री खंडेलवाल ने विकास कार्यों का किया भूमि पूजन

कायाकल्प 2.0 योजना के तहत तांगा चौक गंज से न्यू बैतूल स्कूल तक 2 करोड़ से अधिक की लागत से बनेगी सीसी सड़क

बैतूल (निप्र)। केंद्रीय राज्यमंत्री श्री दुर्गादास उइके और प्रदेश अध्यक्ष व बैतूल विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने सतपाल आश्रम से इटारसी रोड तक बनने वाली सड़क, नाली और गेट निर्माण कार्य का रविवार को भूमिपूजन किया।

वर्षों से वार्डवासी इन विकास कार्यों की मांग कर रहे थे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक श्री खंडेलवाल ने कहा कि वार्ड में अब 48 लाख रुपए की लागत से सड़क, 38 लाख से नाली और 5 लाख रुपए से गेट का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने नगर पालिका सीएमओ को निर्देश दिए कि कार्य पूरी गुणवत्ता से हो और सड़क चौड़ी बनवाई जाए। साथ ही नालियों को पूरी तरह से कवर्ड करने की बात भी कही। भूमिपूजन के पश्चात अतिथियों ने सतपाल आश्रम पहुंचकर परिसर में पर्यावरण संरक्षण के तहत पौधारोपण किया। इस दौरान

सतपालजी महाराज का पूजन और गुरुओं का सम्मान कर आशीर्वाद लिया। इस मौके पर जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री हंसराज धुर्वे, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, श्री सुधाकर पवार, जनप्रतिनिधि, अधिकारी और बड़ी संख्या में वार्डवासी उपस्थित रहे।

टांगा चौक, बाबू चौक से न्यू बैतूल स्कूल तक 2 करोड़ से अधिक की लागत से बनेगी सीसी सड़क : प्रदेश अध्यक्ष व बैतूल विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने जवाहर वार्ड के तांगा चौक, बाबू चौक से न्यू बैतूल स्कूल तक 2 करोड़ से अधिक की लागत से बनने वाली सीसी सड़क का भूमि पूजन किया।

उन्होंने कहा कि शहर वासियों की मांग को दृष्टिगत रखते हुए तांगा स्टैंड, बाबू चौक, न्यू बैतूल स्कूल तक 2 करोड़ से अधिक लागत से सीसी रोड, कन्वर्ट रोड डिवाइडर, सेंट्रल लाइटिंग का निर्माण कार्य होगा। इस दौरान विधायक श्री खंडेलवाल ने गंज मंडी परिसर निर्माण का जिक्र करते हुए बताया कि तकनीकी कारणों और अधिक लागत के चलते कांप्लेक्स निर्माण रुका हुआ था। उन्होंने कहा कि कांप्लेक्स निर्माण के लिए टेंडर जारी हो चुके हैं। शीघ्र ही निर्माण कार्य प्रारंभ किया जाएगा। निर्माण कार्य पूर्ण होने के बाद दुकानदारों को लागत मूल्य पर दुकानें और उनका मालिकाना हक मिलेगा। वहीं गंज को 30 हजार स्क्वायर फीट की अंडरग्राउंड पार्किंग मिलेगी।

गंज को किया जाएगा व्यवस्थित

भूमि पूजन कार्यक्रम के दौरान विधायक श्री खंडेलवाल ने कहा कि गंज क्षेत्र को विकसित कर पूरी तरह से व्यवस्थित किया जाएगा। आगामी समय में गंज में ओपन ऑडिटोरियम का निर्माण भी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सेंट्रल स्कूल से विजय भवन होते हुए बडोरा तक 60 फीट सड़क निर्माण प्रस्तावित किया गया है। सड़क के चौड़ी करण होने से किसी भी दुकानदार का व्यवसाय प्रभावित न हो इसके लिए नगर पालिका द्वारा 5 वर्ष से व्यवसाय कर रहे दुकानदारों का सर्वे किया जाएगा। उन्होंने कहा कि शहर में एक भी अतिक्रमण नहीं रहे, लेकिन एक भी अतिक्रमणकारी का व्यवसाय न जाए इसके लिए उन्हें स्थाई दुकान की व्यवस्था सुनिश्चित कराई जाएगी।

अवैध मदिरा जप्त

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में आबकारी विभाग के अधिकारी कर्मचारियों व अन्य के सहयोग से औचक निरीक्षण कर अवैध मदिरा के संग्रह, विक्रय व परिवहन पर सतत निगरानी रखी जा रही है। इस कार्य में मुखबिरों का सहयोग लिया जा रहा है। जिला आबकारी अधिकारी श्री विनय रंगशाही ने बताया की इस कार्य के लिए पृथक से नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

ताकि जिले में अवैध मदिरा के धारण,परिवहन,निर्माण एवं विक्रय की रोकथाम के कार्य समय हो सकें। जिला आबकारी अधिकारी श्री विनय रंगशाही के मार्गदर्शन में आबकारी उप निरीक्षक पुष्पेंद्र सिंह ठाकुर द्वारा शनिवार को विदिशा जिले के वृत्त गंज बासौदा के अंतर्गत मुखबिर की सूचना पर ग्राम खामखेड़ा में अभियुक्त उत्तम सिंह पिता रामलाल दांगी के रिहायशी मकान से विधिवत तलाशी लेने पर 07 कार्टन में भरे कुल 84 बोटल (54 .6 बीएल)अवैध विदेशी मदिरा बीयर बरामद की गई है।

विश्व अंतर्राष्ट्रीय शतरंज दिवस पर शतरंज प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

हरदा (निप्र)। विश्व अंतर्राष्ट्रीय शतरंज दिवस पर शतरंज के खेल प्रेमियों के लिए डिस्ट्रिक्ट चेस एसोसिएशन के तत्वाधान में रविवार को बागवान होटल में जिला स्तरीय ओपन चेस टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के द्वारा की गई वहीं विशेष अतिथि अग्रवाल समाज के अध्यक्ष श्री विनोद बंसल रहे। प्रतियोगिता में 14 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में प्रथम स्थान कोस्तुभ उपाध्याय, द्वितीय स्थान अभिषेक नायरे व तृतीय स्थान अजय उपाध्याय ने प्राप्त किया।

वहीं 14 वर्ष से कम आयु वर्ग में प्रथम स्थान शिवांश गौर, द्वितीय स्थान नैनशि रघुवंशी तथा तृतीय स्थान ध्रुव मीणा ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता में 14 वर्ष से कम आयु वर्ग के 50 बच्चों ने भाग लिया। साथ ही 14 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में 28 लोगों ने भाग लिया। इस अवसर डिस्ट्रिक्ट चेस एसोसिएशन के अध्यक्ष आलोक जैन ने कहा कि हमारी समिति के द्वारा हरदा जिलेवासियों को एक मंच देने का प्रयास किया जा रहा है। कार्यक्रम में विशेष अतिथि श्री बंसल ने विजयी प्रतिभागियों

को पुरूस्कार वितरण कर एसोसिएशन को 15 चेस बोर्ड देने की घोषणा की।

इस प्रतियोगिता में सरस्वती शिशु मंदिर, सरस्वती विद्या मंदिर, द फाउंडेशन आफ एजुकेशन, पिनेकल एकेडमी स्कूल, केन्द्रीय विद्यालय, नालेज पब्लिक स्कूल टिमरनी, सेंटमेरी स्कूल, उत्कृष्ट विद्यालय, संस्कार विद्यापीठ, होलीफेथ तथा विद्यासागर पब्लिक स्कूल खातेगांव ने भाग लिया। कार्यक्रम में डिस्ट्रिक्ट चेस एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री आलोक जैन, सचिव श्री पी.सी. पोर्ते, मिडिया प्रभारी श्री रोहित तिवारी, कोषाध्यक्ष श्री सत्यम बंसल, उपाध्यक्ष श्री जय शंकर कानवा, श्री रामनिवास जाट, श्री राजेश बिलिया, श्री मनीष प्रजापति, अनिता मिश्रा सहित बच्चों के माता-पिता एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

प्रतिबंध के बावजूद वाटरफॉल आने वाले सैलानियों के वाहनों पर की गई चालानी कार्रवाई

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार सीहोर जिले के वाटरफॉल, बांध, नदियों के तटीय क्षेत्र सहित अन्य जोखिमपूर्ण स्थानों पर सैलानियों को जाने से रोकने के लिए संबंधित अधिकारियों द्वारा निरंतर भ्रमण किया जा रहा है। भ्रमण के दौरान बुधनी एसडीएम श्री दिनेश सिंह तोमर ने बताया कि इन स्थानों पर नागरिकों को जाने से रोकने के लिए मार्गों पर कर्मचारियों की ड्यूटी भी लगाई गई है।

इसी क्रम में राजस्व एवं पुलिस विभाग की संयुक्त टीम द्वारा भोपाल से सीहोर के अमरगढ़ वाटरफॉल आए टूरिस्ट वाहन पर चालानी कार्रवाई की गई। इसी प्रकार रेहटी तहसील स्थित बाणगंगा पर भी सैलानियों के वाहनों पर चालानी कार्रवाई की गई। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर श्री बालागुरू के. द्वारा वर्षा ऋतु में दुर्घटनाओं को रोकने के लिए जिले के दिगंबर वाटरफॉल, अमरगढ़ वाटरफॉल, कालियादेव वाटरफॉल, बुधनी मिडघाट क्षेत्र, कोलार बांध क्षेत्र, झोलियपुर बैराज, नर्मदा तटीय सहित सभी जोखिमपूर्ण स्थानों पर जाने पर प्रतिबंध लगाया गया है। ताकि इन स्थानों पर होने वाली संभावित दुर्घटनाओं को रोका जा सके। प्रतिबंध का उल्लंघन कर इन स्थानों पर जाने वाले लोगों के विरूद्ध चालानी कार्रवाई की जा रही है। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने सभी नागरिकों से बांध, तालाब, झरनों सहित अन्य जोखिमपूर्ण स्थानों पर नहीं जाने की अपील करते हुए कहा है कि इस प्रतिबंध का पालन करें और वर्षा ऋतु के दौरान अपने जीवन की सुरक्षा को महत्व देते हुए इन स्थानों पर ना जाएं।

पद्मशेष नागद्वारी गुफा के प्रति आस्था में बढ़ रहे भक्तो के कदम

घने जंगलों और दुर्गम घाटियों को पार कर पहुंच रहे भक्त, जिला प्रशासन श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा के लिए समर्पित भाव से कार्यरत

नर्मदापुरम (निप्र)। पचमढ़ी में चल रहे नागद्वारी मेले में सतपुड़ा के घने जंगलों में स्थित नागद्वारी गुफा के दर्शन करने के लिए श्रद्धालुओं का रैला निरंतर बढ़ रहा है। निर्जन वनों एवं दुर्गम घाटियों की बाधाओं को पार करके भक्तों का सैलाब पद्मशेष नागद्वार मंदिर पहुंच रहा है। साल में एक बार खुलने वाले इस मंदिर के प्रति भक्तों की अटूट आस्था एवं विश्वास ही है जो वे सभी इन कठिनाइयों को भी परास्त कर भगवान पद्मशेष नागद्वार के दर्शन करने पहुंच रहे हैं। सदियों पुराने नागद्वारी मेला के संबंध में अनेको कथाएं प्रचलित है जिनसे मेले के महत्व के ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं। इसी ऐतिहासिक मेले के साक्षी बनते हुए आज दिनांक तक 40 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने अपने आराध्य के दर्शन किए। प्रशासन द्वारा श्रद्धालुओं के सुरक्षित एवं सुगम यात्रा के लिए यथासंभव हर आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई है जिससे भक्तों को यह सफर तय करने में आसानी हो। ऐसी मान्यता है कि छिन्दवाडा के निकट सौंसर की एक दम्पत्ति हेवत राम एवं मैना देवी जिनके यहा संतान नहीं होती थी इस दंपति ने पदमशेष में मानता करी थी की यदि उनके यहा संतान होती है तो वो नाग देवता को काजल लगायेगी। समय के साथ उनके यहा श्रवण कुमार नामक पुत्र का जन्म हुआ किन्तु किन्हीं कारणवश अपनी मानता भूल गई, तब नाग देवता ने इस दम्पत्ति के स्वप्न में दर्शन देकर उन्हें उनकी मानता की याद दिलाई तब ये दंपत्ति नागदेवता को आंख में काजल लगाने के लिए नागद्वारी पहुंची तब नागदेवता ने अपने विराट रूप के दर्शन दिये किन्तु मैना देवी नागदेवता के विराट रूप को देख कर डर गई और अपनी मानता पूरी नहीं कर पाई। तब नागदेवता ने उनके पुत्र श्रवण कुमार को डस लिये जिससे उनकी मृत्यु हो गई जिनकी समाधी आज भी इस स्थल पर मौजूद है। इसी परम्परा एवं मानता के आधार पर महाराष्ट्र एवं अन्य जिलों से श्रद्धालु प्रतिवर्ष नागदेवता को काजल अर्पित करने नागद्वार आते है। यह मेला कई वर्षो से निरंतर चला आ रहा है, इस स्थाल का उल्लेख 1889 में प्रकाशित केप्टन जेम्स फॉरसिथ की बुक Higlands Of Centeral India में मिलता है। जिला प्रशासन एवं महादेव मेला कमेटी द्वारा सुरक्षा की दृष्टि से इस वर्ष सी.सी.टी.वी से पदमशेष नागद्वार मंदिर की निगरानी की जा रही है। मेला क्षेत्र में होने वाली समस्त गतिविधियों पर महादेव मेला समिति सचिव अनीशा श्रीवास्तव एवं अन्य उच्चधिकारियों द्वारा निरन्तर नजर बनाये रखे हुऐ है, प्रतिदिन बैठक कर मेले का अपडेट लिया जा रहा है तथा मेला क्षेत्र में आने वाली समस्याओं को तत्परता से हल किया जा रहा है। नागद्वारी मिले के सफल एवं सुचारु संचालन के लिए जिला प्रशासन द्वारा एकीकृत कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है जिसके द्वारा मेले में प्रत्येक सेक्टर पॉइंट से वायरलेस कनेक्टिविटी को जोड़ा गया है। किसी भी वस्तु की आवश्यकता पड़ने पर कंट्रोल रूम के माध्यम से संबंधित विभाग के साथ समन्वय कर सेक्टर पॉइंट्स पर सभी आवश्यक सामग्रियों की पूर्ति की जा रही है साथ ही अधिकारियों एवं कर्मचारियों के ड्यूटी स्थान पर उनकी उपस्थिति को भी सुनिश्चित किया जा रहा है। कंट्रोल रूम के माध्यम से मेले में दर्शन करने आये श्रद्धालू जो अपने परिजनों से बिछड जाते हैं, उनको पुलिस एवं आपदा प्रबंधन के जवानों से समन्वय कर परिजनों से मिलवाया जाता है। उक्त कार्य के लिए जगह-जगह पर खोया पाया केंद्र भी बनाए गए हैं। केंद्र पर उपस्थित संबंधित कर्मचारियों द्वारा पूरी सजगता एवं मुस्तैदी के साथ बिछड़े हुए श्रद्धालुओं को अपने परिजनों से भी मिलवाया जा रहा है।

श्रद्धालुओं की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए प्रशासन द्वारा उनके विश्राम के लिए विभिन्न स्थानों पर टेंट लगाकर उनके विश्राम की व्यवस्था की गई है। भक्तों के संपर्क एवं संचार संसाधनों को मजबूत करने के लिए इस वर्ष अलग-अलग स्थान पर उनकी सुविधाओं के लिए मोबाईल चार्जिंग स्टेशन भी उपलब्ध कराया गए है। पुलिसबल, डॉक्टर, आपदा मित्र, होमगार्ड की टीम 24 घंटे राउंड वार श्रद्धालुओं की सुरक्षा एवं निरन्तर सेवा के लिए विभिन्न प्वाईन्टों पर मौजूद है, इनके साथ तहसीलदार, नायब तहसीलदार भी अपने प्वाईटों पर तैनात हैं ढ्ढ अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा भी समय-समय पर संपूर्ण मेला क्षेत्र का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया जा रहा है।

राइट क्लिक

आत्मनिरीक्षण: क्या कांग्रेस में सचमुच कोई आमूल बदलाव होगा?

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

पहले हरियाणा व अब महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव परिणामों से हैरान और उद्वेलित कांग्रेस पार्टी अगर सचमुच गंभीर आत्मनिरीक्षण और संगठनात्मक ढांचे में आमूल सुधार करने जा रही है तो इससे अच्छी कोई बात पार्टी और देश के लिए हो नहीं सकती। महाराष्ट्र व हरियाणा में इस बार सत्ता में लौटने का सपना देख रही कांग्रेस की दयनीय पराजय के बाद दिल्ली में हुई कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सीडब्ल्यूसी) की बैठक में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कुछ खरी-खरी बातें कहीं। लेकिन ये तमाम बातें व्यावहारिक अंजाम तक भी पहुंचेंगी, यह खरगे भी नहीं जानते। खरगे ने अपने संबोधन में पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा कि हमें चुनाव परिणामों से निराश नहीं होना चाहिए। लेकिन पार्टी को मजबूत करने के लिए ऊपर से नीचे तक बदलाव की जरूरत है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें अपनी चुनावी रणनीति में सुधार करना होगा, माहौल पक्ष में होने का मतलब जीत की गारंटी नहीं है। इस पर बैठक में मौजूद पार्टी के सर्वेसर्वा राहुल गांधी ने खरगे से कहा कि वो इस मामले में सख्त एक्शन लें। यहीं सबसे बड़ा पेंच है कि क्या खरगे सचमुच कोई कठोर एक्शन लेने की स्थिति में हैं? क्या उनके पास व्यवहार में ऐसे अधिकार हैं? वो अगर एक्शन लेंगे भी तो किनके खिलाफ लेंगे? दूसरे, बैठक में पार्टी को कसने के जो नेक सुझाव खरगे ने दिए, उन पर पहले ही अमल करने से उन्हें किसने रोका हुआ था? यह आत्मज्ञान उन्हें अभी क्यों हुआ? पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर तो वो दो साल से हैं।

देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी की मूल समस्या ही ये है कि उसका सिर से पैर तक संगठनात्मक ढांचा चरमराया हुआ है। खासकर 2014 के बाद तो उसकी स्थिति और भी बदतर होती गई है। हर चुनावी हार के बाद यह बात उठती है कि पार्टी संगठन में सुधार जरूरी है। लेकिन हकीकत में सुधार के लिए कुछ नहीं होता है। होता भी है तो दिखावे के लिए। उसमें भी किसी राज्य, कुछ लोकसभा सीटों या स्थानीय निकायों के चुनावों में मिली क्षणिक सफलताएं पार्टी की आंतरिक कलह और अंतर्विरोधों को फिर कालीन के नीचे सरका देती हैं। इस बार भी सीडब्ल्यूसी की बैठक में आत्मालोचन की कोशिशें हुईं। कुछ सच्चाई बयान भी की गई। लेकिन इसके परिणामस्वरूप जमीनी स्तर पर कुछ ठोस होगा, इसकी संभावना नहीं के बराबर है। क्योंकि समय पर निर्णय न होना, अवसर चूक जाने के बाद फैसले होना, फैसलों में भी जमीनी हकीकत और जरूरत को ध्यान में रखने की जगह व्यक्तियों के पूर्वाग्रहों का हावी होना, अंतर्कलह पर काबू न होना, गुटीय संतुलन में वक्त जाया होना, शीर्ष नेताओं का चंद चेहरों से घिरा होना, परिणामों के बाद की संभावित स्थिति के मद्देनजर अपना वर्चस्व कायम रखने की जोड़-तोड़ जारी रहना, हर बात में हाई कमान के भरोसे रहना, जमीन पर काम करने की जगह आला कमान का कृपापात्र बनने की होड़ कायम रहना, जमीनी कार्यकर्ता की केवल चुनाव के समय पूछ परख होना, चुनाव जीतने, काल, परिस्थिति और स्थानीय जरूरत के हिसाब रणनीति बनाने और तदनुसार मुद्दे उठा सकने में विफल रहना, स्पष्ट वैचारिक सोच न होना, संगठन को सतत निरंतर राजनीतिक काम में व्यस्त न रख पाना, सचबयानी करने वाले चंद चेहरों को खारिज करना, कभी क्षेत्रीय दलों की तरह व्यवहार करना तो कभी खुद को राष्ट्रीय पार्टी की तरह पेश करना आदि ऐसी पुरानी और गंभीर बीमारियां हैं, जिनका इलाज पार्टी आज तक नहीं खोज पाई है।

बहरहाल सीडबल्यूसी की बैठक में खरगे ने कुछ अहम मुद्दे उठाए। खरगे ने कहा कि राज्यों के विस चुनावों में उम्मीद से कम प्रदर्शन हमारे लिए चुनौती है। पार्टी नेताओं में एकता की कमी, एक-दूसरे के खिलाफ बयानबाजी चुनावों में हमें नुकसान पहुंचा रही है, इस पर सख्त अनुशासन की जरूरत है। पार्टी को मजबूत करने के लिए जमीनी स्तर से लेकर एआईसीसी तक बदलाव लाने होंगे। खरगे ने यह भी कहा कि चुनाव का माहौल हमारे पक्ष में होने से जीत की गारंटी नहीं मिलती। समयबद्ध रणनीति बनाने और पार्टी को मजबूत करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। विधानसभा चुनावों के लिए एक साल पहले से तैयारी करनी होगी, मतदाता सूचियों की जांच करनी होगी। खरगे ने यह भी कहा कि कांग्रेस के लिए सत्ता में आना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे देश भर में लोगों के एजेंडे को लागू करने में मदद मिलेगी। लोकसभा चुनाव के अच्छे नतीजों के बाद विधानसभा चुनाव नतीजों ने हमें झकझोर दिया है, हमें कड़े कदम उठाने होंगे।

जहां तक कांग्रेस पार्टी में सुधार की बात है तो यह मुद्दा कई बार उठता रहा है। 2014 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की करारी हार के कारणों का पता लगाने के लिए पार्टी के वरिष्ठ नेता ए.के. एंटोनी की अगुवाई में कमेटी बनी थी। कमेटी ने अपने रिपोर्ट में हार के कई कारण गिनाए। वह रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं हुई। लेकिन बताया जाता है कि रिपोर्ट में तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के बारे में एक शब्द नहीं कहा या ऐसा कर सकने का साहस उसमें नहीं था। जबकि पार्टी उन्हीं के नेतृत्व में हारी थी। उसी साल हुए कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों में भी कांग्रेस की हार के बाद 2016 में पार्टी के तत्कालीन महासचिव दिग्विजयसिंह ने पार्टी में 'मेजर सर्जरी' की जरूरत बताई थी। उसके बाद भी कुछ नहीं हुआ। पार्टी का ढर्रा जैसा चल रहा था, चलता रहा। लेकिन 2024 में पार्टी ने लोकसभा चुनाव में बेहतर प्रदर्शन किया तो क्रेडिट राहुल गांधी को दी गई, जबकि वो पार्टी अध्यक्ष नहीं हैं। ऐसे में खड़गे कितनी दमदारी से एक्शन ले पाएंगे, यह समझा जा सकता है।

बैठक में दूसरा अहम मुद्दा ईवीएम का रहा। हर हार के बाद कांग्रेस का विश्वास इस मशीन से उठने लगता है तो जीतने पर वह ईवीएम के नतीजों को वास्तविक जनादेश बताने लगती है। खरगे ने भी कहा कि ईवीएम ने पूरी चुनाव प्रक्रिया को संदिग्ध बना दिया है, चुनाव आयोग को स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करना चाहिए। लेकिन ईवीएम को लेकर यह प्रश्नचिन्ह केवल महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव नतीजों को लेकर ही है। इसमें पिछले दिनों हुए हिमाचल प्रदेश, तेलंगाना अथवा कर्नाटक राज्य के विस चुनाव शामिल नहीं हैं और न ही लोकसभा में महाराष्ट्र व यूपी आदि राज्यों के नतीजों पर सवालिया निशान है। यह भी खास बात है कि ईवीएम की बजाए बैलेट पेपर से चुनाव कराने की पैरवी कर रही कांग्रेस उसके द्वारा शासित राज्यों में स्थानीय निकायों और पंचायतों के चुनाव भी बैलेट पेपर से नहीं कराती। मसलन हिमाचल में कांग्रेस की सुक्खू सरकार वजूद में आने के बाद शिमला नगर निगम के चुनाव ईवीएम से हुए। उसमें कांग्रेस जीती तो किसी को ईवीएम में कोई खोट नजर नहीं आई। अगर पार्टी का ईवीएम से भरोसा पूरी तरह उठ चुका है तो उसके द्वारा शासित राज्यों के राज्य चुनाव आयोगो को बैलेट पेपर से चुनाव कराने में क्या अड़चन है? अब पार्टी महाराष्ट्र में ईवीएम के खिलाफ हस्ताक्षर जन आंदोलन करने जा रही है। इसमें इंडिया गठबंधन के सहयोगियों को भी साथ लिया जाएगा। आंदोलन केवल महाराष्ट्र में इसलिए है, क्योंकि पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, आंध्र, केरल, कर्नाटक, जम्मू काश्मीर आदि राज्यों की सरकारों को ईवीएम से कोई दिक्कत नहीं है। इस आंदोलन को जनता का कितना समर्थन मिलेगा, यह देखने की बात है। क्योंकि राजनीतिक दल अपने चश्मों से हिसाब से कुछ भी देखें, आम मतदाता को पता होता है कि उसने गुपचुप किसको वोट दिया है और क्यों दिया है। वैसे ईवीएम को लेकर कांग्रेस में भी एकमत नहीं है। पी. चिदम्बरम जैसे वरिष्ठ नेता मानते हैं कि ईवीएम में गड़बड़ी करना संभव नहीं है। यह बात इसलिए भी सही लगती है कि चुनाव अब केवल चुनाव सभाओंमें लुभावनी या लच्छेदार बातों से नहीं जीते जाते, बूथ मैनेजमेंट और अपने वोट हर हाल में डलवा सकने वाली पार्टी की कारगर मशीनरी के जरिए जीते जाते हैं। अगर माहौल पार्टी के पक्ष में हो तो भी यदि उसी अनुपात में वोट नहीं गिरे तो इस खाम खयाली का कोई मतलब नहीं है।

सुंदर-स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण का उपहार है पौधरोपण : मुख्यमंत्री

भोपाल के मानव संग्रहालय में रोपे गए 4 हजार पौधे, हमसे जहां कहीं गलतियां हुई, वहां दोबारा पौधारोपण की जरूरत

भोपाल (नप्र)। भोपाल के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में सीएम डॉ. मोहन यादव की मौजूदगी में 4 हजार पौधे रोपे गए। इस दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक अशोक पांडे, सामाजिक न्याय मंत्री नारायण सिंह कुशवाह, विधायक भगवानदास सबनानी, मेयर मालती राय और भोजपाल मित्र संस्था के कार्यकर्ता मौजूद थे।

मप्र में सबसे ज्यादा वन संपदा- सीएम ने कहा- आज यहां (मानव संग्रहालय) चार हजार पौधे रोपे जा रहे हैं। भोपाल नगर में मिलाकर 5100 पौधे लगाने का संकल्प है। हम सब जानते हैं कि इस पृथ्वी का जीवन वृक्ष और बाकी जनजीवन से जुड़ा हुआ है। कार्बन डाइऑक्साइड और ऑक्सीजन का परस्पर एक दूसरे पर अवलंबन ये हमारे लिए जीवन प्रदान करता है। खासकर मप्र तो और भाग्यशाली है। पूरे देश के बाकी राज्यों की तुलना में यदि सर्वाधिक वन संपदा कहीं हैं तो मप्र में हैं।

पौधारोपण की जरूरत

सीएम ने कहा- ये संग्रहालय का पूरा इलाका आज से चार महीने पहले ही प्रधानमंत्री जी ने अपनी उपस्थिति से हमारे जनजीवन के साथ मप्र को समृद्ध बनाने का संकल्प कराया। एक तरफ हम आर्थिक समृद्धि की तरफ जाना चाह रहे हैं। दूसरे तरफ वन संपदा में भी समृद्धि आना चाहिए।

वृक्षारोपण से रक्षाबंधन जैसा संबंध

एक दूसरे से जुड़कर ही जीवन बनता है। हमारी सनातन संस्कृति में प्रारंभ से वृक्षारोपण के साथ ऐसा संबंध है जैसे कि हमारे यहां रक्षाबंधन होता है तो अपने घर-आंगन में बने गमले से लेकर पेड़ पौधों को राखी बांधकर बहनें अपने भाव को प्रकट करती हैं।

सीएम ने रोपा बेलपत्र का पौधा

सीएम ने मानव संग्रहालय में बेलपत्र का पौधा रोपा। पौधारोपण के बाद सीएम ने मीडिया से चर्चा में कहा, पूरे प्रदेश में बृहद पौधरोपण अभियान चलाया जाएगा। मुख्यमंत्री ने लोगों से अपील करते हुए कहा- अकेले पौधा रोपें नहीं, बल्कि बड़ा होने तक उसकी देखभाल भी करें।

नव संकल्प शिविर

कांग्रेस अतीत पर विचार नहीं कर रही, भविष्य की ठोस रूपरेखा भी बना रही

शिविर के दूसरे दिन नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि ये नवयुग का आरंभ

धार। जिले के मांडव में चल रहे मध्यप्रदेश कांग्रेस के दो दिवसीय नव संकल्प शिविर का मंगलवार को समापन हुआ। इससे पहले सभी विधायकों और नेताओं ने संविधान की प्रस्तावना की शपथ ली। पूरे शिविर को लेकर मध्यप्रदेश के नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने मीडिया को संबोधित किया।

उन्होंने कहा कि यह दो दिन किसी समापन का नहीं, बल्कि नवयुग के संकल्प का आरंभ हैं। नव संकल्प शिविर ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि कांग्रेस केवल अतीत पर विचार नहीं कर रही, बल्कि भविष्य की ठोस रूपरेखा बना रही है। कांग्रेस ने मांडव की ऐतिहासिक धरती से मध्यप्रदेश की तक़दीर बदलने का संकल्प लिया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ निर्णायक लड़ाई। किसानों को आय का अधिकार। 27 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण सुनिश्चित करना। युवाओं को रोजगार और स्टार्टअप्स के लिए समर्थन। दलितों-आदिवासियों और वंचित वर्गों को उनका अधिकार और महिलाओं की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि हमने लड़ने और जीतने का मन बनाया है। इस शिविर से विधायकों में नई ऊर्जा और स्पष्ट रणनीति उभरी है। यह कांग्रेस के वैचारिक नवचिंतन की शुरुआत है, जिसे प्रदेशभर में संवाद और जनसंपर्क अभियानों के माध्यम से आगे बढ़ाया जाएगा। यह संकल्प एक विचार था, जिसे ज़मीन पर उतारने की ताकत हमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निरंतर समर्थन और आशीर्वाद से मिली। सर्वश्री राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, केसी वेणुगोपाल और हरीश चौधरी जी का मार्गदर्शन और जीतू पटवारी जी का साथ हमारे लिए संबल बना। कांग्रेस के सभी विधायक शिविर में पूरी निष्ठा और गंभीरता से शामिल हुए। यह कोई साधारण बैठक नहीं, बल्कि नई ऊर्जा और दिशा देने वाला साझा संकल्प था।

जनहित के मुद्दों पर समूह चर्चा

कांग्रेस विधायकों को 10-10 विधायकों के 6 समूहों में बांटा गया और हर समूह ने प्रमुख जनहित मुद्दों पर गहन मंथन किया। इसके प्रमुख विषय थे जातिगत जनगणना, 27 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण, वन अधिकार कानून, पेसा एक्ट और जनजातीय अधिकार के अलावा संगठन सृजन अभियान और कांग्रेस का जमीनी विस्तार भी रहा। एसएनजी, एनजीओ, सहकारी संस्थाएँ और समाजसेवी नेटवर्क पर भी बातचीत हुई।

कांग्रेस की एकता से भाजपा में खलबली

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार का भाजपा पर सीधा निशानाः नव संकल्प शिविर की सफलता से भाजपा में स्पष्ट घबराहट है। हमने मांडव में जनसंकल्प लिया है, भाजपा की तरह पंचमढ़ी में हनीमून नहीं मनाया। भाजपा डर रही है कि आगामी विधानसभा सत्र में कांग्रेस उनके भ्रष्टाचार, विफल योजनाओं और जनविरोधी फैसलों की परतें खोलेगी और हम यह ज़रूर करेंगे। लेकिन, नव संकल्प शिविर का उद्देश्य इससे कहीं बड़ा और दीर्घकालिक है। यह शिविर एक वैचारिक और सांगठनिक तैयारी है, जो भाजपा की जड़ें प्रदेश में हिला देने की क्षमता रखता है।

कांग्रेस का रणनीतिक दस्तावेज तैयार

नव संकल्प शिविर के दौरान मध्यप्रदेश कांग्रेस ने एक आंतरिक और रणनीतिक दस्तावेज तैयार किया है, जो आने वाले समय में पार्टी की राजनीतिक रणनीतियों, जनसंपर्क अभियानों और सांगठनिक विस्तार का आधार बनेगा।

भाजपा के राज की खामियां

प्रदेश में भाजपा सरकार के कमीशन और घोटाले रोज सामने आ रहे हैं। आज किसान परेशान है, उन्हें खाद नहीं मिल रहा, युवा बेरोजगारी से परेशान है, महिलाएं सुरक्षित नहीं है, मंहगाई बढ़ती जा रही है एससी-एसटी पर रोजाना अत्याचार हो रहे हैं इसलिए कांग्रेस पार्टी ने प्रत्येक व्यक्ति के साथ संवाद स्थापित करने की रणनीति पर आगे बढ़ेगी। किसान, मजदूर, युवा, महिला दलित और आदिवासी सहित हर शोषित और वंचित की हक और अधिकार की लड़ाई पूरी ताकत से लड़ेगी।

लीला साहू बोलीं- सांसद जी हेलिकॉप्टर भेजिए, हमें उठवा लीजिए

कहा- प्रेग्नेंसी का नौवां महीना है, सड़क नहीं बनी, आपने उठवाने की बात की थी

सीधी (नप्र)। सीधी जिले की गर्भवती सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर लीला साहू का एक और वीडियो सामने आया है। जनपद पंचायत रामपुर नैकिन के ग्राम खड्डी खुर्द की लीला साहू ने सांसद डॉ. राजेश मिश्रा से हेलिकॉप्टर भेजने की मांग की है।

लीला गर्भावस्था के नौवें महीने में हैं। उनके गांव तक अभी तक पक्की सड़क नहीं बनी है। एम्बुलेंस भी नहीं पहुंच सकती, इसलिए उन्होंने सांसद से कहा कि आपने वादा किया था, जरूरत पड़ने पर हेलिकॉप्टर भेजेंगे, अब वह समय आ गया है।

इससे पहले लीला ने एक वीडियो में नेताओं से सवाल किया था कि उन्होंने 29 सीटें दिलाई हैं, फिर भी उनके गांव की सड़क क्यों नहीं बन रही? विधायक प्रतिनिधि ज्ञानेंद्र अग्निहोत्री ने कहा कि एक गर्भवती महिला को सड़क के लिए गुहार लगानी पड़े, यह प्रशासन के लिए शर्म की बात है।

लीला अपने गांव की सड़क के लिए पिछले साल से संघर्ष कर रही हैं। उनके गांव में सड़क नहीं होने से दो महिलाओं की जान जा चुकी है। इनमें एक उनकी भाभी ममता थीं। दूसरी महिला सीमा थीं।

पिछले साल जुलाई में की थी सड़क की मांग

लीला साहू ने जुलाई 2024 में अपने गांव खड्डी खुर्द के बगैया टोला से गजरी को जोड़ने वाली 10 किमी लंबी कच्ची सड़क की खस्ता हालत को उजागर किया था। इसी को लेकर उन्होंने पहला वीडियो डाला था।

इसमें उन्होंने प्रधानमंत्री, केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, मुख्यमंत्री मोहन यादव, लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह और सीधी के सांसद राजेश मिश्रा को टैग करते हुए सड़क निर्माण की मांग की थी। लीला ने बताया कि बारिश में यह सड़क कीचड़ और गड्ढों से भर जाती है, जिसके कारण एम्बुलेंस और अन्य वाहनों का आना-जाना असंभव हो जाता है। इस वीडियो के वायरल होने के बाद कलेक्टर ने सड़क निर्माण का आश्वासन दिया था, जो अब तक पूरा नहीं हो सका है।

गर्भवती महिलाओं का साथ दूसरा वीडियो डाला था- इसके बाद लीला साहू गर्भवती हुईं तो दूसरा वीडियो भी बनाया। उन्होंने कहा- खराब सड़क के कारण गर्भवतियों को अस्पताल पहुंचने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। उनके गांव में छह अन्य गर्भवती महिलाएं भी थीं।

बड़ा तालाब 6.6 फीट खाली, कोलार-केरवा भी नहीं छलके

कलियासोत को पूरा भरने में साढ़े 10 फीट पानी की जरूरत, भोपाल में 15.8 इंच बारिश

भोपाल (नप्र)। भोपाल में अब तक 15.8 इंच बारिश हो चुकी है, जो अब तक की औसत बारिश 13 इंच से पौने तीन इंच ज्यादा है। बावजूद अब तक डैम या तालाब नहीं छलके हैं। बड़ा तालाब 6.6 फीट है। कलियासोत डैम को पूरा भरने में साढ़े 10 फीट पानी की जरूरत है। कोलार और केरवा डैम भी नहीं छलके है।

पिछले साल जुलाई में ही 3 डैम- कोलार, भदभदा और कलियासोत डैम ओवरफ्लो हो गए थे। वहीं, बड़ा तालाब भी लबालब भर गया था। मौसम विभाग के अनुसार, इस बार भोपाल में बारिश के स्ट्रॉन्ग सिस्टम की एक्टिविटी कम रही है। इस वजह से तालाब और डैम में ज्यादा पानी नहीं बढ़ा, लेकिन अगले सप्ताह से फिर से बारिश का दौर शुरू होगा। जिससे अगस्त के पहले सप्ताह तक अच्छा पानी आ सकता है।

सीहोर में भी तेज बारिश की दरकार

सीहोर में तेज बारिश होने से कोलांस नदी उफान पर आएगी, जिससे बड़ा तालाब में पानी और बढ़ेगा। यहां भी तेज बारिश की दरकार है। सीहोर में अब तक औसत साढ़े 17 इंच पानी गिर चुका है।

जलस्रोतों में इतना पानी

बड़ा तालाब- इसकी जलभराव क्षमता 1666.80 फीट है। अभी इसमें 1660.20 फीट पानी है। इसे पूरा भरने में अभी 6.60 फीट पानी की और जरूरत है। पिछली बार बड़ा तालाब जुलाई में ही भर गया था, लेकिन इस बार अभी भी खाली है। बड़ा तालाब पूरा भरने के बाद भदभदा डैम के गेट खुलते हैं। इस बार कैचमेंट एरिया में कम बारिश हुई है। जिससे कोलांस नदी लबालब होकर नहीं कही।

कोलार डैम- इसका वॉटर लेवल 1516.40 फीट है। अभी इसमें 1490.74 फीट पानी जमा है। इस हिसाब से यह काफी खाली है। कोलार डैम से ही भोपाल शहर के 40 प्रतिशत हिस्से में पानी की सप्लाई की जाती है। पिछली बार जुलाई में इसके गेट खोलने पड़े थे।

केरवा डैम- कुल 1673 फीट वाले केरवा डैम में अब तक 1653.08 फीट पानी आ चुका है। बारिश नहीं होने से आवक फिलहाल थमी हुई है।

कलियासोत डैम- डैम का वॉटर लेवल 1648.62 फीट है। इसकी कुल जलभराव क्षमता 1659 फीट है। इसके चलते डैम अभी भी साढ़े 10 फीट खाली है। बड़ा तालाब के गेट खुलने पर कलियासोत डैम में पानी आएगा और गेट खुल जाएंगे।